

जैनचार्यरचित शुभाशुभ वर्ष ज्ञाननेका अपूर्व ग्रंथ.

मेघमहोदय-वर्षप्रबोध.

कृतां—

श्रीमन्महामहोपाध्याय श्रीमेघविजयगणि.

(हिन्दी अनुवाद ममेन)

यदि आपसो तथा कृष और कौननी सामेगी. मुकाल
होगा या दुष्काल ये जानना हो तथा ममस्त प्रकाश के धान्य,
मोना चादी आदि धान, गूडे कपडा आदि वस्तु ये नईगा
होगा या सगता इत्यादि बहुत उपयोगी विषयों को जानने की
उत्कंठा हो तो इसको अवश्य मगवा कर पढ़िये ।

पृष्ठ ४२५ पक्षी जीवद की कीमत ४) रूपिया पोस्ट
वर्च अलग ।

मिलने का पत्ता—

पं० भगवानदास जैन.

मेटिया जैन प्रिंटिंग प्रेस.

सीकानेर. (राजपुताना)

इस किन्नाथ छपवाने के लिए जिन
महाशयोंने सहायता दी है
उनकी शुभनामावली.

- ३५.१ किताब पत्तोदी-निधामी सुगनमहजरी गोलेखन की धर्मपथी राधापाई की तरफ से भेंट ।
- ३६.१ किताब पोखनेर-निधामी मेंमहजगी साधन सुता की तरफ से भेंट ।
- ५.१ किताब कोटा के आसंघ तरफ से भेंट ।
- ५.१ किताब लोहाबट निधामी लृणीया आशारामजी मनीदानजी की तरफ से भेंट ।
- ४०.१ किताब पोखनेर के आवक आविष्टकों की तरफ से भेंट ।

የሚገኝ የፌዴራል ሚኒስቴር ሲሆን፡

श्रीयुक्त रतनलालजी मिसररूप

बौद्धों की पञ्चाङ्ग

बीकानेर (राजस्थान)

जिनायापंगयिन गुमागुम थनं जाननेहा अर्पुं प्रेम.

मेघमहोदय-चर्पप्रबोध.

कथा -

श्रीमन्महासहोपाध्याय श्रीमेनविजयगणि.

(हिन्दी अनुवाद समेत)

यदि आपको नयाँ कर और रोगनी बामेगी. मकाल
होगा या दुष्काय ये जाननाहो नया मयल प्रहार के धान,
मोना चाट्टी आदि धान, लड़े कपड़ा आदि वस्तु ये मईगा
होगा या सन्ना इत्यादि बहुत उपयोगी वियषों को जानने की
उत्सुकता हो तो हमको अवश्य मगशा कर पठियें ।

पृष्ठ ५२५ पक्षी जीव्य की कीमत ४) रूपिका पोस्ट
मार्च बलग ।

मिलने का पता—

पं० भगवानदास जैन.

मेरिया जैन प्रिंटिंग प्रेस.

धोकानेर. (गजपुताना)

इस किताब छपवाने के लिए, जिन
महाशयोंने सहायता दी है
उनकी शुभनामावली.

१५१. किताब फलोदी-निबार्मा सुगनमहर्जी गोलेष्टा
की धर्मपदी राधापाई की तरफ से भेंट ।
१५२. किताब वीकानेर-निबार्मा मंसकरगर्जी सायण-
सुता की तरफ से भेंट ।
५१. किताब कांटा के आसंघ तरफ से भेंट ।
५१. किताब लोहावट निबार्मा लृणीया आशारामजी
सर्वादानजी की तरफ से भेंट ।
४२. किताब वीकानेर के आवक आदिकारों की
तरफ से भेंट ।

इस पुस्तक मिलने का ठिकाना—

श्रीयुत रतनलालजी मिसरूप

कांशरी की गवाड़

वीकानेर (राजपुताना)

प्रस्तावना .

त्रिपयर जैन ग्रन्थुओं!

यह “ पूर्णक्षेमवद्भक्तिलाम ” नामक छोटासा ग्रन्थ प्रकाशित कर भेंट रूपमें आपकी सेवा में उपस्थित किया जाता है, पूर्ण आशा है कि इसका अवलोकन तथा नैतिक प्रिया आदि विषय में सदुपयोग कर आप मेरे परिश्रम को सफल करेंगे ।

चिरकाल पूर्व इस ग्रंथ का संग्रह कर श्रीमान् मान्यवर, गुरुवर्य प्रातःस्मरणीय श्री १०० श्री क्षेममागरजी महाराज ने परम कृपा कर मुझे इसे इसलिये माँपा था कि मैं इसका प्रकाशन कर जैन समाज की सेवामें उपस्थित करूँ । मैं भी अपने ऊपर स्थित भार से उद्गुण होनेके लिए चिर समय तक इच्छा और चेष्टा करता रहा, परन्तु दैवयोग से अब तक अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर सका ।

क्षेत्रस्पर्शना के अनुसार संवत् १९८२ का मेरा चातुर्मास्य श्री धोकानेर नगरमें हुआ और यहाँ के कनि-

पय सुयोग्य भर्मशील आर्यक वर्ग को यह पान किसी प्रकार बिदिन हो गई कि हम सब लोगों के लिए अत्युपयोगी मधा जैन समाज के लिये परम लाभदायक ग्रन्थ प्रकाशनार्थ प्रभुन है, फिर सो क्या था, अधिकांश आर्यक मण्डल हम के प्रकाशन के लिये अनुरोध करने लगा, ऐसा होने पर मैंने भी यह निश्चय कर लिया कि अब इसको जांच हो प्रकाशित कर अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये, हम निश्चय के कर लेने पर भी मैं अपना संकोचशील प्रकृति के कारण एतदर्थ सहायता प्राप्ति के विषय में कुछ करने सुनने में सहोच ही करता रहा, अतः फिर भी कुछ दिनों तक असमंजसमें ही पड़ा रहा मधा आर्यक वर्ग ने एतदर्थ ही हा हा कर रहा रहा, अन्ततः कनिष्ठ भर्मशील आर्यक जनों ने स्वयमेव हम कार्य को अपने हाथ में ले कर इस के लिये उत्सव का ना प्रारंभ किया, वस ऐसा होते ही कार्य का आरंभ हो गया और केवल यहीं से नहीं किन्तु पाटन में भी सहायता प्राप्त होने लगी, अतः कल यह हुआ कि लगभग पांच मास में ही ग्रन्थ मुद्रित हो कर मैथिल हो गया और मैं इसे आपकी सेवा में उपस्थित कर अपने कर्तव्य का पालन करने में समर्थ हो सका।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में जिन २ महानुभाव सज्जनों तथा बाइयों ने आर्थिक सहायता प्रदान कर अंग्रेजी धर्मशीलता का परिचय दिया है उनको इस धर्म कार्य में योग देने के हेतु धन्यवाद है, उनकी नामावली भी ज्ञानार्थ पहले प्रकाशित की गई है ।

इस ग्रन्थ में—देवबंदन, गुरुबंदन, सामायिक विधि, रायसी देवसी प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, गुरुवर कृत स्तवन, अष्टक, थुइयां, वासक्षेप पूजा, नवपद ओली विधि, प्रत्याख्यान पारणविधि, चौबीस महाराज के १५० कल्याणक तथा बीस बिहरमाणजी के नाम, इत्यादि अनेक उपयोगी विषयों का संग्रह है, जिनकी उपयोगिता का निश्चय पाठक जन अवलोकनके द्वारा स्वयमेव कर सकेंगे ।

मेरा विचार यह भी था कि—ग्रन्थ के अन्त में आचार्योंके निर्मित नीति और वैराग्य के उपदेशदायक कतिपय उत्तमोत्तम श्लोकों का भी अर्थ सहित संग्रह कर संग्रोजन किया जाता कि जिससे गृहस्थ श्रवकों को नैतिक क्रिया के ग्रन्थ के द्वारा ही उक्त विषय के उत्तमोत्तम श्लोकोंका भी अभ्यास होकर लाभ पहुँचता; परन्तु पुस्तकप्रकाशन की शीघ्रता आदि कारणों से ऐसा नहीं हो सका, अस्तु- आशा है कि

किसी अन्य उपयोगी पुस्तक के साथ में एसा करनेका शुभावसर शीघ्र ही प्राप्त होगा ।

अन्त में इस कार्य में योगदाता मजदूरों का तथा पालीताना निषामी पं० भगवानदाम जैन ने इसका प्रूफ देखने में परिश्रम लिया है इसलिए उस को भी धन्यवाद प्रदान कर पाठकवर्ग से मेरा निवेदन है कि ग्रन्थ में लेखन, शोधन और मुद्रण आदि के द्वारा जो २ शुद्धियाँ रही हो उनका संगोपन कर तथा ग्रन्थ का प्रयत्नकरन और अनुपयोग कर आप मेरे परिश्रम को सफल करें । किमधिक विज्ञेयु.

निवेदक—

वीर संवत् २४२२ }
द्वितीय वैश्वक्रदा १७ }

मुनि बल्लभसागर,
बीकानेर.

विषयानुक्रमणिका.

सं.पर.	विषय.	पृष्ठ.
१	देववंदन विधि	१
२	गुरुवंदनविधि	११
३	सामायिक लेने का विधि	१२
४	सामायिक पारने का विधि	१८
५	राईप्रतिक्रमणविधि	१६
६	संध्यासामायिकविधि	५७
७	देवसिषप्रतिक्रमणविधि	६२
८	जिनकुशलसूरिजी महाराजका स्तवन	१०३
९	पञ्चखाणविधि	१०४
१०	श्रीसद्गुरुगुणाष्टक	१११
११	श्रीकुशलसूर्यष्टकम्	११३
१२	श्रीगीतमदेव स्तवन	११५
१३	श्रीगुरुगुण स्तवन	११६
१४	जन्ममहोत्सव स्तवन	११७
१५	श्रीपार्श्वप्रभु स्तवन	११७
१६	श्रीनेमिनाथस्वामी स्तवन	११८
१७	अजितनाथस्वामी स्तवन	१२०
१८	श्रीपार्श्वजिन स्तवन	१२१

१६	समुजांति स्तवन	१२१
२०	श्री तेटीपार्श्वजिनवृद्धस्तवन (थाणी ब्राम्हाद्यादिनी)	१२३
२१	श्रीगौतमस्वामी का छंद	१२०
२२	देसायगामिकपद्यस्याणलेनेकीविधि १११	
२३	देसायगामिकपद्यस्याणवारने की- विधि	१२४
२४	यामशेव पूजा	११७
२५	नवपद के नव चरित्रवेदन, नव स्तवन मथा नव भुई	१४१
२६	नवपदवृद्ध स्तवन	१२४
२७	नवपद स्तुति	१५७
२८	नवपद चरित्रवेदन	१७८
२९	नवपद स्तुति	१२६
३०	छादश पार्श्व गुण	१६०
३१	सिद्ध अष्टगुण	१६१
३२	आचार्य का छर्मागगुण	१६८
३३	उवाण्याय पद्यामगुण	१६४
३४	साधु के सत्परायगुण	१६७
३५	सम्पत्तय के सप्तमरु भेद	१६६
३६	ज्ञानपत्र के पञ्चम भेद	१७०

१७	चारित्र्यपद के ७० भेद	...	१७२
३८	तपपद के पचास भेद	...	१७६
३९	चोवीस जिन के १५० कल्याणक (पंचकल्याणक टीप)	...	१७८
४०	दीपमालाको गुणनो	...	१८६
४१	वीसविहरमान के नाम	१८६
४२	चारसाश्वता जिनवर के नाम	१८६
४३	मेरो भावना	१८७
४४	मारद् भावना	१८८
४५	आठ शुई से देवचंदन विधि	...	१९१
४६	चौदह नियमकी विधि	२०१
४७	आवर्कोके प्रत्याख्यान के ४९ भाँगा		२०७
४८	आराधना का स्तवन	२११
४९	पंचमी का छोटा स्तवन	२२२
५०	ग्यारस का स्तवन	२२२
५१	श्रीऋषभजिनेश्वर का स्तवन	...	२२४
५२	श्री सीमंघरस्वामी का स्तवन	...	२२५
५३	पर्युषण की स्तुति	२२८
५४	भगवंत के अंगपूजन का दृष्टा	...	२२८
५५	पञ्चायनी आराधना	२२९
५६	आषक का तीन मनोरथ	२३३

५७	सूक्तक विचार	२३४
५८	श्रुतुवनो ग्रीसंरूपी गृन्तक विचार	२३७
५९	इफीस जातक धोषण पार्शी ...	२३९
६०	पायोम अभक्ष के नाम ...	२३९
६१	तपागच्छीय राहप्रतिश्रमणविधि ...	२४०
६२	जगन्निन्तामणि चित्पर्वद्वन ...	२४१
६३	भरहेसर की सज्जाय ...	२४२
६४	तीर्थचंदना ...	२४२
६५	तपागच्छीय देवमित्र प्रनिश्रमण विधि	२४८
६६	दीपमाला की स्तुति	२४९
६७	देवचन्द्रजी गृत्त स्नाप्रपूजा ..	२५१
६८	अष्टप्रकारीपूजा अर्थ समीन ...	२५३





संख्या १३ भा. १०२

१. गण वृत्ति ।

गण वृत्ति १३ भा. १०२

गणवृत्ति संक्षिप्त । विधेयमन्तरालं भट्टारक

सामान्य वि ग १२५९

१-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-२१-२२-२३-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१-३२-३३-३४-३५-३६-३७-३८-३९-४०-४१-४२-४३-४४-४५-४६-४७-४८-४९-५०-५१-५२-५३-५४-५५-५६-५७-५८-५९-६०-६१-६२-६३-६४-६५-६६-६७-६८-६९-७०-७१-७२-७३-७४-७५-७६-७७-७८-७९-८०-८१-८२-८३-८४-८५-८६-८७-८८-८९-९०-९१-९२-९३-९४-९५-९६-९७-९८-९९-१००



धर्मध्वजमेहिभ्यो नमः ।

धर्मजिनदत्त-कुम्भ-गुरुभ्यो नमः ।

श्रीदेव-गुरु-धर्म-चन्दनविधिः ।

प्रथम पाठः ।

किसी स्थान में श्रीदेव-गुरु-धर्म भक्त दो आरक रहते थे, दोनों सगे भाई थे, उनमें से बड़े का नाम विवेकचन्द्र और छोटे भाई का नाम विनयचन्द्र था, दोनों भाई सार्थक नाम वाले थे अर्थात् बड़ा भाई भक्त्यन्त ही विवेकचन्द्र था, तथा छोटा भाई यम विनयभक्त था, बड़ा भाई विवेकचन्द्र प्रतिदिन श्री श्रीदेव गुरु-धर्म चन्दनप्रिया को विशुद्ध भाव से प्रिया करता था, किन्तु छोटा भाई विनयचन्द्र छोटी अवस्था का होने के कारण उक्त प्रिया से अनभिज्ञ था, अर्थात् उक्त प्रिया के गोप्य और लाभ को नहीं समझता था अतएव बड़े भाई विवेकचन्द्र को यह ईश भी कि मेरे ममान मेरा छोटा भाई भी उक्त प्रिया के महार और लाभ को समझे, तथा प्रतिदिन उमें अन्तर्गत करके जान कर पूज्य करे, अतएव एक दिन प्रातः काल विवेकचन्द्र ने जिस प्रकार प्रतिरोध देकर अपने छोटे भाई को इस प्रिया का महार वाला कर हम में प्रवृत्त प्रिया वदह्य प्रसार है—

“मितद्रुम्नेन मो पेथाद् गजानं देवमा गुह्यम् ।” इमं त्रिप् देवदर्शन के त्रिप् चसते समय अपने को स्वामी हाथ नहीं चमकना चाहिये कुछ चाबसोंको ले लेना चाहिये ।

विनयचन्द्र— जी साहब! लग्नाहूँ (चाबस में का दोनों भाई चले और मन्दिरमें पहुँच कर बीचों निचे अनुमाग वन्दन किया की, इसी प्रकार सब को करना चाहिये ।

द्वितीयपाठ : ।

‘निमीही निमीही निमीही’ १ यह पाठ मन्दिर में घूमता करना । (देवमन्दिर में जाकर यिनय के साथ यह वाक्य बोले) —

श्रीलोक्य आभिं हर नाथ! तुझे नमूँ मैं ,

हे भूमि के विमल रत्न ! तुझे नमूँ मैं ।

हे ईश! सर्वजगत के तुझे नमूँ मैं,

मेरे भवांशु नाशक ! तुझे नमूँ मैं ॥ १ ॥

प्रमुमुद्रा को देखते ही दोनों हाथों को जोड़ कर तथा महान को नमस्कार सि तीन प्रशिक्षणा देते समय यह भावना करनी चाहिये—

हे प्रभो ! ज्ञानगुणस्य प्राप्त्यर्थं प्रथमप्रदक्षिणां ददामि ।

दूसरी प्रशिक्षणा देते समय यह भावना करनी चाहिये—

हे प्रभो ! दर्शनगुणस्य प्राप्त्यर्थं द्वितीयप्रदक्षिणां ददामि ।

तीसरी प्रशिक्षणा को देते समय यह भावना करनी चाहिये—

हे प्रभो! चारित्र्यगुणप्राप्त्यर्थं तृतीयप्रदक्षिणां
ददामि ।

इस के पश्चात् सावित्रा को और यह बोले —

हे प्रभो! चतुर्गतिनिर्माहार्थं स्थम्भिकं रचयामि ।

अर्थ— हे प्रभो! चारों गतियों का नाश करने के लिये मैं स्तम्भिका
बनाना हूँ ।

इस के पीछे तीन पुत्र (दिगन्ती) को और यह बोले—

हे प्रभो ! ज्ञान-दर्शन-चारित्र्यप्राप्त्यर्थं त्रिपुञ्जं
रचयामि ।

अर्थ— हे प्रभो ! ज्ञान दर्शन और चारित्र्य का प्राप्ति के लिये मैं
तीन दिगम्बरियों को बनाता हूँ ।

और एक दिगम्बी पीछे चर्द्ध चन्द्राकार को और यह बोले—

हे करुणासिन्धो! मिदूस्थानप्राप्त्यर्थमर्द्धचन्द्राकारं
करोमि । पुञ्जमेकं च सिद्धवत्स्थित्यर्थं करोमि ।

अर्थ— हे 'करुणामिन्धो' मिदूस्थान की प्राप्ति के लिये मैं
चर्द्धचन्द्रके समान आकार करना हूँ और एक दिगम्बी मिदूस्थान स्थिति
के लिये करता हूँ ।

इसके पीछे भगवान् की दाहिनी भुजा को तर्फ खड़ा होकर
तथा स्त्री हो तो भगवान् की बाई भुजा को तर्फ खड़ा होकर हाथ
जोड़कर तथा दोनों गोंडा को भोग मन्त्र को नमाकर यह बोले—

रक्षामि त्वमाममगो ! यदि ते जायणिञ्चाणं निमोदि-
मन्थणं वेदामि ।

म जाय यो उड कट क माध में लोच वत अपना पादि-
क पाहे इदिवा ॥ कम्मा चदिदे ।

इरियावटियाणं ।

रक्षाकारेण मंदिमत् भगवन् ! इरियावटिगं पटि-
व ? इरुत्तं । इरुत्तामि पटिपुमिडे, इरियावटियाणं,
याणं मममागमणे पाण्डुमणे पाण्डुमणे इरिय-
प्पांसा उभिग पण्ण दम मदी मक्खडासंभाळा
णे, जे मे जाया विमटिया, एगिदिगा, वेडिदिगा, सेडि-
नडरिदिगा, पेविदिगा, अभिटिया, वत्तिया, सेमिया,
गा, मंयटिया, परियायिया, किलामिया, उदयिया,
मां ठाणं मंकायिया, जायिणाओ धवगेयिया सरस
मि दुवटं ।

मम उत्तमं ।

म उत्तमं उत्तमोणं, पायन्निद्धमरुणेणं, विमोली-
मं, विमोलीरुणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घापणद्धाणं,
उत्तमं ।

असम्भ उत्तमिणं ।

असम्भ उत्तमिणं, मीसमिणं, स्वामिणं,
, जेभाइणं, उड्डणं, वायनिसग्गेणं, भम-

लिए , पित्तमुच्छ्राण , सुहृमेहि अंगसंचालेहि , सुहृमे-
हि खेलसंचालेहि , सुहृमेहि दिट्टिसंचालेहि , एवमाह-
एहि आगारेहि अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउ-
स्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं , नमुक्कारेणं न
पारेभि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं आणेणं अप्पाणं धो-
सिरामि ॥

किर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारके एक लोग-
स्स प्रगट कहे ।

लोगस्स उज्जोअगरे , धम्मतित्थपरं जिणे । अ-
रिहंते कित्तइस्सं , चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभम-
जिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमहं च । पउमप्प-
हं सुपासं , जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च
पुष्कदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च । विमलमणं
च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च भल्लिं,
यंदे सुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासे तह
वट्ठमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभियुआ, विहुपरयमला
पहोणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थपरा
मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिथ वंदियमहिषा, जे ए लोगस्स
उत्तमा सिद्धा । आरुग्गपोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं
दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा, आइसेसु अहियं पयासपरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिमंतु ॥ ७ ॥

शिर नीचे बैठ के 'भगवन्' चैत्यवन्दन करे' ज़ीपसा गोड़ा
नीचा करके, दाया गोदा उचा करके, भंजमि बाध के नीचे प्रसादे
चैत्यवन्दन करे -

अनन्तगुणी श्रीशान्तिना नर नारी गुण गावे,
द्रव्य भाव शुचि प्रेमसु अजर अमर पद पावे । सुख
संपत्ति कारक तुम प्रभु पूर्ण प्रीति विमराम, क्षेम कुश-
ल नित चाहिये करूं वन्दन गिर नाम ॥ १ ॥

जें किंशि नामतिल्ये, समो पायाले माणुमे लोए ।
जाटें जिणधिपाटें, ताटें सव्याटें भंडामि ॥ १ ॥

ममोत्तुणं चरितं ताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आदगराणं
तित्थपराणं मयंसुदानं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-
मोहाणं, पुरिसवरपुंढरीआणं, पुरिसवरगंभहत्थीणं ॥
३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनागाणं, लोगतिआणं, लोगपईवाणं,
लोगपउजोअगराणं ॥ ४ ॥ अमयदयाणं, चयखुदयाणं,
मग्गदयाणं मरगदयाणं पोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं
धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्ममारहीणं धम्मवर-
णाउरंतचइवहीणं ॥ ६ ॥ अप्पट्ठिहयवरनाणदेसणपरा-
णं विअट्ठउत्तमाणं ॥ ७ ॥ जिण्याणं जावयाणं तिप्पाणं तार-
पाणं सुद्धाणं पोहयाणं सुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वसुणं
सव्वदरिसीणं मिवमयलमअमणंतमरुखयमव्वापाह-
मपुणरावित्तिणं सिद्धिगइनामणेपं ठाणं संपत्ताणं ममो

जिणाणं जिअभयाणं ॥ ६ ॥ जे अ अईया सिद्धा, जे
अ भवस्संनिष्णागा काले। मंपइ अ यट्ठमाणा, संख्ये
तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावन्ति चेह्याइ उट्ठे अ अहे अ निरियलोए ॥
सब्बाइ ताइ वंदे इह मंनो तन्थ संगाइ ॥ १ ॥

इच्छामि खमाममणो वंदितं जायणिज्जाणं निर्मी-
हिष्साए मन्थएण वंदामि ।

भगवन्!— जावन्त केवि साह भरहेरययमहावि-
देहे अ । संख्येसि तेसि पणओ निविहेण तिदइविर-
याणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ २ ॥

चौबीस भगवान् का स्तवन ।

प्रह उटी मैं सदा नम्रु वारि दाथ जोड के साम ।
चौबीसी जिनराज को मैं नित्य करूं परणाम ॥ १ ॥
(टिप्पणी) १ ऋषभ २ अजित ३ मंभव ४ अभिनन्दन अरु
५ सुमति महाराज । ६ पद्म अनुपारम ७ चंदाप्रभुजी से लग
न लगा है आज ॥ २ ॥ प्र० ॥ ९ सुनिधि १० शोतल
११ श्रेयांस मयाई दीजे मुक्ति नाथ । १२ यामुपूज्य जिन
पारमा वारि १३ विमल १४ अनन्त १५ नाथ ॥ ३ ॥ प्र० ॥
१५ धर्म १६ ज्ञान्ति अरु १७ कुन्नु जिनेश्वर १८ आर
१९ मल्लि महाराज । २० सुनिसुव्रत २१ नमि २२ नेमजी

२३ पार्श्व २४ वीर जिनराज ॥४॥ प्र०॥ कहे पाठक का
की, निधान पुरो जाम। कर जोही गुण गावना, व
बंद गोपालदास ॥ ५ ॥ प्र० ॥

उपसगाहरसोत्र ।

उपसगाहरं पासं . पासं बंदामि कम्मघणमुयकं
विसहरविसनिद्रासं, मंगलकत्तलाण आवासं ॥ १ ॥
विसहर- फुल्लिगामंनं, बंटे धारेइ जो सपा मणुओ ।
तस्स गहरोगमारी, इइजरा जंति उपसामं ॥ २ ॥
चिट्ठउ दूरं मंनो, तुज्झ पणामांवि पट्टफलो होई ।
नरतिरिपु वि जोया, पायंति न दुयलदोहगं ॥ ३ ॥
तुह सम्मत्ते लडं, चिंतामणिकणपाययन्महिण ।
पायंति अविग्गेणं, जोया अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इअ संधुओ महापस, भतिभरनिम्मरेण हियण्ण ।
ता देव दिउज बोहिं, भवे भवे पास जिणवन्द ॥ ५ ॥
पीढे दोनो हाथ जोइ मम्मक लगा के पि. वह बोचना—
जय वीरराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभायओ भयव ।
भयनिव्वेओ मग्गाणुमारिया इहफलसिद्धी ॥ १ ॥
लोगविगद्धपाओ, गुग्गणपूजा परत्थकरणं च ।
सुहगुग्गजोगो तत्त्वयणमेयणा आभवममंष्टा ॥ २ ॥
पीढे गदा ते कंठाव जोइ करके पर बोचना—
अरिहंत नेइआणं करेमि

आण पुअणवत्तिआण सफारवत्तिआण सम्माणार्थ
 आण पोहिटावत्तिआण निम्बसुग्गवत्तिआण ॥ १ ॥
 सद्धाणं मेहाणं धिइणं धारणाणं अणुप्पेहाणं वड्डुमाणी
 ठामि काउस्सगं ॥ २ ॥

अथ अस्मिन्नासमिन्नास्सिणं छाणं
 जंभाइणं उड्डुणं वायनिसग्गेणं भमलीणं पित्तमुच्छा
 णं ॥ १ ॥ सुट्टुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुट्टुमेहिं खेजसंचा
 लेहिं, सुट्टुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइणं आग
 रेहिं, अमग्गे अविराहिंओ सुद्ध मे काउस्सगं ॥ ३ ॥
 जाव अरिहंताणं भगवन्ताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥
 ताव कायं ठाणेणं मोखेणं भाणेणं अप्पाणं वांसिरामि ॥ ५ ॥

इस के पीछे पाउस्सग में दोनों हाथों को नीचे की ओर
 लम्बे करके नेत्रों को बन्द करके तथा होठ और जीभ को दिन
 दिलाये वह चिन्तन करना । काउस्सग पार के (पीछे दोनों हाथों
 को जोड़ कर यह बोले—

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ १ ॥

श्रीशान्तिनाथजी, सात्ताकारक देव ।

मनमोहन स्वामी, अनुपम मूर्ति सेव ॥

सुद्ध रोम सुलसिण, बन्नें प्रणमूँ नाथ ।

सुद्ध समक्ति मौण्डूँ, मैं जोड़ प्रभु के हाथ ॥ २ ॥

इस प्रकार दर्शन कर तथा पीछे पठवक्खाय कर के “भावस्मही”

केंद्र कीन वात बंद कर मन्दिर में बाहर जावे ।

मृत्नीय पाठ :

पूज्योक्त गीति में देवबन्धनविनि को पूर्ण करने के पीछे गु-
विधि को करना चाहिये, अथवा गुह्यमगम के सामने खड़े
नीचे लिखे वाक्य से दो बार स्वनाममय होना चाहिये ।

**इच्छामि स्वमासमगो वंदितं जायगिज्जाग नि-
दिध्याग मत्थगण वंदामि ॥ १ ॥**

इस प्रकार गन्धमय देव नीचे लिखे पाठ का बोलकर
महागम से गुह्यमगम पुछनी चाहिये -

**इच्छाकर भगवन्! सुख साध्य, सुख देयनिय सुख
शरीर निरापाप सुख संप्रमपात्रा निर्देशं छं जी स्याम
साता छे जी ॥ २ ॥**

पूज्योक्त पाठ को बंद कर धीगुन्नी को नमस्कार करें, पीछे नीचे
बैठ कर दाहिने हाथ को नीचे गिरा कर बाएँ हाथ को गुह्यली वर मुन
पर लगाकर । नीचे लिखे हुए पाठ को कोट्य चाहिये—

**इच्छाकारंण मंदिमह भगवन्! अन्नुहिध्याऽग्नि-
अग्निभर साध्यं त्वामेतं इच्छं त्वामेमि देयनियं, जं कि-
यि अपनिज परपतिजं भजे पाणे विगतं देव्याये**

इति को बाह्य वजे नर बंद पाठ बंदना चाहिये, किन्तु बाह्य
वजने के पीछे "गायत्री" की जगह "देयनिय" शब्दों से न
चाहिये ।

करेमि भंते! सामाठणं, सावज्जं जोगं पंचक्याणि
जायनियमं पञ्जुवामामि । दुविहं तिविहेणं, मणेणं धाय
ए काणणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते! पट्टिक्कमा
निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इस के पधत्त खमासमण् देकर नीचे निम्ने हुए सूत्रों का कथन
वाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहिणं परि
क्कमामि । इच्छं । इच्छामि पट्टिक्कमिउं, इरियावहिणं
विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे वीयक्कमणे हरियक्क
मणे ओसा-उत्तिग-पणाग-दग-मट्ठा-मक्कहा-संताणासंवा
मणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया
वउरिंदिया पं चिंदिया, अभिहया वत्तिपा लेसिया संघाइ
या संघहिणं परियाविणं किलामिणं उइविया ठाणाओ
णं संकामिणं जोवियाओ खवरोविया, तस्स मिच्छादि
दुक्कहं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसो
हीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायण
ट्ठाणं ठामि काउसगं ।

अन्नत्थ उत्तसिणं नीससिणं, खासिणं, लीणं
जंभाइणं, उइणं, बायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमु
च्छाणं, सुइमेहि अंगमंचालेहि, सुइमेहि खेलमंचालेहि

सुहुमेहिं दिदिसंचालेहिं एवमाहं हिं आगारेहिं अभगंगां
अविराहिओ हउअ मे कउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवं-
ताणं, नमुफारेणं न पारेमि ताव कउपं ठाणेणं मोणेणं
झाणेणं अप्पाणं बोसिरामि

यदा परं चारं नवकारं" अथवा एक "लोगस्स" का कउस्सग्ग
कारके " यमो अरिहंताणं" कउअ कउस्सग्ग को पारना चाहिये
पीछे प्रकटरूप में नीचे मिलते हुए "लोगस्स" इत्यादि पाठ को बहना
चाहिये—

लोगस्स उज्जोमगरं, धम्मतिथपरं जिणो। अरिहंते
कित्तहरसं, चउवीसं पि केवली॥१॥ उस्तममजिअं च वंदे
संभवमभिणंदणं च सुमहं च । पउमप्पहं सुपासं,
जियां च वंदप्पहं वंदे॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल
सिउजंस यासुपुअं च । विमलमणंगं च जिणं, धम्मं संति
च वंदामि॥३॥ पुंयुं अरं च महिं, वंदे मुणिसुच्चयं नमि-
जिणं च । वदामि रिठ्ठेमि, पारं तह वट्टमाणं च॥४॥
एवं मणं अभिपुआ, विहुपरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसं पि जिणवरा, तिथपरा मे पसीयंतु॥५॥ कित्तिय
वंदिप महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरग्गा-को-
हिलामं समाहिवरमुत्तमं दितु॥६॥ वंदेसु निम्मलपरा
आइअं सु अदिपं पपासपरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं-जोगं पद्यंअयंमि,
जावनियमं पज्जुवासामि । दुविट्ठं तिबिहेणं, मणेणं वापा-
णं काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि
निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इस के पद्यत् खवासमण देकर नीचे निम्ने हुए सूत्रों का कदना
चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! हरियावहिणं पडि-
क्कमामि । इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं, हरियावहियाणं
विराहणाणं नमणागमणे पाणक्कमणे योयक्कमणे हरिवक्क-
मणे ओसा-उत्तिग-पगाग-दग-मदी-मक्कडा-संताणासंक-
मणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया
घडरिंदिया वं चिंदिया, अमिहया वत्तिया लेसिया संघाइ-
या संघट्टिया परिवाविपा किलामिया उहविया ठाणाओठा-
णं संकामिया जीवियाओ ववरोविपा, तस्स मिच्छामि
वुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसो-
हीकरणेणं, विसह्दीकरणेणं, पायाणं कम्माणं निग्धायण-
ट्ठाणं ठामि काउत्सगं ।

अन्नत्थ ऊससिणं नीससिणं, खासिणं, छीणं,
जंभाइणं, उडूणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमु-
च्छाणं, सुहृमेहि अंगमंचालेहिं, सुहृमेहि खेलमंचालेहिं

हृमेहिं दिदृमंशालेहिं एवमाहृहिं आगारेहिं अभगो
रयिराहिओ हृज्ज मे वउत्तम्मगो जाव अरिहंताणं भगवं-
णं, नमुद्धारेणं न पारेमि ताव वउपं ठाणेणं मोयेणं
आणेणं अत्ताणं धोमिरामि

यद्वा पा वा ' नउवा' अथवा एव ' लोगस्स' वा वउत्तम्म
के ' दमो अरिहंताणं' वउत्तम्म वउत्तम्म को पाना वाहिणे
हिं वउत्तम्म मे मे मे लिसे हृज्ज ' लोगस्स' इत्यादि पाठ को कहना
हिं—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथयरे जिये । अरिहंते
केत्ताहस्सं, वउपीसं पि वेवली ॥१॥ उत्तममजिअं च वरे
अभयमभिणंदणं च सुमहं च । वउत्तम्महं सुपासं,
जेयं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीमल
मेउज्जस पासुपुअं च । विमलमणं च जिणं, धम्मं संति
य वंदामि ॥३॥ कुंभुं अरं च मरिद्धिं, वंदे सुणिसुव्वयं नमि-
जेणं च । वंदामि रिद्धनेमिं, पासं तह वढमाणं च ॥४॥
द्वं मणं अभिपुआ, विहुपरयमला पहीणजरमरणा ।
वउपीसं पि जिणयरा, तिथयरा मे पसीपंतु ॥५॥ कित्तिप
महिपा, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग-यो-
हिला मे समाहियरमुत्तमं दितु ॥६॥ चंदेसु निम्मलपरा
आहंसेसु अदिपं पपासपरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा

करेमि भंते! सामाज्यं, सायज्जं जोगं पञ्चखामि,
 तावन्नियमं पञ्जुवासामि । दुविहं निविहेणं, मणेणं वापा-
 ए काणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि
 नेन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इस के पद्यत् खमासमण् डेकर नीचे निम्ने हुए मूत्रों का कटना
 चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! हरियावहिणं पडि-
 क्कमामि । इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए
 येराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे पीयक्कमणे हरियक्क-
 मणे ओसा उत्तिग-पगाग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणासंक्क-
 मणे, जे मे जीवा विराहिया एगिदिया वेउंदिया तेइंदिया
 वउरिंदिया पं चिंदिया, अभिहया वन्निया लेसिया संघाइ-
 ता संघट्टिया परिमायिया किलामिया उरविया ठाणाओठा-
 णं संकामिया जीवियाओं ववगेविया, तस्स मिच्छामि
 पडिक्कं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पापच्छिन्नकरणेणं, विमो-
 षकरणेणं, विसर्द्धाकरणेणं, पायाणं कम्माणं निग्घायण-
 णं ठामि काउससर्गं ।

अन्नत्थ ऊससिणं नीससिणं, खासिणं, स्त्रीणं,
 तंभाइणं, उड्डणं, वापनिसग्गेणं, पित्तमु-
 द्धाणं, सुट्टमेहिं अंगमंचालेहिं, ५७

५७

करेमि भंते! सामाटपं, सावज्जं जोगं पचंक्खामि,
यनियमं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेगं, मणेणं धाया-
त्ताणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि
न्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इस के पश्चात् खमासमण् देकर नीचे निम्ने हुए मंत्रों को कदना
हेये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहिणं पडि-
मामि । इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाण
आहणाण गमणागमणे पाणक्कमणे वीयक्कमणे हरियक्क-
माओसा-उत्तिम-पणम-दम-मदी-मक्कडा-संताणासंक्र-
मा, जे मे जीवा विराहिया एगिदिया बेइदिया सेइदिया
रिंदिया पंचिदिया, अभिहया यत्तिया लेसिया संचाइ-
संचदिया परियाविषा किलामिया उदयिया ठाणाओठा-
संक्रामिया जीवियाओ धवराविषा, तस्स मिच्छामि
इहं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पापच्छिन्नकरणेणं, विसो-
रणेणं, विसर्द्धाकरणेणं, पायाणं कम्माणं निग्धापण-
मि काउसमगं ।

असंभ्रं भीमसिण्णं, खांसिण्णं, छीण्णं,
वापनिमग्गेणं, भमलिण् पित्तमु-
सुहमेहिं खेलमंचालेहिं

सुहृमेहिं दिष्टिमंवालेहिं एवमाहृहिं आगारेहिं अभगो
अविराहिओ हृज्ज मे काउस्सगो जाव अरिहंताणं भगवं-
ताणं, नमुदारेणं न पारेमि ताव कापं ठाणेणं मोणेणं
आणेणं अप्पाणे वोसिरामि

एहां पा वाग' नरका' अथवा एक "सोगम्म" का काउस्सग
वाके " एमो अरिहंतार्ह" कहकर काउस्समा को पान्ना वादिपे
पीछे प्रवृत्त्य में मीचे लिखे हुए "सोगम्म" इत्यादि पाठ को कहना
वादिपे—

सोगस्स उज्जाअगरे, धम्मतिथपरंजिये। अरिहंते
कित्तहस्सं, चउपीसं पि वंयली ॥१॥ उसममजिअं च वंदे
संभवमभिजंदणं च सुमहं च । पउमप्पहं सुपासें,
जियं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुण्णदंतं, सीअल
सिउजंस वासुपुजं च । विअलमणं च जिणं, धम्मं संतिं
च वंदामि ॥३॥ कुंभुं अरं च महिं, वंदे मुणिसुअपे नमि-
जिणं च । वंदामि रिद्धनेमिं, पासं तह वटमाणं च ॥४॥
एवं मए अभिगुआ, विहृयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउपीसं पि जिणवरा, तिथयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिप
वंदिप महिया, जे ए सोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरग-वो-
हिलामं समाहियरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ वंदेसु निम्मएरा
आहंसेसु अदिपं पयासपरा । सागरवरंभीरा, सिद्धा

सिद्धिं मय दिमन्तु ॥ ७ ॥

इस के पश्चात् एक एक खमासमण देकर नीचे लिखे हुए पाठों को बोलना चाहिये—

१- इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! वेमणे संदिसा-
उं? इच्छं ।

२- इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! वेमणे डाउं?
इच्छं ।

३- इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्जाय संदि-
साउं? इच्छं ।

४- इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्जाय करूं ।

फिर पैंचवें खमासमण देकर आठ वा नवका मन्त्र को बोले ।

॥ इति प्रभात सामायिकविधि मय्गं ॥

सामायिक ४८ मिनट की होती है जिसमें ज्ञान ध्यान करना ।

इसके पश्चात् सामायिक को पढ़ना चाहिये उसकी विधि यह है—

फिर खमासमण देकर मुहपत्ती की पडिलेहणा कानी चाहिये, फिर दूसरा खमासमण देकर नीचे लिखे पाठ को बोले —

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारूं, पथाशक्ति ।

इस के पीछे फिर खमासमण देकर नीचे लिखे पाठ को बोले—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारंमि,
तहत्ति ।

इस के पीछे यदि ऐसा सोझासा झुकाव नीचे की तरफ नजर
में आये तो पीछे गौडाम्नी जमानसे नीचे बैठकर स्थिर होना चाहिये
नीचे स्थिर पाठक होना

भयं दमयन्तमहो, सुदमगो धूलमह यदो य । सहलीक-
पगिहपाया, माह एवेविता हन्ति ॥१॥ साहग्य वंदणेगं,
नामह पायं अमंकिगा भाया । फासुअदाणे निअर, अ-
भिगाहो नागमाईगं ॥२॥ छउमन्यो मृदमगो, कित्ति-
यमित्तिपि संमगइ जागो । जं न म संभरामि अहं, मिच्छा
मिदुफहं तम्म ॥३॥ अं जं मणेण गित्तिप- मसुहं थापाइ
भामियं किंवि । असुहं काण्णकायं, मिच्छा मिदुफहं
तम्म ॥४॥ मामाइय पांसहं मंठियम्म जायरस जाइ जां का-
लो । सो सफलो पांठय्यो, तेसो मंसार फलहेऊ ॥५॥ सा-
मायिक विधं लीयुं, विधं कीयुं, विधि करतां, जे कोइ अविधि
जाशातना लगी होय, दम मनये, दम वचनये, बारह काया
ये, वसीस दूयग माहिं जो कोइ दूयण लगा होय सो
मह, मनकर वचनकर कायायें करी मिच्छा मिदुफहं ।

- 225/14 -

। राईप्रतिक्रमणविधि ।

पंचदशं भाग

उक्त प्रकार से सामादिक गहण करने के पीछे एक सम.समय :

देकर नीचे सिधे पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! भिष्यधन्दन करूं,
इच्छं।

इम के पक्षन् नीचे बिगे हुए गुरुओं को क्रमशः बोलें—

जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेनुंजि उउजं-
नि पहु नेमिजिण जयउ वीर सुखउरि-मंडण ॥ १ ॥
भरुअच्छय मुणिसुब्बय, मुहरि पास दुह-दुरिय-खंडण।
अवरधिदेहिं जे तित्थयरा, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि।
सीयाऽणागय-संपइ य वंदूं जिण सुब्बेयि ॥ २ ॥

कम्मभूमीहिं कम्मभूमीहिं पदम-संघयणि, उफोसय
सत्तरिसय जिणधराण विहरंत लब्भइ । नव-कोडीहिं
केवलीण, कोडी- सहस्स नव साहू-संपइ । संपइ जिणधर
वीसमुणि, विहुं कोडीहिं वरणाण । समणह कोडीसहस्स
दुअ, धुणिज्जइ निच्चविहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा,
लक्ख्वा ह्वप्पस अट्ठ कोडीओ ॥ ३ ॥ सपञ्चापासीया, तिल्लुक्के
चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नवकोडिसयं, पणवीसं कोडी लक्ख
तेवन्ना । अट्ठावीस महस्सा, अउसय अट्ठासिया प-
ट्ठिमा ॥ ३ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
आइं जिणपिणाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ ४ ॥

नमोऽन्युणे अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थ-
 पराणं संपंमंयुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरि-
 रिमवरपुंढरीअणं पुरिमवरगंधर्त्थीणं लोंगुत्तमाणं लोम-
 नाहाणं लोमहिअणं लोमपईयाणं लोमपउजोअगराणं
 अमपदयाणं अयखुदयाणं मग्गदयाणं सरगदयाणं बो-
 हिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेमियाणं धम्मनापमाणं धम्म-
 सारहीणं धम्मवरचाउरंतणद्वयदीणं अण्हिहपवर-ना-
 णंदमण-धराणं विअदुउमाणं जिणाणं जावयाणं तिस्साणं
 तारयाणं धुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सप्यन्नूणं
 सव्वदरिमाणं मिवमवलमरुअमणं तमज्जलयमय्यावाहम-
 पुणराविसिम्मिद्विगटनामपेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणा-
 णं जिपमयाणं ॥ जे अइआ सिद्धा, जे अ भविस्सं-
 नि णागए काले । संपइ अ बहमाणा, सय्ये तिविहेण
 वन्दामि ॥ १ ॥

(जायंति चेइआइ)

जायंति चेइआइ, उट्टे अ अहेअ तिरियलोए अ ।
 मय्याइ ताइ यंदे, इह संनो तत्थ संनाइ ॥ १ ॥

(जावंत केवि साह)

जावंत केवि साह, भरहेरवयमहाविदेहे अ । स-
 य्येमि संमि पणआं, तिविहेण तिदंढविरयाणं ॥ १ ॥

(परमेष्ठि नमस्कार)

मम संति च वंदामि ॥ ३ ॥ कुरुं अरं च महि, वंदे मुनि-
 सुव्ययं नमिजिणं च । वंदामि रिदुनेमि, पासं तह वदू-
 माणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभियुआ, विहूणयमला
 पहीणजरंमरणा । चउवोसंपि जिगावरा, तित्थपरा मे प-
 सीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिप-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्त-
 मा सिद्धा । आरुग्गयोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दितु
 ॥ ६ ॥ वंदेसु निम्मलपरा, आइवेसु अहियं पयासप-
 रा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इसके पीछे पट्टिकमण के ठावणे की विधि को कर्नी चाहि-
 ये, उस की विधि यह है कि—

१- प्रथम खमासमण देकर “श्री आचार्यजी मिश्र” कहकर वन्दन
 करना चाहिये ।

२- दूसरा खमासमण देकर “श्रीउपाध्यायजी मिश्र” कहकर व-
 न्दन करना चाहिये ।

३- तीसरा खमासमण देकर “जङ्गमयुगप्रधान वर्तमान भट्टारक
 श्रीगुरुजी” का नाम लेकर वन्दन करना चाहिये ।

४- चौथा खमासमण देकर सर्वसाधुओं को वन्दन करना चाहिये ।

इस प्रकार चार खमासमण देकर पट्टिकमणा को ठाकर गोदो-
 हन- आसन से बैठकर मस्तक को नमाकर दोनों हाथों से मुंहपत्ती को-
 मुखपर देकर नीचे लिखे हुए “सध्वस्तवि” इत्यादि वाक्य को बो-
 लना चाहिये—

सत्त्वंसधि राक्षस-दुर्वित्ति-दुष्कृत्स्व-दुर्विद्विषं,
इच्छं तस्स मिच्छामि दुष्कृत् ॥ १ ॥

इस के पीछे दूर लिखा हुआ "अमोक्ष्युणं" का पाठ बोलना चाहिये। तदनन्तर सदे होकर नीचे लिखा हुआ "क्रेमि भंते" का पाठ बोलना चाहिये—

करेमि भंते! सामाहयं सायज्जं जोगं पचक्खामि
जाय नियमं पज्जुवासासि दुर्विद्वं निविहेयं मणेगं पाया;
ए कएणं न करेमि न कारयेमि तस्स भन्ते! परिक्खामि
निंदामि गरिहामि अप्पाणं धोस्सिरामि ॥ १ ॥

इस के पद्यन्तु नीचे लिखा हुआ "इच्छामि टमि" का पाठ बोलना चाहिये—

इच्छामि टमि कउत्तमं जो मे राउओ अइप्पारो
कओ फाहओ पाहओ भाणसिओ उस्सुत्तो उम्मगो
अक्खो अकरणिओ दुज्झाओ दुव्विचित्तिओ अणापा-
रो अप्पिच्छिपव्वो असावगपाउगो नाणे तद्दंसेण च-
रित्ताचरित्ते सुण सामाहण तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कत्ता-
पाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सि-
क्खयायथाणं पारसविहस्स स्वावगभन्तस्स जं खंदिपं जं
विंरादिपं तस्स मिच्छा मि दुष्कृत् ॥ १ ॥

इसके पद्यन्तु नीचे लिखा हुआ "अस उच्छी" का पाठ बोलना चाहिये—

तस्य उत्तरीकरणेन पत्यच्छित्तकरणेन विमोहीकर-
णेन विसृष्टीकरणेन पात्राणां कर्माणां निग्यायणद्वारेण
ठामि काउत्सग ॥१॥

इसके पीछे पूर्व लिखा हुआ “अन्त्य ऊत्सतिर्यं” का पूरा
पाठ बोलना चाहिये ।

इसके पीछे चरित्रशुद्धि के निमित्त चार नवकारमन्त्र अथवा
पूर्व लिखे हुए एक “लोगस्त” का काउत्सग करके उनको बार कर
फिर देशशुद्धि के लिये एकद्वारसे पूर्व लिखे हुए “लोगस्त” इत्या-
दि पाठ को बोलना चाहिये ।

इसके पीछे नीचे लिखा हुआ पाठ भी बोलना चाहिये—

सञ्चरोए अरिहंतचेऽभ्यासं करेमि काउत्सग ॥१॥
वन्दनवत्तिआए पूजनवत्तिआए सकारवत्तिआए सम्मा-
णवत्तिआए पांहिलाभवत्तिआए निरुवसगवत्तिआए
सद्वाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए बहुमाणी-
ए ठामि काउत्सग ॥१॥

इसके पीछे पूर्व लिखा हुआ “अन्त्य ऊत्सतिर्यं” इत्यादि
पाठ बोलना चाहिये ।

तदनन्तर चार नवकारमन्त्र का अथवा पूर्व लिखा हुआ एक
“लोगस्त” इत्यादि पाठ का काउत्सग करके, उसके पीछे ज्ञानाचार
के निमित्त नीचे लिखा हुआ पाठ बोलना चाहिये—

यसहस्स षट्ठमायस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं
मारिं या ॥३॥ उज्जिनसेलसिद्धरे, दिक्खन्ना नाणं निसी
हिंघ्या जस्स । तं धम्मवक्कवट्ठि, अरिहनेमिं नमंतामि ।
४ ॥ यत्तारि अहं दम दोय वेंदिपा जिणयत्ता षड्ठरोसं
परमवुनिद्धिअहं, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

कि/ तीसरे च. वरदक की मुद्रायती पड़िलेइया कानी चाड़िये
बावें हाथ में मुद्रायती को लेकर उम में व. वेंदान से दाहिने कान तक
महाट को ठूँककर मुद्रायती को च में रखनेना चाड़िये और उत के
मध्यभाग में गुरुवाण की कल्पना करनेनी चाड़िये ॥

मुमुक्षुन्दना का पाठ यह है—

इच्छामि ज्यमानमणां ! वेंदिउं आयगिउज्जाणं निमी-
डिज्जाणं अणुज्जाणं मे मिउग्गाहं । निमीहि । अहोकार्प
कादमंकार्पं ज्यमानिउज्जा । मे कि. दावां अणुहिउंताणां
वट्ठमुभेण मे राट्ठं वड्ठंभा, जग्गा मे आयगिउज्जा न मे,
ज्जासेमि ज्यमानमणां राउण वड्ठंमं, आउसिगाणं,
वडिक्कमामि ज्यमानमणां राउअण अ. म. मणाणं नि-
र्जासन्नवराणं जे हिंवि भित्ताण मणहू. हाण वड्ठुकरा ?
आउदुद्धरणं राउण मणाणं मणाणं लो. माण वड्ठुकरा लिगा-
णं मणव भित्तां वराणां मणव वड्ठुकरा मणाणं आमाणमा-
णं तो मे अउअणां व. मां जस्स ज्यमानमणां ! वडिक्कमा-
मि विदामि मणिहामि मणाणं वेंदिहामि ॥ १ ॥

इस के पीछे अठारह पाप स्थानक की चालोदनी नीचे लिखे हुए पृष्ठ में करनी चाहिये—

प्राणानिपान्मृषायाद् अदत्तादानमैधुन परिग्रह
क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कण्टह अभ्याख्यान वै-
शुन्य रति अरति परपरिथाद् मायामृषायाद् मिथ्यास्य
ज्ञान्य, ये अठारह पापस्थानक सेव्या होंग, सेवराख्या होंग
सेवनां प्रत्ये भला जाव्या होंग, तें सत्ये हूँ मन ध्यान का-
गायें की। तस्म मिच्छा मि दुष्कटं ।

ज्ञान दर्शन चास्त्रि पाटी पांथी टक्की कयली नय-
कारयली देव गुरु भर्म की। आशानना की। होंग, पनो
कर्मोदानो की। आमेयना वरी होंग, राजकथा, देशकथा,
मंत्राकथा, भक्तकथा की। होंग, और जो कोई पाप परनि-
न्दादि की। होंग, कर्मशु होंग, कर्मों अनुमोर्ण होंग मो-
क्षे मने वनने काग, ये करके । अत्रि अनिषार आलोप-
न कर के परिष्कमः। में आलोपे तस्म मिच्छा मि दुष्कटं॥

इस अठारह पाप पृष्ठ के पद पूर्व लिखे हुए अठारह पाप स्थानक
इस पृष्ठ में करनी चाहिये ।

इस के पृष्ठ में अठारह पाप स्थानक पर आशानना का येद का
दर्शन का । इस की पृष्ठ में अठारह पाप स्थानक पर कर दि-
— इस अठारह पाप पृष्ठ के पद पूर्व लिखे हुए अठारह पाप स्थानक
इस पृष्ठ में करनी चाहिये ।

इत्यादि पाठ को यह घर “ इच्छामि पट्टिमिडे जो मे रादभो”
 इत्यादि “ इच्छामि ठमि” इत्यादि मन्त्रों पाठ को कोल घर नीचे
 लिजादुआ बन्धितु सुत्र को बोलना चाहिये, तथा इग सुत्र को ४२
 वीं गाथा तक बैठ घर ही बहना चाहिये, तथा शेपघाट गाथाओं
 को खड़े हो घर बहना चाहिये—

पंदितु सज्यसिद्धे, धम्मावरिण अ सज्यसाहू अ ।
 इच्छामि पट्टिमिडे, सायगधम्माइअरस्स ॥१॥
 जो मे यथाइअमारो, नाणे तह दंसये वरित्ते अ । सुहृ-
 मो अ यापरो या, तं निदे तं च गरिहामि ॥ २॥ बुधि-
 हे परिगाहंमि, सायजे बहुविहे अ आरंभे । वारायणे
 अ करणे, पट्टिमिडे राइयं सज्यं ॥३॥ जं पट्टिमिदिणहिं,
 पउहिं कसापहिं अणसत्थेहिं । रागेण य दोसेण य, तं
 निदे तं च गरिहामि ॥ ४॥ आगमणे निगमणे, ठाणे
 यक्रमणे अणाभागे । अमिआगे अ निआगे, पट्टिमिडे
 राइयं सज्यं ॥ ५॥ संकयकंखविगिच्छा, पसंसे तह
 संभयो कुलिगीसु । सम्मत्तरस्सइअरे, पट्टिमिडे राइयं
 सज्यं ॥ ६॥ हक्कापसमारंभे, पयसे अ यथायथे अजे
 दोसा । अत्तहा य परहा, उभयहा चेय तं निदे ॥ ७॥
 पंचण्हमणुअसुआणं, इणअणं य तिरहमइअरे ।
 सिपण्णं य चउण्हं, पट्टिमिडे राइयं सज्यं ॥ ८॥ ९॥ मे
 अणुवपंमि, पूलगाणाइपायविइओ । आपरिअम-

णसत्थे, इत्थं पमापप्पसंगेणं ॥ ६ ॥ बह्वयं च विच्छेए,
 अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयरसइआरे, पडिक्कमे
 राइयं सज्जं ॥ १० ॥ धीए अणुच्चयंमि, परिधूलग
 अलिअवयणविरईओ । आपरियमप्पसत्थे, इत्थं पमा-
 पप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसारहत्सदारे, मोसुवएसे अ
 कूडलेहे अ । धीयवयरसइआरे, पडिक्कमे राइयं सज्जं ॥
 १२ ॥ तइए अणुच्चयंमि, धूलगपरदव्यहरणविरईओ ।
 आपरियमप्पसत्थे, इत्थं पमापप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेना-
 हट्ठपप्रागे, तप्पट्ठित्थे विरुद्धगमणे अ । कूडतुल कूड-
 माणे, पडिक्कमे राइयं सज्जं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुच्च-
 यंमि, निचं परदारगमणविरईओ । आपरियमप्पसत्थे,
 इत्थं पमापप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिगगहिआ इत्तर,
 अणंग विवाह निव्य अणुरागे । चउत्थवयरसइआरे,
 पडिक्कमे राइयं सज्जं ॥ १६ ॥ इत्तो अणुच्चये पंचमंमि
 आपरियमप्पसत्थंमि । परिमाणपरिच्छेए, इत्थं पमाप-
 प्पसंगेणं ॥ १७ ॥ भण-वत्त-त्तिस्त-दत्थू-रुण-सुवत्तं अ
 कुयिअपरिमाणे । दूपए चउत्थयंमि य, पडिक्कमे राइयं
 सज्जं ॥ १८ ॥ गमलरमय परिमाणे, दिमासु उट्ठं अहे
 य निरियं च । सुट्ठिमइ अंतरद्धा, पढमंमि अणुच्च-
 निदे ॥ १९ ॥ मत्तमि य मंमंमि अ, पुणे अ फले अ
 गंधमत्ते अ । उअमांगपरिमाणे, पापंमि गुणव्यए निदे

॥ २० ॥ सधिते पट्टिपडे, अप्पोलिङ्गुप्पोलिपं च आहा-
रे । तुच्छोसहिभक्खणया, पट्टिपमे राइयं रुव्वं ॥
२१ ॥ इंगाली-यणसाही-भाही-फोही तुदञ्जए कम्मं ।
याणिञ्चं येव दंन-लक्ख-रस-वेम-विस-विसुयं ॥ २२ ॥
एयं खु जंतपिद्दण-कम्मं निद्रंछणं च दवदाणं ।
सरदहल्लापमोमं, असदपोमं च वज्जिञ्जा ॥ २३ ॥
सत्थगिमुमल्लंजग-तणकहे मंनमूलभेसञ्चं । दिमे दया-
विण्णं वा, पट्टिपमे राइयं रुव्वं ॥ २४ ॥ यहाणुप्पदण-
विलेयणं रुहरूपरमंभे । दत्थामण आभरणे, पट्टिपमे
राइयं रुव्वं ॥ २५ ॥ बंदप्पे कुट्टुङ्गण, मोहरिअहिगण
भोगअहरिसे । दंदिमि अणट्ठाण, नइयंमि गुणप्पए नि-
दे ॥ २६ ॥ निविहे दुप्पणिदाणे, अणवहाणे तथा वइ
दिहणे । सामाइयवितहण, परमे सिक्खावण निदे ॥
२७ ॥ आणवणे पेसवो, मरे रुवे अ दुग्गलवसेवे ।
देसादगासिदमि, दीणं सिक्खावण निदे ॥ २८ ॥
संफारणविही-दमाय तह येव भोयदाभोण । पंसह-
विट्ठियरीण, रुइ? सिक्खावण निदे ॥ २९ ॥ रुव्विते
निविट्ठियणे, विट्ठिणे दणममदुरे येव । वल्लावमदा-
णे, वइहे नि पत्थावण निदे ॥ ३० ॥ सुहिणु अ इहिए
सु अ, जा मे अंसजणु अलुवत्ता । रागेण च दोसेण-
च, सं निदे सं च करिहामि ॥ ३१ ॥ साहणु संबिभागो,

न कञ्चो तवचरणकरणजुतेसु । स्तंते फासुअदाने
 निदे ते च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जी
 मरणे अ आसंसपअंगे । पंचविहो अइअर्रो, मा म
 सुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पट्टिकमे
 यस्स थायाए । मणसा माणसिअहत, सुअरस यथा
 रत्त ॥ ३४ ॥ पंदणवयसिक्खलागा-रयेसु रुद्ध, कत्तापदं
 । गुभासु अ समिईसु अ, जो अइअर्रो अत निदे ॥ ३५ ॥
 सम्मरिहो जीयो, जइ विहु पायं समापरइ किंवि । अ
 ईइ पंगो, जेग न निदंथसं कुणइ ॥ ३६ ॥
 तं विहु सपट्टिकमंगं, सुपरिआयं सुउत्तरगुणं
 विण्णं उयसामेइ, याहिय्य सुसिखिलओ विज्जो ॥ ३७ ॥
 जइ विमं कुट्टगणं, मंसमूलवितारवा । विज्जाह
 इत्तेहि, तो तं ह्यइ निवियमं ॥ ३८ ॥ एवं अहुविहं क
 र गहंसममस्त्रिधं । आग्लोअंतो अ निदंतो, विण्णं
 णइ सुमायमो ॥ ३९ ॥ कयव, थोविहणुमतो, आलं
 निदिध गुह-मगामो । होइ अइरेगइहो, ओह
 भइइ भाव्यमो ॥ ४० ॥ आथममणपण्णा गाय
 जइवि पट्टमो होइ । दुक्खालमंसविरिजं, वाहो अ
 रंग कट्ठेण ॥ ४१ ॥ आग्लोअग्ल दह्मुदिहा, नयम
 सिदा दह्मुद्वज्जाले । अण्णुण उत्तरग्लो, त निदं
 च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तमम धम्ममम वेयवियपत्त

अनुष्टुप्प्रोम्नि अराहणाए विरओन्दि विराहणाए ।
 निविहेण पटिक्कनो, पंदामि जिणे चउब्बीसं ॥ ४३ ॥
 जायंनि चेइआइं, उहे अ अहे अ तिरियलोए अ ।
 सज्याइं साइं वदे, इह संनो तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ आबन्त
 केविसह, भरहेरययमहाविदेहे य । सज्येसि तेसिण-
 ओ, निविहेण तिदेहविरयाणं ॥ ४५ ॥ गिरसंचिपपाय-
 पणासणीए, भवसयसदस्समहणीए । चउब्बीसजिणविणि-
 गाय-कहाइ पोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरि-
 हंता, सिद्धा साह सुअं च धम्मो अ । सम्मदिही देवा,
 दिंतु समाहिं य योहिं च ॥ ४७ ॥ पटिसिद्धायं करणे,
 किंघायमकरणे पटिक्कमणं । असदहणे अ तथा,
 विवरीयपरुवणाए अ ॥ ४८ ॥ स्वामेमि सज्यजीवे,
 सज्ये जीवा स्वमंतु मे । मिती मे सज्यभूएसु, येरं मज्झा
 न पेयउ ॥ ४९ ॥ एयमहं आलोइअ, निदिअ गरहिअ
 दुगंदिअं रुम्मं । निविहेण पटिक्कनो, पंदामि जिणे चउ-
 ष्बीसं ॥ ५० ॥

इन के पीछे दो बार नीचे लिखा हुआ " सुमुरन्दता "

या पाठ फोलना चाहिये—

इच्छामि स्वमासमगो! वंदितं जायणिआए निमी-
 हिआए अणुजायाह मे मिउग्गहं । निमीहि । अहो कायं
 कायतेफासं स्वमयिओ भेखित्तमो अण्णकिटंताणं ए-



सुमेग मे राई यइकंता, जता मे जवणिजं च मेखा-
 मेमि खमासमगां राइयं यडकमं, आवस्तिपाए पडिक्क-
 मामि खमासमगां राइआए आमायणाए नितीसुअ-
 राए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए यणदुक्कडाए कय-
 दुक्कडाए कोट्टाए माणाए मायाए लोभाए सज्जसालियाए
 सज्जमिच्छावयाराए मज्जयम्माए कनगाए आसादणाए
 जो मे अइमारो कओ तस्स म्यमासमगां! पडिक्कनामि
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे अयमद में ही रहने हुए नीचे लिखे हुए पाठ को
 बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अञ्जुट्ठिमोमिहि
 अट्ठिमेतराइयं खामेउं, इच्छं, खामेमि राइयं। जं किंचि
 अउत्तिपं परपत्तिपं भत्ते पाणो विणए वेयावच्चे आलावे
 संलावे उच्चत्तगे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए
 जं किंचि मज्झ विगयवरिहीगं सुहुमे वा यापरं वा तुम्हे
 जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इस पाठ को बोलकर संदासा का प्रवर्जन कर गोशेह-भासन
 से बैठकर दोनों हाथों का पडिलेदण कर मुद्रपक्षी को बायें हाथसे
 मुख पर देकर और दाहिने हाथ को गुरु के सामने रखकर तथा नीचे
 को नमकर “जं किंचिअपत्तिपं” इत्यादि “अञ्जुट्ठिमोमिहि” वा
 सम्पूर्ण पाठ कहना चाहिये, फिर दोवार “सुगुखादया” देकर भूमि

का प्रनार्जन करने हुए पीछे पगमे अग्रद के बाहर जाना चाहिये,
तथा नीचे लिखे हुए पाठ को धोना चाहिये—

आपरियउवज्जाए, सीसे सादम्मिए कुलगणे थ ।
जे मे केइ कसापा, सव्ये तिचिहेण खामेमि ॥ १ ॥ सुव्यस्स
समणमंघस्स भगवओ अंजलि वरिष्ण सीसे । सुव्यं
खमायट्ठा, खमामि सुव्यस्स अहंपि ॥ २ ॥ सुव्यस्स
जीवरासिस्स, भायथो धम्मनिद्रिय निचनित्तो । सुव्यं
खमायट्ठा, खमामि सुव्यस्स अहंपि ॥ ३ ॥

इस के पीछे नीचे लिखा हुआ “करेमि भंते” का पाठ धोना
चाहिये—

करेमि भंते! सामादयं मायमं जोग पणकखामि जाय
नियमं पज्जुगामामि दृचिहं तिचिहेणं मणेणं वावाए काए-
शं न करेमि न वारयेमि तस्मिं भंते पडिक्खामि निंदामि
गरिहामि अण्णणं योमिरामि ॥ १ ॥

इस के पश्चात् नीचे लिखे हुए “इच्छामि ट. नि” इत्यादि पाठ
को धोना चाहिये—

इच्छामि ट. नि वडस्सुगं, जे मे राइओ अइपारो
कओ, काइओ वाइओ माणमिओ उस्सुत्तो उम्मगो
अकप्पो अवरणिओ दुडकाओ दृचिचिन्तिओ अण्णपा-
रो अग्निदिठअप्पो असाधगपाइगो माणे तह दंसणे
परित्तपरित्ते सुए सामाइए । तिप्पं दुत्तोणं, पडण्हं

कसंयाजं, पंचणहमगुच्यंयाणं, तिण्हं गुणञ्चयाणं, चउण्हं
सिक्खाययाणं, धारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं
जं धिराहियं तस्स मिच्छा मिदुक्खंडं ॥ १ ॥

इनके पीछे नीचे लिखे हुए “ तस्स उनगी” इत्यादि पाठ को
बोझना चाहिये—

तस्स उत्तराकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकर-
णेणं विसहोकरणेणं पायाणं कम्माणं निग्वायणद्वाए ठामि
काउस्सगं ॥ १ ॥

इस के पीछे यह बोझना चाहिये कि—

श्रीमहावीरस्वामि- छम्मासीतप- चिन्तन- निमित्तं
करेमि काउस्सगं ॥ १ ॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए “ मरर” इत्यादि पाठ को
बोझना चाहिये—

अत्तं अन्नमिणं नाममिणं खासिणं छीणं
जंमाइणं उट्टुणं वायनिमग्गेण भमलिए पित्तमुच्छाण
सुष्टुमेहि अंगमंचालेहि सुष्टुमेहि सेल्लमंचालेहि सुष्टुमेहि
दिट्ठिमंचालेहि गयमाइणं आगारेहि अमग्गो अवि-
रादिओ हृत्त मे काउस्सगो जाय अरिहनागो भम
धम्मं नमुवारेणं न करेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेण
मग्गेणं अप्पाणं वीसिरामि ॥ १ ॥

उक्त पाठ को बदल कर कठिण करना चाहिये तथा उन में धीमदावीर स्वामीके किये हुए छमासी तथा धिन्तन करना चाहिये, मधुरा चौबीस बदल या छ “लोगस्स” का कठिण करना चाहिये, तथा कठिण को बदल नीचे लिखे हुए “लोगस्स” इत्यादि पाठ को धीमता चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मत्तित्थपरे जिणे । अरिहं-
से कित्तास्सं, चउवीसं वि वेदली ॥ १ ॥ उअअमजिणं
च वेदे, संभवमभिगंदणे च सुमंडं च । पउमप्पहं सुपासे,
जिणं च वेदप्पहं वेदे ॥ २ ॥ सुविहिं च दुप्पदंनं,
मीअलसिंअस वासुपुज्जं च । विमलमणंनं च जिणं,
धम्मं संगिं च वेदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च महिं, वेदे
सुणिसुप्पवे ममिजिणं च । वेदामि रिद्धेनेमि, पासं तह
पद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवमणअभियुष्सा, विहपरदमत्ता
पहीणजरमणा । चउवीसं वि जिणपरा, नित्थपरा मे
पहीपंतु ॥ ५ ॥ विज्झिप वेदिप महिया, जे एलोगस्स
इत्तमा रिद्धा । आत्तापोरित्ताअं, कम्मरिप्पत्तमं
दिंतु ॥ ६ ॥ वेदेषु निम्मलपरा, आरवेसु अरिपेददा-
रुपरा । सागरदरमंभीसा, मि टा सिद्धि ममदिहं मुः ॥

उक्त पाठ को बदल कर कठिण को धीमता चाहिये तथा नीचे लिखे हुए “सुगुरन्दन” पाठ को धीमता चाहिये—

इच्छामि खमासमगो ! वंदिंते जावनिज
 हिआए अणुजाणह मे मिउगाहं । निर्भीकि
 कायसंकासं खमणिज्ज्ञां भे किल्लामां अ
 पहसुभेण मे राई घडयंता, जता भे जव
 खामेमि खमासमणां राइयं घडफमे, अ
 पडिफमामि खमासमणां राइआए आस
 तोसन्नपराए जं किंवि भिच्छाए मणइफडाए
 कापइफडाए कोहाए भाणाए मायाए लोभाए
 ए, सव्वभिच्छोययाराए सव्वधम्माइफमणाए
 ए जो मे अइआरोकओ तस्स खमासम
 मि निदामि गरिहामि अप्पाणं बोसिर

इस प्रकार दो बात गुह्यमन्दन देकर -- सकलती
 नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

सद्गत्या देवलोकेर विशदिभवने वपन्त
 ये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारका
 पाताले पद्मगेन्द्रे स्फुटमणिकिरणे अत
 श्रीमत्तीर्द्धराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्य
 पैताल्ये मेष्टुद्धेरुचरुगिरिवरे कुण्डले ह
 कखारे कूटमन्दीश्वरफनगगिरौ नैपथे नील
 शीले विचित्रे यमरुगिरिवरे चक्रशाले हिम
 धेकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि

माले विन्ध्यभृङ्गे विमलगिरिधरे त्र्यम्बके वा,
 धेनुते नारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्गशैले ।
 त्राष्ट्रां चोच्चयन्ते विमलगिरिधरे गुर्जरे राट्टणाद्रौ, श्रीम-
 ध्वराणां प्रनिदिष्यममहं तत्र चैव्यानि वन्दे ॥ ३ ॥
 पाटे मेदपाटे क्षिनिनटमुकृटे चित्रकृटे त्रिकृटे, लाटे
 च घाटे विटविघ्नतटे हेमकृटे विराटे । कर्णाटे हेम-
 विकटतरकटे चित्रकृटे च भोटे, श्रीमर्त्तार्थध्वराणां
 दिष्यममहं तत्र चैव्यानि वन्दे ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे
 मलयिनि निषये मेग्यले पिच्छले वा, नेपाले नाहले
 कुषलयनिलये मिहले धेरले वा । हाहले कोशले वा
 लितमलिले जङ्गले पादमाले, श्रीमर्त्तार्थध्वराणां
 दिष्यममहं तत्र चैव्यानि वन्दे ॥ ५ ॥ अङ्गे वङ्गे कलिङ्गे
 तजनपदे मन्त्रयागे निलङ्गे, गीठे गीठे मुरण्डे वरसर-
 ण्डे उट्टियाणे च पाण्डे । आर्द्धे माट्टे पुलिन्डे त्रिविह-
 रलये कान्यकृष्णे सुराष्ट्रे, श्रीमर्त्तार्थध्वराणां प्रनिदि-
 ममहं तत्र चैव्यानि वन्दे ॥ ६ ॥ चम्पायां चन्द्रमुग्यां
 पुरमधुरापत्तने चोच्चयिण्यां, कौजाम्यां कौशलायां
 कपुरधरे देवगिर्या च काश्याम् । मामिक्ये राजगोहे
 पुरनगरे भरिले ताम्रलिङ्ग्याम्, श्रीमर्त्तार्थध्वराणां
 दिष्यममहं तत्र चैव्यानि वन्दे ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽन्त-
 रे, गिरिशिखरतटे स्वर्गदीर्गारमारे, शैलाग्रं नागलोके

जलनिधिपुलिने मूलाणां निकुञ्जे । ग्रामेऽरण्ये वने ।
 स्थलजलविषमे दुर्गमप्ये त्रिसन्ध्यं, श्रीमतीर्थद्वारा
 प्रतिदिनसमहं सत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ८ ॥ श्रीमन्ने
 कुलाद्री रुचकनगरं शात्मला जम्बूद्वीपे, शोभा
 वैष्णवन्द्री रतिकरुचके कुण्डले मानुषाङ्गे । इक्ष्वा
 जिनाद्री च दधिमुखगिरौ ध्यन्तरं स्वर्गलोके, ज्योतिर्ल
 भवन्ति त्रिमुखनवलये यानि चैत्पालयानि ॥ ९ ॥
 श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रसीणाः, प्रोच्य
 स्थाणहेतुं कलिमलहरणं भक्तिभाजस्त्रिसन्ध्यम्
 तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं आपते मानवान
 कार्पाणां सिद्धिर्ध्वः प्रमुदितमनसां चित्तमानन्दकारि

श्रीशयमनाथ, श्रीअजितनाथ, श्रीसन्मवन
 श्रीअभिनन्दननाथ, श्रीसुमतिनाथ, श्रीपद्ममन
 श्रीसुपार्श्वनाथ, श्रीचन्द्रप्रभनाथ, श्रीसुविधिनाथ, (
 पुण्ड्रतनाथ), श्रीशीतलनाथ, श्रीश्रेयांसनाथ, श्रीव
 पूज्यनाथ, श्रीविमलनाथ, श्रीअनन्तनाथ, श्रीधर्म
 श्रीशान्तिनाथ श्रीकुन्धुनाथ, श्रीअरनाथ, श्री
 ह्मनाथ, श्रीमुनिसुव्रतनाथ, श्रीनमिनाथ, श्रीअ
 नेमिनाथ, श्रीपार्श्वनाथ, तथा श्रीवर्द्धमाननाथ ।

अमुकसंवत्सर अमुकमास अमुकपक्ष अमुक
 तथा अमुकवार सम्पन्धिनी मेरी यात्रा सफल

उक्त वाक्य को भक्तिपूर्वक बोलना चाहिये ।

इस के पीछे गुरुमुख से पञ्चखाण्ड का के “इच्छामो म
सहि” इस वाक्य को बोलना चाहिये ।

इस के पीछे “नवकारसी” से लेकर जो कोई पञ्चखाण्ड का
मा हो उसे बोलना चाहिये, पञ्चखाण्ड की विधि यह है कि—

नवकारसहितं मुद्रिसहितं पञ्चखाण्ड पठध्विहं
आहारं अमनं पाण्डुं ग्राह्यं साह्यं अमृतपणाभोगं
साहसागारेणं महत्तरागारेणं सख्यसमाहित्यनिजागा
धोस्तिरामि ॥ १ ॥

पीछे “नमो नमाममगायं, नमोर्जरिसदाचार्योपाध्यायमयं
धुम्प.” इस पाठ को बोलकर नीचे लिखे हुए “परसमपतिमितारि
अथवा “संसारदाश” इत्यादि दोनों पाठों में से किसी एक पाठ
प्राग्भ की तीन गायामों को बोलना चाहिये—

परसमपतिमितरणि, अथसागरधारितरण
णिम् । रागपरागसमोरं, यन्देदेवं महावीरम् ॥ १ ॥
निन्दसंसारविहारकरिदुरन्तभायारिगणा विक्रम
निरन्तरं केषलिसतमा गो, भयावहं मोहभरं ह
॥ २ ॥ सन्देहकरिकुनपागमरुदगद-सम्मोदपङ्कहर
मलवारिपूरम्, संसारसागरसमुत्तरणोरुभावं, धीरा
परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥

इस के बाद मणेत्युक्त कहना ।

दिन नमन कल्याण ॥ १ ॥

जं त्रिंशि नामनिष्ठं, ममो वागान्ते प्राणुमे लोण ।
जाहं जिगषिषाहं, नाहं मन्वाहं वंदामि ॥ १ ॥

नमोऽशुणं अरिहंनाणं भगवंनाणं ॥ १ ॥ आशगराणं
निभगराणं मयंसंनुद्वानं ॥ २ ॥ पुस्सित्तमाणं पुरिस-
साहाणं पुस्सिवरपुत्तं आणं पुस्सिवरमंघहत्थाणं ॥ ३ ॥
लोगुत्तमाणं लंभनाहाणं लंगहिआणं लंगपट्ठाणं,
लंगवजोअगराणं ॥ ४ ॥ अमगदवाणं मगसुदवाणं,
मगदवाणं मग्गदवाणं योहिदवाणं ॥ ५ ॥ भम्मदवाणं
भम्मंसिआणं भम्मनागवाणं भम्ममारहाणं भम्मवरणा-
उरंतयववृद्धाणं ॥ ६ ॥ अप्पट्ठितयवरनाणं मणभराणं
विअट्ठउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जायवाणं निदाणं नार-
याणं बुद्धाणं वोहवाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्व-
न्नं सव्वदरिसाणं सिधमयल्लभरुअमणं तमकखयमव्वा-
वाहमपुणराविल्लि मिट्ठिगइनामधेयं ठाणं मपक्षाणं नमो
जिणाणं जिअभवाणं ॥ ९ ॥ जे अ अइया मिद्धा जे
अ भव(संनि)ज्जागण काले । मंपई अ वइमाणा, सव्वे-
तिविहेण वंदामि ॥

जार्हनि चेहपाहं उहे अ जहे अ निरियलाण व ।
सव्वाहं ताहं वंदे इह संनो तत्थ संनाहं ॥ १ ॥

इच्छामि स्वमासनं नंदितं जायगिञ्जात् निमी-
हिष्याए मत्थण्य वेदामि ।

जायन्त येति साह भरद्देरव्यमहाविदेहे ॥ सव्यं-
मि तेसि पण्यो तिषिहेण तिदंष्टविरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्द्धन्मिद्धाचार्योपाध्यायस्य साधुभ्यः ।

॥ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

सिद्धाचल गिरि भेट्यां रे भग्य आग्य हमारं ॥
विमलाचल गिरि ० ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोद्यो-
कदेतां न आये वारा । राघणरूल समोमर्या म्यामी,
पूर्व नवाणुं वारा रे ॥ १ ० ॥ १ ॥ मूलनायक श्री आदि
जिनेश्वर, नीमुर प्रनिमा वारा । आष्ट दृष्टमं पृजो भाये,
ममक्ति मूल आगारा रे ॥ १ ० ॥ २ ॥ दूर देगभी हं
इहां आगो, भवण सुगं गुण नहारा । पतित उद्धारण
विहद तुमारं, एह मीरभ जग मागरे ॥ १ ० ॥ ३ ॥
भाव भक्तिमे प्रभु गुण गावे, अपना जन्म सुभारा ।
जात्रा करि भविजन शुभभावे, नरक निर्देव गनि वारा
रे ॥ १ ० ॥ ४ ॥ संयन अटार प्रपार्मः माम आपाटे,
वदि आठम भोमवारा । प्रभुके वरण परतापमे संयमे,
क्षमारतन प्रभु प्यारारे ॥ १ ० ॥ ५ ॥

जय बीरगाय जगगुरु, होउ ममं तुह न भावओ भग-
वं । भगनिप्येओ सभाणुत्तारिगा इह पलसिटी ॥ १ ॥

लोगविरुद्धचाओं, गुरुजगणूआपरत्यकरणं च। सुहृगुरु-
जोगो तव्ययणसेवणा आभवमस्रंडा ॥२॥

अरिहंत चेह्म्यागं करेमि काउस्सगं, वंदणवत्ति-
आण पूअणवत्तिआण सकारवत्तिआण सम्माणवत्ति-
आण पोहिलाभवत्तिआण निम्बसमावत्तिआण ॥१॥
सद्धाण मेहाण धिईण धारणाण अणुप्पेहाण वट्टमाणीण
ठामि काउस्सगं ॥ २ ॥

अन्नन्ध उस्समिण्णं नीसमिण्णं खामिण्णं छीण्णं
जंभाइण्णं उट्टण्णं वायनिसग्गेणं भमलिण् पित्तमुच्छा-
ण सुहृमेहि अंगमंचालेहि, सुहृमेहि खेलमंचालेहि, सु-
हृमेहि दिट्ठिमंचालेहि, एवमाइण्हि आगारेहि अभगो
अविराहिओ हृत्थ मे काउस्सगो । जाय अरिहंताणं
अगवनाणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव स्सगं दाणेणं मो-
णेणं डाणेणं अत्थाणं वंसिरामि ॥१॥

॥ १ ॥ नरकं च। काउस्सगं च। के। अमोद्धं निज्जावागोपापण
मोमाभुत्त, तंज्जा नीचं मुत्तं निज्जावत्त ॥ १ ॥ अग्नि गोवे

शत्रुजयमिहि नमिणं, प्रापमदेव पुंदरीक । शुभन
पनो महिमा, सुणि गुरु मुत्त निरवाक ॥ शुद्ध मन उ
पयागे, विविमु चैत्त पुंदरीक । करिणं जिन आगळ,
दार्ढ्य वचन अर्लीक ॥१॥

अथ सन्ध्यासामायिक-विधिः ।

पिछले प्रश्न धर्मशाला में जाकर बहा उसका प्रामात्रन कर कर खादि की पडिलेहना करनी चाहिए । यदि देर हो गई हो तो केवल इति प्रतिभेगना करलेनी चाहिए, इस के पीछे यदि गुरुजी शिष्या हो तो उन के सामने (यदि वे न हो तो स्थापनाचार्य के सामने) जा कर भूमि का प्रामात्रन कर आसन को बायें पास में गगनर गगाममग देना चाहिए । यदि स्थापनाचार्य के सामने सामायिक लेनी पड़े तो तीन बार नवका मन्त्र को करकर स्थापनाचार्य के प्रतिभेगन के संग्र बोझों का पिन्सन करते हुए स्थापनाचार्य की स्थापना करलेनी चाहिए, इस के पीछे गगाममग देकर नीचे लिखे हुए पाठको बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहप-
नी पहिलेहुं? इच्छं ।

इस के पीछे फिर गगाममग दे कर मुहपत्तों का पडिलेहन करे, फिर एक गगाममग को देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलें—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदि-
माई? इच्छं । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामा-
यिक टाई? इच्छं ।

इस के पीछे फिर एक गगाममग दे कर बसोवनत हो कर तीन बार नवका मन्त्र का मुखना कर के नीचे लिखे हुए पाठ को बोलें—

इच्छितं जन्म होइ मा तुह ओहायगु, ररुणं तरु निव
 कित्तिणेय जुमइ अयहीरणु ॥२६॥ एहं महारिय जन-
 देय इह नयणमहसउ, जं अणन्दिपणुणमाहण तुन
 मुणियजगअणिमिदुउ । इम महं पमिहसुपामनाइ
 धंमणयपुरद्विअ, इय मुणियरु मिउिअभगदेय विगा-
 यइ आणिदिअ ॥३०॥

इसके पीछे “जयमहायस” को वाचना चाहिये—

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय
 चित्तियसुहफलस, जय समन्धपरमन्ध जाणय जय जय
 गुरुगरिम गुरु। जय इहिस-मत्ताणताणय धंमणयद्विअ
 पास जिण, भयियह भूमभयन्थु अयअयं तांताणं
 गुण सुज्झ तिसंझ नमोत्थु ॥१॥

इसके पीछे नमोत्थु को वाचना चाहिये—

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंनाणं ॥ १ ॥ आइगराणं
 तित्थपराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-
 सीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंभहत्थीणं ॥ ३ ॥
 लोसुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईआणं,
 लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्सुदयाणं,
 मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं
 धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरण-

उरंतचपायदीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहपंवरनाणदंसणधराणं
 विअद्वउमाणं ॥ ७ ॥ जिण्णं जायपायं तिस्राणं तार-
 पायं पुट्ठाणं पोहपायं मुत्तायं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्व-
 म्भूणं सव्वदरिसीणं सिवमपलमरुअमयंतमरुखयमव्वा-
 पाहमपुणरावित्ति सिद्धिगहनामयेयंठाणं संपत्ताणं ममो-
 जिण्णं जिअमपाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईया सिद्धा, जे
 अ भवस्संतिऽणागए काले । संपइ अ बहमाया, सव्वे
 तिविहेण वंदामि ॥

इसके पीछे "सव्वलोए" को बोलना चाहिये—

सव्वलोए अरिहंतचेइआयं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे "वंदनवत्तिआए" बोलना चाहिये—

वंदनवत्तिआए पूअणवत्तिएसक्कारवत्तिआए स-
 म्माणवत्तिआए पोहित्ताभवत्तिआए निरुयसगावत्ति-
 आए सट्ठाए मेहाए धिईए धारयाए अणुप्पेहाए बड्ड-
 मांणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे "अमत्थ" को बोलना चाहिये—

अमत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं ह्रीएणं
 जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमसिए पित्तमुच्छा-
 प सुहमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहमेहिं रोलसंचालेहिं, सु-
 हमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अमग्गो
 अघिराहिम्मो ह्रस्व मे काउस्सग्गो जाय अरिहेत्ताणं

(७)

उत्तमा मित्रा । आम्नापोहिताभं, समादिवमुत्तमं
 दिनु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा, आइयेसु अरिपं वपा-
 मपरा । सागरपरमंभोरा, मित्रा मित्रि मम दिसंतु
 ॥ ७ ॥

म. ५. ३६. म. ५. ३७. सागरपरमंभोरा वरेमि काउस्साम्
 व. ५. ३६. ३७. म. ५. ३७. व. ५. ३६. ३७.

वेदमयतिआण पृथग्यतिआण सुधारयतिआण
 मम्मालयतिआण वोहितामयतिआण निम्मलपरा-
 तिआण सद्धान् मेदान् रिद्धिं भारणाण् अणुत्वेहाण्
 पट्टमाणीण् ठामि काउस्समं ॥ १ ॥

इ. ५. ३६. ३७. म. ५. ३७. व. ५. ३६. ३७.

अशक्तं उग्रमिणं नीगमिणं एगमिणं स्त्रीणं
 नंभाइणंउट्टुणं पापनिमग्गेणं भमहिणं पित्तमुद्धा-
 णं सुट्टुमेहि अंगमंचालेहि, सुट्टुमेहि रेजमंचालेहि
 सुट्टुमेहि दिट्ठिमंचालेहि, तथमाइणं आगारेहि अमग-
 अविगहिणो हृष्ट मे काउस्समं । जाय अरिहंसा
 भगवन्नाणं नमुपारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मो-
 भाणेणं अण्णाणं वोमिरामि ॥ १ ॥

इ. ५. ३६. ३७. म. ५. ३७. व. ५. ३६. ३७.

दुगुणी स्तुति को बोलें बी० शेर मनुज ओ गुन, क०
काउम्पग को पढ़ें—

भायमादिकृतिनवर अनन्तगुणी महागज । मं
रसमुद्रे नरणा नारण जहाज ॥ गुणमन्त्रातिग
इहपरलोक दिगान्द । कर जोड़ी मगनु अहंनि
सकल जिगंद ॥ २ ॥

इस के पीछे “ पुष्पाकदीपदे ” को देखना चाहिये—

पुष्पखरखरदीपदे, भायडमंहे अ जंयदीये अ
भरहेरययविदेदे, धम्माइगरे नममामि ॥ १ ॥ तम
मिरपटलविद्धं-सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्म । सी
घरस्स धंदे, पण्णाडियमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजरा
रणसोमपणासणस्स, कल्लाणपुक्खलविसालसुराव
स्स । को देवदाणयनरिंदगणधिजस्स, धम्मस्स सार
बलम्म करे पमार्य ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो जि
णमंण नंदी सया संजमे, देवनागसुवन्नकिन्नरगणा
म्भूज-भायधिण । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं ते
सुक्कमचासुरं, धम्मो वड्डुउ सासओ दिजयओ धम्मुत
वड्डुउ ॥ ४ ॥ सुअस्म भगवओ करेमि काउस्सगो

इस के पीछे नीचे लिखे हुए “ वंदनवतिभाए ” को
चाहिए—

गवि देवो, जं देवा पंजरी नममणि । नं देवदेवमणि,
 सिरसा धंदे मज्जवोरं ॥ २ ॥ उपोचि नमुज्जागं, जिगवा-
 यसहस्रं यद्वमागम, मंमागमागराग्रो, तागं नं व
 नारिं या ॥ ३ ॥ उज्जिग-मेल-मिदं, दिग्गा नागं नि-
 सीदिआ जम्स । नं घम्ममग्गद्वि, अग्गिद्वेमि नममणि
 ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ट दम दो, य वंदिया जिगवा चउ-
 ध्वीसं । परमट्टनिट्टिअट्टा, मिट्टा मिट्टि मम दिमंतु ॥ ५ ॥

इस के पीछे "वेआरगग्ग" को ज्ञानता चाड़िये--

वेआयचगराणं मंनिगराणं मम्महिट्टिसमाहिगराणं
 पारेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे "अक्खं ऊमसिण" को ज्ञानता चाड़िये,

अक्खत्थ ऊमसिणं नीमसिणं त्वासिणं ह्रीणं
 जंभाइणं उह्ठुणं वायनिसग्गेणं भमल्लिणं पित्तमु-
 च्छाणं । सुह्ठुमेहि अंगमंचालेहि सुह्ठुमेहि नेलमंचा-
 लेहि सुह्ठुमेहि दिठिमंचालेहि । एवमाइणहि आगारेणं
 अमग्गो अविराहिओ सुत्त मे काउस्सग्गो । जाय अ-
 रिहंताणं भगवंनाणं नमुक्कारेणं न पारेमि, नाव का-
 टाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरांसि ॥ १ ॥

एक नवका का काउस्सग्ग करे पीछे एक माइओ काउस्स-
 को पारकर "नमोऽर्हन्मिद्वाचायोपाश्रयमर्वमाधुभ्य" इस वा

को दत्त दा नमः निम्न दत्त श्री श्री शक्ति बदे श्री हेम मन्त्र
शक्ति ५० मन्त्र दत्त दत्त काष्ठमन्त्र को दत्त—

श्री तिन जामनदेवी मरल मनोरथ पूर, कर म-
हत्त माया मय महत्त को पूर । सुख पूरणा स्वामी
स्वामिगच्छत सुखादान . इन मय को वन्दे क्षेमसागर
शुभेष्वान ॥ ४ ॥

हम व दोह ७३ दत्त "नमोऽन्युक्त" शिवना वादिपे—

नमोऽन्युक्तं अरिहन्तागं भगवन्नाणं ॥ १ ॥ आङ्गराणं
निम्नपराणं मयमंनुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमागं, पुरिस-
माणाणं पुरिमयपुंरुद्धाणं, पुरिसवरमंभद्वीणं ॥ ३ ॥
लोगुत्तमागं लोगनाणाणं, लोगदिआणं, लोगवर्द्धाणं,
लोगपञ्चोअगराणं ॥ ४ ॥ अमयदयाणं, अरुदयाणं,
मयादयाणं मरणदयाणं वादिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं
धम्मदेविआणं धम्मनायगाणं धम्ममारहीणं धम्मवरचा-
उरंमयदयाणं ॥ ६ ॥ अण्णदिहयवरनाणदंमगधरा-
णं विपददयाणं ॥ ७ ॥ जिगाणं जावपाणं तिगाणं
तारगाणं मुद्धाणं वादिपाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
मयवदूणं मयवदग्निमाणं मियमगलमरुअमणंतमरुय-
मव्यापाहमपुनरावित्ति सिद्धिगदनामधेयं ठाणं संप-
त्ताणं नमो जिगाणं जिअमयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अह-

या सिद्धा, जे अ भवस्संतिऽणागए काले। संगं भव
माणा, सद्ये तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

इस के पीछे एक एक खमाममख दे कर “ श्रीभाषार्थ”
“श्रीउपाध्यायजी मित्र” “वर्तमान गुरुन्दाराज को वंदू” और “हरे
धुजी को वन्दू” कहकर उन्हें वन्दन करना चाहिये, इस के
गोडाली आसन से बैठ कर मस्तक को ननकर नीचे लिये
“सद्यस्सवि देवसिय” बोलना चाहिए—

सद्यस्सवि देवसिय दुच्चित्तिय दुब्भासिय दुब्बिदि
तस्स मिच्छामि दुक्कं ॥ १ ॥

इस के पीछे खड़े हो कर नीचे लिये हुए “ करेमि भंते
को बोलना चाहिये—

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि
जाए नियमं पञ्चुयासामि, दुब्बिहं तिविहेणं मणेरं
याए काएणं, न करेमि न कारवेमि तस्स भंते! पडि
मामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोत्तिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे “ इच्छामि ठामि ” को बोलना चाहिये—

इच्छामि ठामि काउस्सग्गे जो मे देवसिओ अ
आरो कओ काइओ वाइओ भाणसिओ उस्सुतो
म्मग्गे अकप्पो अकरणिओ दुक्कओ दुब्बिचित्ति
अणाघारो अणिच्छिअव्यो असावगपाउग्गे नाणे त
दंसणे चरित्ताचरित्ते सु? सामाइए । तिण्हं गुत्त

उत्तरेण कम्मायाणं पंचण्हमणुच्चयाणां तिगहं गुणव्ययाणं
उत्तरेण सिक्ख्यायणां पारसविहस्स सायणभम्मस्स जं
वेदियं जं विराहिजं नस्स मिच्छामि दुक्कटं ॥ १ ॥

इस के पीछे “हम्म उत्तरी को” बोलना चाहिये

हम्म उत्तरीकरणेण पापच्छिन्नकरणेण विसोही-
करणेण विमद्दीकरणेण पायाणं कम्माणं निग्घायणद्वाए
हामि काउस्समां ॥१॥

इस के पीछे “अमत्थ उमसिण्ण” की बोलना चाहिये—

अमत्थ उमसिण्णं नीससिण्णं खासिण्णं छी-
णं जंभाइणं उट्टुणं पापनिसग्गेणं भमलिए पि-
त्तमुच्छाए । सुहमेहि अंगमंघालेहि सुहमेहि ऐलसं-
घालेहि सुहमेहि दिट्ठिसंघालेहि । एवमाइण्हि आगा-
रेहि अमग्गे अविराहिजो हम्म मे काउस्समां । जाव
अरिहंतारं भगवन्तारं नमुप्पारेणं न पारेमि, ताव कार्य
हाणेणं मांणेणं भाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

इस के पीछे आठ नरकाय का काउस्समाय करना चाहिये ।
पीछे “ नमो अरिहंतारं ” कह कर काउस्समा को पाठ कर प्रकट
रीति में “ लोगस्स ” की बोलना चाहिये

लोगस्स उओअगरे, धम्मतिन्यगरे जिणे । अरिहं-
ते कित्तइस्सं, चउर्यासं पि वेचली ॥ १ ॥ उमममजिण्णं

च यंदे, संभवमभिर्गदणं च सुमहं च । पञ्चमपहं सुपातं,
 जिणं च चंदपहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुष्पदंतं,
 मीअलसिद्धं च वासुपुद्धं च । विमलमणंतं च जिणं,
 धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च महिं, वंदे
 मुणिसुव्यपं नमिजिणं च । वंदामि रिद्धिनेमिं, पासं तह
 वद्धमाणां च ॥ ४ ॥ एवमए अभियुआ, विहयरयमला
 पहीणजरमरणा । चउवासं पि जिणयरा, तित्थयरा मे
 पसीयंतु ॥ ५ ॥ किन्निय वंदिय महिया, जे ण लोगस्स
 उत्तमा मिद्धा । आरुगगपोहिलाभं, समाहियरमुत्तमं
 दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइचेसु अहियं पपा-
 मयरा । मागयगंभीरा, मिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इस क पीछे मंडागा का प्रवर्तन का वेद का नीचे काइद-
 क-का मुदगती का गदिवेदन करना च हिये, इस के पश्चात् नीचे
 मिले हुए पाठ में 'मुगुल वन्दना' करना चाहिये

इच्छामि ग्यमागमणां! वंदिते जायणिज्जा, निर्सा-
 दिआण अणुजागह मे मिउगहं । निर्माहि । अहांकायं
 वयमंकायं गमणिज्जां मे कियामां अण्णदिल्लमाणां
 वट्टसुभेग मे, दियमां वट्टदंतां, जन्मा मे जयणिज्जं च मे,
 ग्यामेमि ग्यमागमणां देशमियं वट्टकमे आयसिमाणां,
 पट्टिउमामि ग्यमागमणां देशमिआणं आमागणां नि
 र्नामअगमां जे किंनि मिच्छाणं मणहुफहाणं वयहुफहाणं

वापदुकटाण कोटाण माणाण मायाण लोभाण सव्य-
 कालिणाण, सव्यमिच्छोवणाराण मज्झपम्मादुक्कमणाण
 आसायणाण जो मे अइआरो कओ नस्म खमासमणो!
 पट्टिक्कामि निंदामि गिरिट्ठामि अप्पाणं योसिरामि ॥ १ ॥

दा पाठ दो बार बोलना । इस में दूसरी बार 'आयस्मिणा'—
 दा नरा बोलना चाहिये ।

इस के पीछे अवध में ११ गेहे ग पर भीसे लिखे हुए पाठ
 को बोलना चाहिये

इच्छाकाहेण संदिमह भगवन् ! देवसिओ ध्यालोडं ?
 इच्छं । आलोणमि ॥ १ ॥

इस के पीछे " जो मे देवसिओ " को बोलना चाहिये—

जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ
 माणसिओ उस्तुत्तो उम्मगो अकणो अकरणिओ दु-
 ज्जाओ दुट्ठिवचिनिओ अणापारो अनिच्छिपय्यो अ-
 सावगपाडगो नाणे नह दमणे चरेत्ताचरिन्ते सुण मा-
 माइण । निमाह गुभीण चउण्हं कमायाणं पण्हमणु-
 व्यणाणं निण्हं गुणव्यणाणं चउण्हं मिक्खायणाणं पार-
 सविट्ठस्म मायगधम्मस्म जं खंडियं जं विराट्ठियं नस्म
 मिच्छामि दुक्कं ॥ १ ॥

इसके पीछे नीचे लिखे हुए " आहुता पाठपद " इत्यादि
 पाठ को बोलना चाहिये—

अनुणा चार प्रहर दिन में मैंने जों गिराया होय
 मान लाख पृथ्वीकाय, मान लाख अप्काय, मान
 लाख नेउकाय, मान लाख वायुकाय, दश लाख ग्रन्थे-
 क घनस्पतिकाय, चौदह लाख माधारण घनस्पतिकाय,
 दोय लाख वेडन्द्रिय, दोय लाख नेडन्द्रिय, दोय लाख
 पौरिन्द्रिय, चार लाख देवना, चार लाख नास्की, चार लाख
 तिर्यञ्चवेन्द्रिय चौदह लाख मनुष्य, एवं चार गति
 के चौरसी लाख जावायोनि में मेरे जाय ने जे कोई
 जीव हण्यो होय हणाव्यो होय हणनां प्रत्ये भलो जा-
 वयो होय ते सच्चे हैं मने बचने काया घें करी तस्म
 मिच्छामि दुष्कण्ड ॥१॥

इस के पीछे नीचे लिखे पाठ को बोलना चाहिये -

प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन परि-
 ग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्या-
 ख्यान वैशुन्य रति अरति परपरिवाद मायामृषावाद
 मिथ्यात्वशल्प, ये अठारें पापस्थानक सेव्या होय, सेव-
 राज्या होय सेवनां ग्रन्थे भला जाण्यो होय ते सच्चे हैं
 मन बचन काया घें करी तस्म मिच्छामि दुष्कण्ड ॥ १ ॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये-

ज्ञान दर्शन चारित्र्य पाटी पोथी टबणो कबली नव-
 कारवाली देव गुरु धर्म की आशातना करी होय, पनरे

- - - इसके पीछे "इच्छामि पटिकमिडं जो मे देवमिमो" को बोलना चाहिये—

इच्छामि पटिकमिडं जो मे देवसिओ अइआरो
कंओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मगो
अकप्पो अकरणिज्जो दुक्काओ दुट्ठिचिनिओ अणा-
यारो अणिच्छियओ अमावगपाउमो नाणे नहं दंस-
णे चरित्ता चरित्ते सुणं मामाइणं तिण्हं गुत्तीणं च-
गहं कसापाणं पंचण्हमणुव्वपाणं तिण्हं गुणव्वपाणं व-
उण्हं सिक्खवावपाणं चारसविहस्स मावगघम्मस्स जं
खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्खं ॥ १ ॥

इसके पीछे नीचे लिखे हुए 'वट्टिनुमूत्र' पाठको बोलना चाहिये—

वदित्तु सच्चसिद्धे, धम्मापरिणं अ मच्चसाहं अ ।
इच्छामि पटिकमिडं, मावगघम्माइआरम्म ॥ १ ॥ जो
मे वपाइआरो, नाणे तहं दंसणे चरित्ते अ । सुहुमो
अ पापरो वा, तं निदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुक्खं
परिग्गहंमि, मावज्जे बहुविहे अ आरंभे । कारावणे अ
करणे, पटिकमे देवसिणं मच्चं ॥ ३ ॥ जं यद्धमिदिण्हि,
घउहिं कमाण्हि अप्पसन्न्येहि । रागेण च दोसेण च, तं
निदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, उणे
संकमणे अग्गाभागे । अभिओगे अ निओगे, पटि-
कमे देवसिणं मच्चं ॥ ५ ॥ संका कंयविगिच्छा, पसंम

आलोअंनो अ निंदंनो, गिणं हगड मुग्गवओ ॥ ४१ ॥
 कयपायोवि मणुग्गो, आलोअ निदिग्ग मुग्गवओ
 होड अइगेगलहूओ , ओडगिअमरुअ नारवओ ॥ ४२ ॥
 आयस्सण्ण णण्ण मायओ जड वि यट्ठुअ होड ।
 पखागमंनरुगिअं , काहो अणिग्गं कालेण ॥ ४३ ॥
 आलोअणा यहुयिहा, नय मंभगिआ पटिअग्गण
 । मूलगुण उत्तरगुणे , नं निंदे नं च गरिअमि ॥ ४४ ॥

इस के प्रधान ग्ये हो कर “ वदिणु ” मूल का न

लिखा हुआ अवशिष्ट पाठ बोलना चाहिये —

तरस्स धम्मस्स केवलपन्ननस्स । अञ्जुट्ठिअंभि आरा
 णण, विरअंभि विराहणाण । निविहेण पटिअंनो, वंद
 जिणे चउर्यासं ॥ ४३ ॥ जावेनि चेडअाडं , उट्ठे
 अहे अ निरियलाण अ । मज्जाइं नाइं वंदे, इह सं
 तत्थ संनाइं ॥ ४४ ॥ जावेन के वि साह, भाहरव
 महाविदेहे अ । मव्वेसि तेसि पणओ , निवि
 तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणामणीण
 भव-सय-सहस्समट्ठणीण । चउर्यासजिणविजिग्गण
 हाइं थोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलम
 ना , सिद्धा साह सुअं च धम्मो अ । सम्महिट्ठो दे
 दितु समहिं च थोहिं च ॥ ४७ ॥ पटिसिद्धाणं क
 विद्याणमकरणे पटिअमणं । अरुद्धणे अ तथा, वि

रीयपस्त्वणाए अ ॥४८॥ ग्यामेमिस्त्वजीवे, सव्ये जीवा
खमेतु मे । मित्ती मे सव्यमृणसु, वेरं मज्झ न वेणई
॥४९॥ एयमहे आलोइअ , निदिअ गरहिअ दुगे-
छिअं सम्मं । निचिहेण पटिक्कनो, पंदामि जिणे षड-
प्पीसं ॥ ५० ॥

एहो हो पाए " सुगुरयाइया " देनो चादिये और दूसरी
पाए याइया में ' आइसियाए ' पद नहीं रहना चादिये—

इच्छामि एवमासमणो ! वेदिउं जायणिआए नि-
सीदिआए अणुजाणइ मे मिउग्गहं । निसीहि । अहो-
काए कायमेतामे एवमणिआं मे किलामो अप्पकिण-
ताणं षट्ठुभेण मे, दिवमो यइयंगो, जत्ता मे जघणिअं
ण मे, एवमेमि एवमासमणो देवमियं षड्धमं आय-
सियाए, पटिक्कमामि एवमासमणाणं देवनिआए आ-
सायणाए निसीमन्नपराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्क-
हाए षड्दुक्कटाए कायदुक्कटाए कोहाए माणाए मायाए
लोभाए सव्यकालियाए, सव्यमिच्छोवपाराए सव्यध-
म्माइहमणाए आमायणाए जो मे जइआरो कजो मग्ग
एवमासमणो ! पटिक्कमामि निदामि गिरिहामि अण्णाणं
पोसिरामि ॥ १ ॥

अब अइयाइ में ही गइएइ का नीचे लिखे हुए पाठ को
बोलना चादिये—

इच्छाकारेण भंदिमह भगवान् ! अज्जुद्विजेन्द्रि-
अरिं नर देवमिअं गामेउं? इच्छं गामेमिदेवमिअं॥१॥

उक्त पाठ को संक्षेप कर गौडानां चामन मे वेद का वर्ण
हाथ मे सुदवली को मुग का गग का गगा शक्ति इत्ये को दुः
के सम्मुख गग का " अज्जुद्विजेन्द्रि " बोझा वादिये—

जं किंचि अवसिअं परपमिअं भसे पारो विण्ण-
वेआपेअे आजाये संलाये उघामणे ममामणे अंनरमा-
साए उवरिभामाए जं किंचि मज्झ विणयपरिहाणं
सुहुमं या यायं या नुद्वे जाणह अहं न जाणामि
तस्स मिच्छामि दुक्खं ॥ १ ॥

इस के पीछे दो बार 'सुगुरुभाषणा' देनी चाहिये—

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जायणिज्जाए निसी-
हिआए अणुजाह मे मिउमहं निसीहि अहोकारं काय-
संकांसं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसु-
भेण मे दिवसो वड्ढंमो। जत्ता मे जवणिज्जं य मे खा-
मेमि खमासमणो। देवसिअं वड्ढंमं। आवरिसिआए पडि-
क्कमामि खमासमणां देवसिआए आसायणाए निति-
सन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्खडाए वददुक्खडाए
कायदुक्खडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सब्ब-
कालिए सब्बमिच्छोवयाराए सब्बधम्माइक्कमणाए आ-
सायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो।

एट्टिमामि निन्दामि गरिहामि अप्पणं बोमि-
रामि ॥ १ ॥

इस के पीछे "आयन्निउडयम्मा" को बोलना चाहिये
आयन्निउडयम्मा, सीने माहम्मिण बुल्लगणे प्य ।
जे मे पेड कम्माया, सय्ये निविट्टेण ग्यामेमि ॥ १ ॥
सय्यम्म समगगंयम्म भगयप्पो अज्जलि करिअ सीने ।
सय्ये एवमावइत्ता, ग्यमामि सय्यम्म अहयंपि ॥ २ ॥
सय्यम्म जीयरात्तिम्म भायप्पो भम्मनिट्ठिअनिअवि-
त्ता । सय्ये ग्यमावइत्ता, ग्यमामि सय्यम्म अहयंपि ॥ ३ ॥

इस के पीछे "बोमि भेने" को बोलना चाहिये—

करेमि भेने! तामाहणं तायज्जे जोगं पचय्यामि,
जाय निपमं पञ्चुय्यामामि, दुयिट्ठं निविट्टेणं मल्लेणं पा-
याणं काण्णं, न करेमि न पारयेमि नत्त भेने! गरिह-
मामि निन्दामि गरिहामि अप्पणं बोमिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे "इट्टामि टामि" को बोलना चाहिये—

इट्टामि टामि बज्जसम्मं जे मे देवनिप्पो अह-
प्पारो कअो पाइप्पो पाइप्पो मागुत्तिभो उरत्तुत्तो उ-
म्ममो अक्कणो अजरणिप्पो दुडमप्पो दुडिच्चिनिजो
अग्गावारो अणिट्ठिअप्पो असावगपाउमो माणे न
देसणे गरिहापरिणे सुण तामाहण । निण्हे गुर्भाणे
वडण्हे बत्तागालो वडण्हे मणुप्पयाणे निण्हे गुणुप्पयाणे

चउण्हं सिक्खावयाणं थारमविहस्म सावगम्मस्म जे
म्वडियं जं विरादियं तस्स मिच्छामि दुक्कटं ॥ १ ॥

उक्त पाठ को बोल कर “ चारिग्गुदिनिमित्तं कोमि काउ-
स्सगं ” कहें इसके पीछे “ तस्स उरुगी ” बोलना चाहिये—

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोरी-
करणेणं विमह्दोकरणेणं पायाणं कम्माणं निग्घापण्णा-
ठामि काउस्सगं ॥ १ ॥

इस के पीछे “ अन्नत्थ ” बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिण्णं नीससिण्णं खासिण्णं द्वीणं
जंभाण्णं उड्डण्णं वायनिसग्गेणं भमत्तिणं पित्तमु-
च्छाए । सुहृमेहि अंगसंघालेहि सुहृमेहि खेलसंघा-
लेहि सुहृमेहि दिउमंघालेहि । एवमाहण्हि आगारेहि
अभग्गो अविरादिओ हल्ल मे काउस्सगो । जाव अ-
रिहंताणं भगवन्ताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं
ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं धोमिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे दो “ लोगस्स ” का अर्था आठ नक्का
का काउस्सग करना चाहिये । इस के पीछे दर्जनगुदि क निमित्त
प्रकटरीति से “ लोगस्स ” बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मत्तिथयरे जिणे । अरि-
हंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं
च पंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमण्हं सु-

पामं, जिणं च बंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं,
 मोअल मिअंस वासुपुअं च । विमलमणुत्तं च जिणं,
 घम्मं संनिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरे च महिं, वंदे
 सुणिसुल्लयं नमिजिणं च । वंदामि सिद्धनेमिं, पासं सह
 वट्टमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिधुआ, विहपरयमहा
 पत्तीण-जर-मग्गा । चउवीसेपि जिणवरा, तित्थवरा मे
 एसीयंतु ॥ ५ ॥ किणियवंदियमहिपा, जे ए लोगस्स
 उत्तमा मिद्धा । आअग्गपोहिल्लभं, सम्माहिपरमुत्तमं
 दिंतु ॥ ६ ॥ वंदेसु निम्मलपरा, आइधेसु अहिंयं पया-
 मवरा । मागरयगंभीरा, सिद्धा मिद्धि मम दिसंतु
 ॥ ७ ॥

सव्यलोए अरिहंसचेऽआणं करेमि काउस्सगं ॥ १ ॥

वंदगवसिआए पूजगवसिआए सशारवसिआए
 सम्माणवसिआए पोहिल्लभवसिआए निरुवसगव-
 तिआए सट्ठाए मेहाए बिईए धारग्गाए अणुप्पेहाए
 वट्टमाणोए टामि काउस्सगं ॥ १ ॥

अन्नन्ध उस्ससिण्णं बीससिण्णं स्वासिण्णं द्वीएणं
 जंभाइएणं उट्ठुएणं पायनिसग्गेणं भमल्लिए पित्तमु-
 च्छाए सुहृमेहिं अंगसेचालेहिं, सुहृमेहिं सेजसंचालेहिं,
 सुहृमेहिं दिट्ठिमंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो
 भाविरादिअं हज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं

भगवन्नाम नमुकारेणं न पारंमि ताव क्कणं ठाणेणं मोगे
काणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

यहाँ एक “लोगम्प ” का कथना वा नरका का क
स्साग करना चाहिये, मित्र ज्ञानशुद्धि के निमित्त “पुराणकवी”
बोलीना चाहिये—

पुक्खरखरदीयट्टे, धाण्डसंडे अ जंबूदीये अ
भरहेरखयविंदेहे, धम्माङ्गरे ममंसामि ॥ १ ॥ तमवि
मिरपडलविट्ठं-सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स । सीम
धरस्स वंदे, पप्फांडियमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजान
रणसोगपणासणस्स, कट्ठाणपुक्खलविसालसुहाव
स्स । को देवदाणवनरिंदगणविअस्स, धम्मस्स सारु
षलब्ध करे पमाय ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो जि
णमए नंदी सया संजमे, देवनागसुवन्नकिन्नरगणास
म्भज-भावधिण । लोगो जत्थ पइद्धिओ जगमिगं ते
सुक्कमचासुरं, धम्मो वड्डुअ सासओ दिजयओ धम्मतरं
वड्डुअ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सगं ॥

इन के पीछे “ वंदयवत्तिआए ” बोलीना चाहिये—

वंदणवत्तिआए पृअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए
सम्भाणवत्तिआए वोहिलाभवत्तिआए निरुवसगव
त्तिआए मद्दाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए
वड्डुमाणीए ठामि काउस्सगं ॥ १ ॥

इस के पीछे " अग्रथ " बोलना चाहिये—

अग्रथ ऊससिण्णं नीससिण्णं खासिण्णं टीएणं
अभाइएणं उड्डएणं वापनिसुग्गेणं भमसिण्णं पित्तमुच्छा-
णं सुहमेहि अंगसंचालेहि सुहमेहि गेटसंचालेहि,
सुहमेहि दिट्ठिसंचालेहि, एवमाइएहि आगारेहि अभगो
अविराहिओ सुअ मे काउस्सगो । जाय अरिहंताणं
भगवन्ताणं नमुपारेणं न पारेमि तापं कथं ठायोणं मोणेण
आणेणं अप्पाणे घोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे एक " लोमम्म " का अर्थवा पार नवकार का
काउस्सग काना चाहिये । काउस्सग पाकरके " मिट्ठाणं बुद्धाणं "
को बोलना चाहिये—

तिट्ठाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोम-
ममुखायागं, नमो सया मन्थमिट्ठाणं ॥ १ ॥ जो देवा-
णवि देवो, जं देवा पज्जती नममेति । ते देवदेवमहिं
मिरसा धं दे मदाधीरं ॥ २ ॥ इत्थोपि नमुपारो, जिणवर-
पसाहसं पद्धमागुत्ता, संसारसागराधो, तारेहं मरं च
नारिं या ॥ ३ ॥ उज्जिन-सेल-मिहरे, दिक्खता माणी नि-
सीहिआ जरस । नं भम्मणपट्ठहिं, अरिहनेमि नमस्तामि
॥ ४ ॥ यत्तारि अट्ठं दमं दो, य वंदिया जिणवरा पउ-
प्पोसं । परमंठुनिट्ठिअट्ठा, तिट्ठा तिट्ठि मम दिसेनु ॥ ५ ॥

सुयदेवयाए करेमि काउत्सगं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं एासिएणं द्दी
जंभाइएणं उड्डुएणं चायनिसग्गेणं भमलिए पित्त
ब्धाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचाले
सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अम
अधिराहिअो हुअ मे काउत्सगं । जाव अरिहंत
भगवेणानं नमुक्खारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मां
कायेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे एक नवकार का काउत्सग करना चाहिए
यदि गुरुजी न हों तो एक श्रावक यहा काउत्सग को पार कर
मोडईत्तिइ. चार्योपाध्यायसर्वस. पु. २. ॥ इस वाक्य को कई
नीचे लिखी हुई स्तुति को बोले—

सुयर्णशालिनी देवात् , द्वादशाङ्गी जिनोद्भव
श्रुतदेवी सदा महा-मशोपश्रुतरुम्पदम् ॥१॥

इस स्तुति को मुनने के बाद सब लोग काउत्सग पार,
के पीछे “ खित्तेदेवयाए करेमि काउत्सगं ” इस वाक्य को
कर पूर्व लिखे हुए “ अन्नत्थ ” को बोलना चाहिये , तदन
पूर्व के समान एक नवकार का काउत्सग पार कर नीचे लिखी
स्तुति को बोलना चाहिये—

धामा क्षेत्रगताः सन्ति, साधवः आधकादयः ।

जिनाशो साधयन्तस्ताः, रक्षन्तु दोषदेवताः ॥ १ ॥

इस के पीछे सहे हो गह कर एक नयकार को पहेंना चाहि
ये . तथा संडासा का धमार्जन करते हुए बैठ कर उहे पाँचशदक
की मुद्रपत्ती का पहिलेहन करना चाहिये , मुद्रपत्ती को तोडकर
बगानही रख कर दो बार बाँटना नीचे धमखे देना चाहिये—

इच्छामि स्वमासमणो! बद्धिं जायगिष्णां निसी-
हिष्णां अणुजायह मे मिडगहं। निमीदि। अहोकारं
कायसंकासं स्वमगिष्णो मे किलांमो अप्पंकिलंमाणं
बहुसुमेण भे, दिवसो वड्ढंतां, जत्ता भे जवणिं प्पू भे,
स्वामेमि स्वमासमणो देवमिपं वड्ढंमं आसस्सिणां
पट्टिफमामि स्वमासमणार्ण देवसिष्णां आसायणां ति-
त्तीसन्नयरां जं किंचि मिच्छां मण्डुक्कहां वध्दुक्कहां
वध्दुक्कहां कोहां माणां मायां सोमां सव्व-
कासिणां, सव्वमिच्छावणारां सव्वधम्माइकमणां
आसायणां जो मे अइआरो कअो तस्स स्वमामंमणो!
पट्टिफमामि निदामि निरिहामि अण्णार्णयोसिरांमि ॥१॥

(यदि पञ्चमण्य पहिले न किया हो तो यही पर लसे ले
लेना चाहिये) इस के पछान् “ इच्छामो अणुमदि ” इस को
बोल कर नीचे बैठ जाना चाहिये, यहाँ पर गुरुजी विद्वान
हो तो नीचे लिखी हुई “ नमोऽस्तु ” एक गाथा को
बोलें— नहीं हो तो आँकड़ नीचे

नमोऽर्हमिद्राचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

नमोऽस्तु वद्वेमानाय, स्पद्वेमानाय कर्मणा ।

तत्रपाचासमोक्षाय, परोक्षाय कुनीधिनाम् ॥ १ ॥

येषां विकचारविन्दराज्या ज्ञायःक्रमकमला

दधत्या । सदशैरति सद्गुणं प्रशस्यं, कथितं सन्तु

षाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कपायनापार्दितजन्तुनिर्दि

करोति यो जैनमुखाभ्युदोद्भूतः । स शुक्रमासोद्भू

ष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरं गिराम् ॥

तथा प्राविकाओं को “संमाग्दावा” की तीन गाथा

बोलना चाहिये—

संसारंदाधानलशहनीरं, सम्मोहबूलीहरणं स

रम् । मायारसादारणसारसारं, नमामि वीरं गिरि

रधीरम् ॥ १ ॥ भावावनामसुरदानयमानवेन, धून्नावि

लकंमलावलिमालितानि । संपूरिताभिनतलोकसमी

तानि, कर्म नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥

धागार्धं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवार्हिसा

रललहरीसङ्गमागाहदेहम् । चलावेले गुरुगममणी

कुलं दूरपारं, मारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु

॥ ३ ॥

इस के पीछे “नमोत्तुभ्यं” बोलना चाहिये एक प्र
नीचे लिखे हुए को बोले—

नमोऽस्तु ते अरिहंसाय भगवन्नाथ ॥ १ ॥ आह्वयार्थं
 नित्यपरायं सयंसंबुद्धाय ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाय, पुरिस-
 सीहाय पुरिसवपुंदरीभाय, पुरिसवरगंधदन्वी ॥ ३ ॥
 लोचनमाय लोचनाहाय, लोकादिभाय, लोमपईभाय,
 लोमपञ्चोदगराय ॥ ४ ॥ अभयदयाय, चक्रवर्तदयाय,
 मृगादयाय मरणादयाय मोहिदयाय ॥ ५ ॥ धम्मदयाय
 धम्मदेसिभाय धम्मनायगाय धम्ममारहीणं धम्मवरत्ना-
 वरंतचक्रदीपं ॥ ६ ॥ अण्डदिग्गवरनाणदेसनाधरा-
 यं विषट्ठउमाय ॥ ७ ॥ जिणाय जापपाय तिष्ठाय
 तारयाय बुद्धाय बोधयाय सुत्ताय सोअगाय ॥ ८ ॥
 सव्वधूय सव्वदरिमीय निवमणसमत्तमणत्तमवखण-
 मय्यावाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामपेयं ठायं संप-
 जाय नमो जिणाय जिअभयाय ॥ ९ ॥ जे अ अह-
 या सिद्धा, जे अ भयस्संनिष्ठागण वल्ले। संपट अ वद-
 माणा, सव्व निविहेण वंदामि ॥ १० ॥

इच्छाकारेण संदिग्ध भगवन ! वृद्ध रत्नं
 अणु ? ।

इस के पीछे आसन पर बैठ कर " नमोऽरिहंसाय भगवन्ना-
 थ सर्वसाधुभ्यः " इस को दो बार कर कमसे कम ११ गायत्रावाले
 स्तवन को करना चाहिये किन्तु यदि ग्याह गात्रा वाले स्तवन से

छोटा कोई स्तवन बोला जावे तो उस स्तवन को बोलने के पक्ष

“ वनकनक ” बोलना चाहिये—

ॐ वरकणायसंखविद्रुम-मरगयधनासङ्ग्रहं विराज्य
मोहं । सत्तरि सयं जिष्णानं, सव्यामरपूज्यं वंदे स्वामिनाम् ॥ १ ॥

अब स्तवन लिखा जाता है जिसे बोलना चाहिये—

श्री चिन्तामणिपार्श्वजिनस्तवनम् ।

भक्तिका श्री जिन बिंय जुहारो, आत्मपरम आधा
रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिस सारखी जाणो,
फरो शंका कोई । आगमवाणी ने अनुमारे, राख
प्रीति सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनविषय शर
न जाणे, ते कहिये किम जाणे । भूला तेह अज्ञा
भरिया, नहिं तिहीं तस्य पिछाने रे ॥ भ० श्री० ॥ २ ॥
अम्यह आपक श्रेणिक राजा, राखण प्रमुख अनेक
विषय परं जिन भगति करंता, पाप्मा धर्म विवेक
॥ भ० श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगनें जोतां, जो
निश्चय उपगार । परमारथ गुण प्रकटे पूरण, जो
आर्द्रकृमार रे ॥ भ० श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आप
जलधर, छे बहु जलधि मज्झार । ते देखी बहुत
स्यादिक, पाप्मा विरति प्रगाररे ॥ भ० श्री० ॥ ५ ॥ पाप

अंगे जिन प्रतिमा मां, प्रकट पणे अधिकार । मूरपाभ-
 तुरे जिनपर पूजा, रायपसेणी मज्झार रे ॥ भ० ॥ श्री०
 ॥ ६ ॥ दशमे अंगे अहिंसा खासी, जिन पूजा जिन-
 ताज । गहवा आगम अरथ मरोड़ी, करिये वेम घ-
 काज रे ॥ भ० श्री० ॥ ७ ॥ समबिल धारी मनी ह्रीं पदी,
 जिन पूजा मन रंगे । जो जो गहनों अरथ विचारी,
 उठे जाता अंगे रे ॥ भ० श्री० ॥ ८ ॥ विजय सुंदे जिम
 जिनपर पूजा, कीर्धी दित्त धिर रासी । दृश्य भाष
 विहूँ भेदें कीर्नी, जीवाभिगम छे खासी रे ॥ भ० श्री०
 ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, बगेई साझा मन कर
 जो । जिन प्रतिमा देखी निम मपलों, वेम घणों पित्त
 धरजो रे ॥ भ० श्री० ॥ १० ॥ विन्तामणि प्रभु पाव परा-
 यें, सरथा हो जो मपाई । श्री जिनलाम सुगुन उप-
 देशो, श्री जिनचन्द्र मपाई रे ॥ भ० श्री० ॥ ११ ॥

हम के धोते एक एक नाममात्र से आचार्य उपाध्याय और
 सर्व साधुओं को वन्दन का विरा भीषा लगासकन देवा नीचे लि-
 खे हुए पाठ को संजना चाहिये—

इष्टाकारेण केदिमह भगवन् । देवस्त्रियदायिष्ठ-
 तविदुष्टिनिमित्तं काटसम्भो बहै । इष्टे, देवस्त्रियदा-
 यिष्ठत दिदुष्टिनिमित्तं करेगि काटसम्भो ॥ १ ॥

इस के पीछे “ अन्नत्थ ” बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिणं नीससिणं खासिणं छी-
 णं जंभाइणं उड्डुणं वायनिसग्गेणं भमलिए पि-
 त्तमुच्छाण । सुहुमेहि अंगसंचालेहि सुहुमेहि खेत्त-
 चालेहि सुहुमेहि दिट्ठिसंचालेहि । गयमाइएहि आगा-
 रेहि अभग्गो अघिराहिओ हुअ मे काउस्सग्गो । जाव
 अरिहंमाणं भगवंनाणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव व-
 ठाणेगं मोयेणं माणेणं अप्पाणं बोसिरामि ॥१॥

इस के पीछे चार “ लोगस्स ” का या सोलह नरकारं
 काउस्सग्ग करना चाहिये, काउस्सग्ग पार करके प्रगट लोग
 बोलना चाहिये—

लोगस्स उअोअगरे, धम्मतित्थपरे जिणे । अरि-
 ते कित्तइस्सं, चउयीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजि
 च वंदे, संभयमभिणंदणं त्वसुमहं च । पउमप्पहं सुपा-
 जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदां
 मीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिण-
 धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च महिं, वं-
 सुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं त-
 वदमाणं च ॥ ४ ॥ एवं माणं अभियुआ, विट्ठपरयमत्त-
 पहीणजरंमणा । चउयीसं पि जिणवरा, तित्थंपरा ।

पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिपवंदिष महिषा, जे ए लोगस्स
उत्तमा सिद्धा । आरगगपोहिल्लमं, समाहिषारमुत्तमं
दितु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा, आइयेसु अहिषं पया-
मयरा । सागरघरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छाकारेण मेदिसह भगवन् ! खुदां पश्य इडा-
वगत्यं करेमि काउस्मगं ॥ १ ॥

इम के पीछे " अस्मग " बोलना चाहिये—

अस्मन्थ ऊससिण्णं नामसिण्णं खामिण्णं क्षीणं
जंभाङ्गणं उद्दुण्णं वायनिसग्गेयं अन्नलिण्णं पित्तमु-
च्छाण्णं । सुद्धमेहिं अंगमंणालेहिं रुद्धमेहिं गेलसंथा-
लेहिं सुद्धमेहिं दिट्ठिसंथालेहिं । एवमाङ्गहिं आगारेहिं
अभागे अपिराहिओ रुद्ध मे काउस्मगो । जाव अ-
रिहंताणं भगवन्ताणं नमुदारेणं न पारेणि । भाव कयं
ठायेणं मोणंणं ज्ञाणेणं अप्पागं थोमिरामि ॥ १ ॥ "

इम के पीछे पाठ " लोगस्स " ५. अथवा मोलह नह-
पाठ वा काउस्मग करना चाहिये । इम के बाद लोगस्स बोलना
चाहिये—

लोगस्स उच्चोअगरं, धम्मनिग्यवरं जिणे । अरि-
हंते वित्तइस्सं, चउर्ध्वामपि वेयसी ॥ १ ॥ उमममजिअं
य पंदे, संभवमभिणंदणं य सुमहं य । पडमप्पई सु-
पासं, जिणं य चंदप्पहं वेदे ॥ २ ॥ सग्गिहिं य पुक्कदंनं,

सोऽल सिद्धं वासुपुञ्जं च । विमलमण्डितं च जिह्मं
घर्मं संति च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंतुं अरं च महिं
मुणिसुख्यं नमिजिणं च । वंदामि रिट्नेमिं, पासं तं
वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मण अभियुजा, विहपरपम्या
पदीण-जर-मरणा । चडवीसंपि जिह्ववरा, तित्थपरा मे
पसीपंतु ॥ ५ ॥ कित्तिपयंदियमहिपा, जे ए लोणल्ल
उत्तमा सिद्धा । आगगरोहिलामं, समाहिषासुत्तं
दितु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा, आइधेसु अहिपं पण
सपरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दितुं
॥ ७ ॥

इस के पीछे एक त्रयामरण का दे कर भोगना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसद् भगवन् ! चैत्यवन्दन कर्तुं ।

श्री यंभणापार्श्वनाथजी का चैत्यवन्दन ।

श्रीसेशनदिनातटे पुन्यरे श्रीरामधमने ह्यगिरी,

श्रीरूपानपदेवगुरिविबुधाधीशः समारोपितः ।

संमिश्रः स्तुतिभिर्जलैः शिवकलैः सहस्रैः कणापल्लवैः,

पार्श्वः कल्पवृक्षः स मे प्रथपनां निर्यं मनो पाशितम् ॥ १ ॥

आयिष्यापिहरो देवो, जगत्पद्मो दिशोमणिः ।

पार्श्वनाथो जगन्नाथो, निर्यनाथो नृणां श्रिये ॥ २ ॥

इस के पश्चात् पूरे शिवे हुए जगत्पद्म १००० ॥ ३६ ॥

कोलना चाहिये, तदनन्तर पूव लिखे हुए “ अवति चेद्वर्षा ”
इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये, तदनन्तर दूर लिखे हुए “ जा-
वन केवि नः ” इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये, तत्पश्चात् “ म-
शेऽईतिडायायोपाज्जमयेमभुम्भ ” इस वाक्यको बोल कर पीछे
लिखे हुए “ उरमगेहम्मज्ज ” का वाक्यना चाहिये, इस के पीछे
दूर लिखे हुए “ अत्र जोगा ” इत्यादि पाठ का बोलना चाहिये,
इस के पश्चात् गजाममसु का देकर तथा एत्थर को मना कर नीचे
लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

मिरिधंभणुयद्विगपाससामिणो नेसतित्थसामीणं ।
नित्थसमुज्जइ कारणं, सुरासुराणं च सव्वेसि ॥ १ ॥
एस अहं मरणत्थं पाउत्समं करेमि मत्ताण ।
भत्ताण गुणानुद्वियस मंगस ममुत्ताड निमित्तं ॥ २ ॥
श्रीधंभणापार्थनाधर्मा आराधया निमित्तं करेमि
शउत्समं ॥ १ ॥

वेदणवत्तिआण पूअणवत्तिण मज्जारवत्तिआण
सम्माणवत्तिआण पोहिलाभरत्तिआण निगयसगाव-
त्तिआण सट्ठाण मेहाण धिरेण धारणाण अणुपेहाण
पट्टमाण्णाण टामि काउत्सम ॥ १ ॥

अतत्थ उज्जमिण्णं नेसमिण्णं म्हामिण्णं ह्माण्णं
लंभाइण्णं उट्टण्णं दापनिमग्गेणं भमलिण्णं पित्तसु-
प्पहाण्णं तुहमेहि अममंचालेहि, तुहमेहि देलमंचालेहि,

सुष्टुमेहि दिद्विसंचालेहि, एवमाहृणहि आगारं हि अमगो
 अविराहियो हृत्त्र मे काउस्मग्गो । जाव अरिहंमं
 भगवंताणे नमुष्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेनं
 कायेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे चर “ लोमस्ते ” का या सोलह नवकाह
 काउस्साग करना चाहिये, काउस्मग्ग पात्र करके प्रगट सोलह
 सोलना चाहिये—

लोमस्ते उज्जाअगरे, धम्मतिथ्यरे जिणे । अरिं
 ते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केयली ॥ १ ॥ उसभमजिणं
 च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुप्पमे
 जिणं च वंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुष्पदंतं
 मीअलसिअंसं वासुपुअं च । विमलमणंतं च जिणं
 धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च महिं, ॥
 सुणिसुब्बयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं ता
 वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिषुआ, विहपरयमला
 पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तिम्भपरा मे
 वसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिवंधियमहिआ, जे ए लोमस्ते
 उत्तमा सिद्धा । आग्गयोहिलाभं, समाहियमुत्तं
 दितु ॥ ६ ॥ वंदेसु निम्मलवरा, आइवंसु अहियं पणा
 मपरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु
 ॥ ७ ॥

उन के पीछे नीचे लिये हुए पाठ को बोलना चाहिये—

श्रीचारासीगच्छशृङ्गारहार जङ्गमयुगप्रधान भट्टा-
रक दादाजी श्रीजिनदत्तमूरिजी चारित्रचूडामणि जी
आराधवानिमित्तं करेमि काउस्सगो ॥ १ ॥

इस के पीछे " सौगन्ध " बोलना चाहिये—

अमन्थ जन्मनिष्णं नीलसिष्णं खासिएणं सी-
णं जंभाइणं उट्टुणं वायनिसर्गणं भमलिए पि-
त्तमुच्छाए । सुहुमेहि अंगसंचालेहि सुहुमेहि खेतसं-
चालेहि सुहुमेहि दिट्ठिसंचालेहि । एवमाइएहि आगा-
रेहि अभगो अविराहिओ हूअ मे काउस्सगो । जाय
परिहंताणं भगवेत्ताणं नमुजारेणं न पारेमि, ताव कायं
ठाणेणं मांयेणं भाणेणं जप्पाणं धोसिरामि ॥१॥

इस के पीछे एक " सौगन्ध " का प्रथम बार नवकार का
काउस्सग का प्रयोग चाहिये । काउस्सग पाठके पीछे प्रकट
" सौगन्ध " को बोलना चाहिये

लोगस्स उच्चोअगरं, धम्मनित्थपरं जिणे । अरि-
हंते विजित्तरमं, चउत्थमं वि वेयली ॥१॥ उमभमजिअं
च वेदे, मंभयमभिणंदणं च सुमहं च । पउमप्पहं सुपासे,
जिणं च वेदप्पहं वेदे ॥ २ ॥ सुविट्ठि च पुप्फइमं,
मोअलमिअंस वासुपुअं च । विमट्ठमणं च जिणे,
धम्मं संनि च वेदामि ॥ ३ ॥ कुंयुं अरं च मद्धि, वेदे

मुणिसुख्यं नमिजिणं च । वंदामि रिदनेमि, पामं
 वदमागं च ॥ ४ ॥ एवं मां अभियुष्मा, विद्वयस्य
 पद्मीगजरमणा । चउदीसं पि जिगुवरा, तित्थारा
 पसीपंतु ॥ ५ ॥ कित्तिप वंदिय महिया, जे ए ठंगल
 उत्तमा मिद्धा । आरुगयोद्विलाभं, समाद्वियसुत्त
 दिंतु ॥ ६ ॥ वंदेसु निम्मलयरा, आंचेसु अहियं प
 मयरा । मागव्यरगंभीरा, मिद्धा मिद्धि मम दिमं
 ॥ ७ ॥

श्रीदीर्घासांगच्छृङ्गारहार जङ्गमयुगप्रधान भद्र
 रकदादाजी श्रीजिनकुशलमृगिजी नारिश्चक्षामणिजी
 आराधया निमिन्नं करेमि काउस्समं ॥ १ ॥

इमं कां कास्समा कीं तिदि उर मून्य जाननं ।

इन्द्राकारेण भंदिसह भगवन ! चैन्यवन्दन करुजी ।

पउधसायणदिमद्दुद्दणु, दुत्तवमयणयागमुमु
 रणु । मरमणिपंगुवत्त गयगामिट, जयउ पास भुव
 नयगामिट ॥ १ ॥ जमु मणुकुंनिकद्वलमिणिद
 मोदइ कणमणिशिरणालिद्वड । नं नचजलदर महि
 द्वयलंछिट, मां जिगु पासु पयच्छड वंछिट ॥ २ ॥
 अहेन्तां भगवन् इन्द्रमहिमाः मिद्धाश्च मिद्धिभिनाः
 आचार्या जिनजामनाप्रतिरुगः पुज्या उपाध्यायराः ।
 श्रीमिद्धान्नागुवाटक्ष मुनियग रक्षत्रयागधराः ॥

भोगेणं सहस्रागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाह्वयति-
 यागारेणं विगई ओपचक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सह-
 सागारेणं त्थेशलेवेणं गिट्ठत्थसंस्तिष्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं
 मट्ठमस्सिखण्णं पारिट्ठावणिपागारेणं महत्तरागारेणं,
 देमायगासिपे भोगपरिभोगे पचक्खाइ अण्णत्थणा-
 भोगेणं सहस्रागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाह्वयति-
 पागारेणं धोसिरामि ॥ १ ॥

जो चौदह निम्नों का धाम्म न करता हो उसे नयकारसी
 आदि का प्रकाशना करना चाहिये, जो कि निम्नलिखित है—

देसायगासिकका पञ्चक्खाण ।

देमायगासिपे भोगं परिभोगं वा पचक्खाइ एक
 कारण एक धोग तीसरे भागे अण्णत्थणाभोगेणं सह-
 सागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाह्वयतिपागारेणं धो-
 सिरामि ।

उग्गए सुरे नमुक्कारसहियं पचक्खाइ, चउप्पिहंपि
 आहारं जसणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं
 सहसागारेणं धोमिरामि ॥ १ ॥

पोरसीसाडपोरसी का पञ्चक्खाण ।

पोरिसियं मुट्ठिसहियं पचक्खामि उग्गए सुरे चउप्पिहंपि
 आहारं जसणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं

भोगेणं सहस्रागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाहित्यति-
 पागारेणं विगर्ह्योपयत्वाद् अण्णत्थणाभोगेणं सह-
 सागारेणं त्रिशलेवेणं गित्थसंमिद्धेणं उवित्तत्तविदेगेणं
 पट्टपमवित्तत्तत्तं पारिहायणिपागारेणं महत्तरागारेणं,
 देसायगासिपं भोगपरिभोगं पयत्वाद् अण्णत्थणा-
 भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाहित्यति-
 पागारेणं वोमिरामि ॥ १ ॥

अं चौद निदर्शों का ध्याय न करता हो उसे नयकारसी
 आदि का प्रयत्न करने का हिये, जो कि निष्प्रसिद्ध है—

देसायगासिक का पञ्चस्वाण ।

देसायगासिपं भोगं परिभोगं वा पयत्वाद् एक
 कारण एक योग तीसरे भागे अण्णत्थणाभोगेणं सह-
 सागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाहित्यतिपागारेणं वो-
 मिरामि ।

उगए सुरे नमुकारसहित्यं पयत्वाद्, यउज्विहं वि
 आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं
 सहसागारेणं वोमिरामि ॥ १ ॥

पोरसीसाढपोरसी का पञ्चस्वाण ।

पोरसिपं मुट्ठिमहित्यं पयत्वादि उगए सुरे यउज्विहं वि
 आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं

सहस्रागारेणं पच्छपण्णकालेणं दिसामोहेणं साहु
 येणं सव्वसमाहिवत्तिपागारेणं विगईओ पच्चक्ख
 अन्नत्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थ
 सिद्धेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिणं, महत्तारा
 रेणं सव्वसमाहिवत्तिपागारेणं योसिरामि ॥ २ ॥

इसी प्रकार साठ पोरसी के प्रत्याख्यानको जानना चाहिये

पुरिमड्ड अवड्ड का पच्चक्खाण ।

सुरे उगए पुरिमड्डं अवड्डं या पच्चक्खाइ चउरि
 हंवि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थ
 भोगेणं सहस्रागारेणं पच्छपण्णकालेणं दिसामोहेणं सा
 पपणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिपागारेणं वि
 गईओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं ले
 वंवेणं गिहत्थसंसिद्धेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खि
 णं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिपागारेणं योसिरामि
 ॥ ३ ॥

एकासण विआसणा का पच्चक्खाण ।

पोरिमि साठगोरिमि या पच्चक्खाइ उगए ए
 चउरिहंवि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण
 त्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं पच्छपण्णकालेणं दिसामो
 हेणं साहुपपणेणं सव्वसमाहिवत्तिपागारेणं पच्छपण्ण

विधासर्गं वा पचयत्वाद् द्रुविहं तिविहं वि आहारं असर्गं
 स्वाहं साहं अणगत्याभोगेण सहसागारेण सागा-
 रिआगारेण आड्डणपसारेण गुरुअब्भुट्टाणेण पारि-
 ठादणियागारेण महत्तरागारेण सव्यसमादिवत्तिपागा-
 रेण विगईओ पचयत्वाद् अणगत्याभोगेण सहसागा-
 रेण लेवालेवेण गिहत्थमंसिहेण उद्विखत्तविवेगेण पदु-
 यमक्खिरणं, महत्तरागारेण सव्यसमादिवत्तिपागारेण
 पोत्तिरानि ॥ ४ ॥

एकलठाण का पचयत्वाण ।

पोरिसि साहपोरिमि वा पचयत्वाद् अणग लूरे
 पडव्विहं वि आहारं असर्गं वाहं स्वाहं साहं
 अणगत्याभोगेण सहसागारेण पच्छण्णकालेण
 दिसामोहेण साट्ठय्येण सव्यसमादिवत्तिपागारेण
 एकासर्गं एगट्ठाणं पचयत्वाद् द्रुविहं तिविहं पडव्विहं वि
 आहारं असर्गं स्वाहं साहं अणगत्याभोगेण सह-
 सागारेण सागारिआगारेण गुरुअब्भुट्टाणेण पारिठाव-
 णियागारेण महत्तरागारेण सव्यसमादिवत्तिपागारेण
 विगईओ पचयत्वाद् अणगत्याभोगेण सहसागारेण ले-
 वालेवेण गिहत्थमंसिहेण उद्विखत्तविवेगेण पदुयमक्खिर-
 णं, महत्तरागारेण सव्यसमादिवत्तिपागारेण पोत्तिरानि

सहस्रागारेणं पच्छण्णकालेणं दिसामोहेणं साहु
 येणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं विगईओ पचरसा
 अत्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं लेयलेवेणं गिरुत्थ
 सिट्ठेणं उक्खित्तविवेणेणं पडुच्चमक्खिणं, महत्तरा
 रेणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं वोसिरामि ॥ २ ॥

इसी प्रकार साठ पोरसी के प्रत्याख्यान को जानना चाहिये

पुरिमड्ड अवड्ड का पच्चक्खाण ।

सुरे उग्गाए पुरिमड्डं अवड्डं वा पचरसाइ वड्ढि
 हंवि आदां असणं पाणं साइमं साइमं अण्णत्थ
 भोगेणं सहस्रागारेणं पच्छण्णकालेणं दिसामोहेणं सा
 वपणेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं वि
 गईओ पचरसाइ अत्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं लेय
 लेवेणं गिरुत्थसंमिट्ठेणं उक्खित्तविवेणेणं पडुच्चमक्खि
 णं महत्तरागारेणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं वोसिरामि
 ॥ ३ ॥

पकासण विआसणा का पच्चक्खाण ।

वांरिमि साठ्वांरिमि वा पचरसाइ उग्गाए व
 वड्ढिहंवि आदां असणं पाणं साइमं साइमं अण्ण
 त्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं पच्छण्णकालेणं दिसामो
 हेणं गिरुत्थसंमिट्ठेणं उक्खित्तविवेणेणं पडुच्चमक्खि
 णं महत्तरागारेणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं वोसिरामि

विष्मासने वा पचयत्वाद् द्रुविहं त्रिविहं वि आहारं असर्गं
 खादमं सादमं अण्गत्थगाभोगेणं सहसागारेणं सागा-
 रिआगारेणं आउद्वणपसारेणं गुरुअन्मुद्रायेणं पारि-
 ठावक्षिपागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाहिवत्तिपागा-
 रेणं विगईअं पचयत्वाद् अण्गत्थगाभोगेणं सहसागा-
 रेणं लेबालेयेनं मिहत्थमंसिह्णेनं उरिरत्तविवेगेणं पदु-
 यमक्खिएणं, महत्तरागारेणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं
 पोसरामि ॥ ४ ॥

एकलठाण का पचयत्वाण ।

पोरिसि साटपोरिसि वा पचयत्वाद् उग्गय खुरे
 पउच्चिहं वि आहारं असर्गं पार्णं खादमं सादमं
 अण्गत्थगाभोगेणं सहसागारेणं पचउण्णफालेणं
 दिसामांटेणं साटुपण्णं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं
 पक्खसर्गं एगट्ठाणं पचयत्वाद् द्रुविहं त्रिविहं पउच्चिहं वि
 आहारं असर्गं खादमं सादमं अण्गत्थगाभोगेणं सह-
 सागारेणं सागारिआगारेणं गुरुअन्मुद्रायेणं पारिहाव-
 णिपागारेणं महत्तरागारेणं मय्दस्सनात्तिवत्तिपागारेणं
 विगईअं पचयत्वाद् अण्गत्थगाभोगेणं सहसागारेणं ले-
 बालेयेणं मिहत्थमंसिह्णेणं उरिरत्तविवेगेणं पदुयमक्खि-
 एणं, महत्तरागारेणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं पोसरामि
 ॥ ५ ॥

आंविल का पञ्चस्वाण ॥

पोरसि साठपोरसि वा पञ्चकखाइ उगए मरे
 चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण-
 णामोगेणं सहसागारेणं पछण्णकालेणं दिसमोहेणं
 साहुयपणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं आयंदिहं पञ्च-
 कखाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेयालेवेणं मिह-
 त्थसंसिद्धेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिट्ठावणियागारेणं
 महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एकासणं पञ्च-
 कखाइ तिबिहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण-
 णामोगेणं सहसागारेणं सामारिआगारेणं आउट्ठण-
 सारेणं शुद्धअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्त-
 रागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसरइ ॥६॥

नीवी का पञ्चस्वाण ॥

पोरसि साठपोरसि वा पञ्चकखाइ उगए मरे चउ-
 विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थ-
 णामोगेणं सहसागारेणं पछण्णकालेणं दिसमोहेणं सा-
 हुयपणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं निद्विगइयं पञ्च-
 कखामि अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेयालेवेणं मि-
 हत्थसंसिद्धेणं उक्खित्तविवेगेणं पटुच्च मक्खिणं पारि-
 ट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं

एकाम्भेयं पचकत्वाह निविहंवि आहार-असर्णं स्वाहम्
 साहम् अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगा-
 रेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअब्भुदाम्भेणं पच्छसकालेणं म-
 हत्तरागारेणं सज्यसमादिवसिषागारेणं वंसिरामि ।

चउट्टिविहाहार उपवास का पचकत्वाण ।

सुरे उग्गाए अज्जमत्तहं पचकत्वामि चउट्टिविहंवि आ-
 हारं असर्णं पाणं स्वाहम् साहम् अण्णत्थणाभोगेणं
 सहसागारेणं महत्तरागारेणं सज्यसमादिवसिषागारेणं
 वंसिरामि ॥ ८ ॥

निविहाहार उपवास का पचकत्वाण ।

सुरे उग्गाए अज्जमत्तहं पचकत्वामि निविहंवि आहारं
 असर्णं स्वाहम् साहम् अण्णत्थणाभोगेणं सहसा-
 गारेणं पाणाहारवंसरिमि साटवंसरिमि पुरिमहं अयहं
 वा पचकत्वाह अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं
 पच्छसकालेणं दिमामोद्रेणं माह्वयपणेणं सज्यसमादि-
 वसिषागारेणं वंसिरामि ॥ ९ ॥

दत्ति पचकत्वाण

वंसरिमि साटवंसरिमि पुरिमहं अयहं वा पचकत्वामि
 उग्गाए सुरे चउट्टिविहंवि आहारं असर्णं पाणं स्वाहम्
 साहम् अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छसकालेणं

दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्यसमाहिवत्तियागारेणं
 एगासणं एगट्ठाणं दत्तिपं पच्चक्खामि तिविहं चउव्वि-
 हंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थ-
 णाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं गुठमब्बुद्धा-
 णेणं महत्तरागारेणं विगईओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणा-
 भोगेणं सहसागारेणं लेवात्तेव्वेणं गिहत्थसंसिद्धेणं उ-
 कित्तविवेगेणं पटुच्चमत्तिल्लणं महत्तरागारेणं सव्य-
 समाहिवत्तियागारेणं वोसरामि ॥१०॥

रात्री के पच्चक्खाण ।

चउव्विहाहार का पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं
 पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं
 महत्तरागारेणं सव्यसमाहिवत्तियागारेणं वोसरामि ।१।

दुविहाहार का पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खामि दुविहंपि आहारं असणं
 खाइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं
 सव्यसमाहिवत्तियागारेणं वोसरामि ॥ २ ॥

पाणहार का पच्चक्खाण ।

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खामि अन्नत्थणाभोगे-

(११९)

ॐ महासागारेणं महत्तरागारेणं सच्चसमाहिषतिपाग-
रेणं दोसरामि ॥ ३ ॥

॥ ग्यारहवां पाठ ॥

। स्तवनसंग्रहः ।

। अथ श्री सहस्रगुणाष्टक ।

भजामि पूजये नमामि नित्यं,

दक्ष्यामि भक्त्या प्रणतान्तरात्मा ।

पद्मभिषाने रित सद्गुणीयं,

तद्वत् स्वरूपं शुभभावभाष्यम् ॥ १ ॥

विता कुलीनस्य मनःसुखाख्यः,

सुशीलधर्मा जननी हि जेती ।

आद्रीदपर्वदयः सुरलालसञ्जो,

ग्रामः प्रनिद्धः सरसेति नाम्ना ॥ २ ॥

प्राग्रप्रचारी जितधर्मरागी,

सम्यक्त्वपारी विरतिप्रभावी ।

संन्यज्य संसारमरारमृद्धी,

रसावराट्यस्य गुरोस्य पार्श्वोत् ॥ ३ ॥

चारित्र्यमादाय रुदा विहारी,

विनाजतिचारं यतिधर्मभारी ।

श्रीमान् जिताक्षो गुणभूतपोतं,

संसारपाराय परं धधार ॥ ४ ॥

सुबुद्धिसङ्गी कुमतिप्रणाशी,
 खलप्रबोधी शुभमार्गदर्शी ।
 सार्थानि सूत्राणि पपाठ धीरः,
 गजेन्द्रतुल्यो वचनेषु धीरः ॥ ५ ॥
 रराज नित्यं करुणैकपात्रं,
 जायोपकारी सुखसागराख्यः ।
 सम्पार्थवक्ता सुजनाभिनन्द्यः,
 साधुप्रभायोज्झितमोहमायः ॥ ६ ॥
 घन्तारिपून् पाण्यपरिग्रहादीन्,
 त्यागी निरागी भविशर्मकारी ।
 जगत्प्रसिद्धो बहुमानधाम,
 एभिर्गुणैः सम्पद्यमाजगाम ॥ ७ ॥
 प्रेलापयतिभ्यो हृदिनामुपेय,
 आनन्ददार्थी शुभमायभक्तिम् ।
 कुर्यन्ति लोका नवनवसिद्धिं,
 ते बहूनां ये ह्रममःशुश्रुन्ति ॥ ८ ॥

जितरिणं नृपम्—

गृह्णन्ती केशवाम् मतिशुभगुणाचारतरणि,
 गणार्थीज ! त्यामित ! गुणवद्वदधे भवतले ।
 कथं मोक्षस्या मे तत्र शुभगुणा मङ्गलकराः,

गुरोः पूर्णान्वेषे चरणयुगले क्षेमनमनम् ॥६॥

श्री कुशलसूर्यष्टकम् ।

क्षिप्ररिणो—सुखं सर्वां सम्यक्कसति पदयोरेव्य वदने,
चिनिद्रा पाणीशो हृदयकमले संविद्विषम् ।

विरागः सर्वाङ्गेऽपि च भगवद्भक्तिरनिर्घा,
समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥१॥

निद्रा स्थापार्थानं क्षानुदिनमधीनो नमस्विना,
परं पाणीलदम्पो-निलयमपि तद्दाननिपुणो ।

सदा र्घो पत्तंते जयत इव पाथोजयुगलं,
समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥२॥

क्षिप्रर्णो र्णो मेधां सरस्विद्विषयोर्णो मृदुलयोः,
जपादुष्माभास्तो विमलपजिमादोषमहस्तौ ।

लसद्देव्यालक्ष्मप्रकटितपरा श्रीमदनयोः,
समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥३॥

सुरेभ्यः स्वर्गवेभ्यः कतिपयदिनैर्यः कलमधो,
कदापिदत्ते द्राक् शिष्यमपि दरिद्राय परमात्मा ।

सुरर्तुं स्वयस्या र्घो पुधजनसुखेर्णो भुविगभी,
समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥४॥

सुररस्योच्यन्ते परमगुरुधर्मोपदिशतः,

सदा कामं पीतामृतरसपरांशैरपि गिरः ।
 श्रुता यस्य श्रेयः श्रियमपि दिशन्ति स्थिरधि-
 समृद्धयर्थं यन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥
 निधौ सर्वश्रीणामनधिकरणां सर्वविपदां,
 मृदूस्निग्धौ शाणायुपचितनखौ गूढघुटिकौ
 समानी मोक्षद्वारादपदशाखाविलसिनीं,
 समृद्धयर्थं यन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ।
 ययोरर्चा सते धनसुखधरा धामरमणी,
 शरीरारोग्यं विनयनपविद्यानिपुणताम्
 गुणानोदायांश्चानपि तनयलक्ष्म्यौ तनुभृतां,
 समृद्धयर्थं यन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥
 भयंकारागारामयसमरपारिन्द्रफणभृन्-
 महापाराधारविरदवनैश्वानरभयम् ।
 म हासिन्त्याशुप्रमद्वरलज्जं परस्मरणात्,
 समृद्धयर्थं यन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥
 । दार्ढ्यलक्षिकीकृतम् ।

शतं श्रीजिनरघुरिरयिनं दिव्याष्टकं सत्पुत्रैः
 गुणैः मन्त्रमनं मनोऽङ्गलदे पापीयविष्यमन्-
 मत्तया यः पठति प्रमानममये सर्वत्र ताम्
 यस्या भूतनां भवन्ति गगनं लक्ष्मीधिरादायिनी ॥

श्रीगीतमदेवस्तवनम् ।

श्रीरन्ध्रमूर्ति वसुभूतिपुत्रं, पृथ्वीमयं गीतमगोत्र-
 रघम् । स्तुयन्ति देवाः सुरमानवेन्द्राः, स गीतमो वच्छ-
 तु वाञ्छितं मे ॥ १ ॥ श्रीवर्द्धमानात् त्रिपदीमयाप्य,
 मुहूर्तमात्रेण कृतानि येन । अद्भुतानि पूर्वाणि यत्तुर्द-
 द्धावि, स गीतमो वच्छतु वाञ्छितं मे ॥ २ ॥ श्रीवीर-
 मायेन पुरा प्रगीतं, मयं महाऽऽनन्दसुखाय परम् । एषा-
 पन्त्यमीश्वरिपराः समग्राः, स गीतमो वच्छतु वाञ्छितं
 मे ॥ ३ ॥ परमाभिधानं मुनयोऽपि मयं, गृह्णन्ति भिक्षाप्रम-
 णस्य काले । मिष्टाक्षयाभ्यन्तरपूर्णशमाः, स गीतमो व-
 च्छतु वाञ्छितं मे ॥ ४ ॥ अष्टापदाङ्गी गगने त्वद्गतया,
 पर्याजिनानां पदबन्धनाय । निशम्य तीर्थोत्तिषाथ सुरे-
 भ्यः, स गीतमो वच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ५ ॥ त्रिपञ्चसं-
 ख्याशततापसानां, तपःकृद्भानामपुनर्भवाय । अक्षी-
 णलब्ध्या परमाद्भुता, स गीतमो वच्छतु वाञ्छितं मे
 ॥ ६ ॥ सदक्षिण्यं भोजनमेव देवं, स्वाधर्मिकं रुद्रसप-
 र्शयेति । कैवल्यपात्रं प्रददी मुनीनां, स गीतमो वच्छतु
 वाञ्छितं मे ॥ ७ ॥ शिवंगमे भर्तारि वीरनाये, युगप्र-
 धानत्यमिर्हृद मत्वा । पदाभिषेको विद्ये सुरेन्द्रः, स
 गीतमो वच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ८ ॥ अलोपयदीजं शुभम्हा -

मपीजं, परमात्मपीजं परमेष्ठिपीजम् । गङ्गाममं
सुरेन्द्रैः, न गीतमो गच्छतु वाञ्छितं मे ॥१॥
तमस्थाष्टरुमादरेण, प्रपञ्चकाले मुनिपुङ्गव यं
ते घुरिपदं सदैवाऽऽनन्दं लभन्ते मुतरां क्रमे

श्रीगुरुगुणस्तवन ।

श्रीजिनदत्त के चरणों में आया चरणोंमें आया
स नमाया ॥८॥ वाछग मंत्री विना कहाया
चपरे आया ॥ श्री ॥१॥ हृम्पड़ बंज में आपस
कल जीव हरपाया ॥ श्री० ॥२॥ मरुड बीरा
झार हारा युगप्रधान पद छाया ॥ श्री० ॥३॥
में परचा पाया सकल संघ सुखदाया ॥ श्री० ॥
शरण ग्रही आजा उमाया तारो मुझ को जने
॥ श्री० ॥४॥ हर्ष घरी दिल काय मुक्ताया
घर्ज मैं लाया ॥ श्री० ॥५॥ ध्यायो ध्यायो
हर्षाया पायो वाञ्छित माया ॥ श्री० ॥६॥ उ
दर्शन पाया आनन्द हर्ष मधाया ॥ श्री० ॥७॥
वीसे वर्ष पायाला वैत्र चौध सुदि आया ॥ श्री० ॥८॥
कृगभिलाषी सद्गुण दाया सुखसागर मन
श्री० ॥९॥ पूर्ण गुरु के चरण पसाया क्षेम
लाया ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥

१ जन्ममहोत्सवस्तवनम् ।

आनन्द लाया अद्भुत न माया रूप दयाया रे (देक)
 धीर प्रभु का जन्म हुआ जय इन्द्र से आदेश वादा रे ।
 हरिणगमेषी देव ने जाकर घनवन घंटा बजाया रे
 ॥ आ० ॥ १ ॥ मय देवों ने जान लिया मर्ता मेरु शि-
 खर पर आया रे । पञ्च रूप धरि धीर प्रभु को इन्द्र
 विनय से लाया रे ॥ आ० ॥ २ ॥ जल से अपरिम
 कलश को देखे मन्देह दिल में आया रे । भीर प्रयाद
 पह जायेंगे लघु हँ इन की पाया रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ अ-
 धिज्ञान से जान लिया प्रभु अनन्त पत्नी माता राया
 रे । वामाङ्गुष्ठे मेरु दयाया धर हर का कंसाया रे ॥ आ०
 ॥ ४ ॥ अवधि लगा कर देव दिया बल प्रभुओं को नह-
 बाया रे । अपराध क्षमाये काय भुक्ताये नमि नमि लागे
 पाया रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ गाया गाया मङ्गल गाया प्रभु
 निरुपी हरपाया रे । विधिगुं भक्ति कर के इन्द्र जननी
 पासे लाया रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ वैलोक्यनाथ हरि सुख-
 कारी पूरण प्रेम बदाया रे । सकल रूप मिलि जय जय
 पोलो होमानन्द को पाया रे ॥ आ० ॥ ७ ॥

१ श्रीपार्श्वप्रभुस्तवन ।

श्रीद्वयवास प्यारो हँ सेवन



छपार है लीद्रव० (देक) चीतीस अतिशय शोभता है
 प्रभु चे० पांतीस वाणी गुणखान है ॥ लीद्रव० ॥ १ ॥
 कोस पांच जैसलमेरोंही है प्रभु चे० लीद्रवनगर मज्ञा
 है ॥ लीद्रव० ॥ २ ॥ देवविमान जिसो बन्यो है प्रभु चे०
 मन्दिर अति सुखकार है ॥ लीद्रव० ॥ ३ ॥ अनल
 गुणे करी दीपता है प्रभु चे० सहस्र फणा श्रीपाम है
 ॥ लीद्रव० ॥ ४ ॥ महिमा सुनि के आदिपो है प्रभु चे०
 संघ सकल यह ठाठ है ॥ लीद्रव० ॥ ५ ॥ भय नाटक
 करता थका है प्रभु चे० आयो श्रीदरवार है ॥ लीद्रव०
 ॥ ६ ॥ दीन की चिनर्ता धारजो है प्रभु चे० भवसागर
 थी तार है ॥ लीद्रव० ॥ ७ ॥ संघ में मंगल कीजिये है
 प्रभु चे० विधि यन्दन करूं नाथ है ॥ लीद्रव० ॥ ८ ॥
 पीर धीधीम बालीम माय है प्रभु चे० मार्गशर सुदि
 सुधार है ॥ लीद्रव० ॥ ९ ॥ पञ्चमी दिवसे भेंटिया हो है
 प्रभु चे० आनन्द अंगन माया है ॥ लीद्रव० ॥ १० ॥
 क्षेमसागर प्रभु प्रेमसुं है प्रभु चे० मांगे अबिचल राज
 है ॥ लीद्रव० ॥ ११ ॥

श्री नेमिनाथस्वामि-स्तवन ।

नेमी जिगंद स्यामिन् चरणों में अथ तो लेलो ॥ देक ॥
 कृपानिधे कर मेलो अर्जा दया कर लेलो ।

संसार पार मेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ १ ॥

रास्ना बही बना दो सुखो सदा बना दो ।

आपो विरुद्ध सुन लो चरणों में अथ तो लेलो ॥ २ ॥

गिरनार तार्थ आया मन है सदा सुहाया ।

आनन्द हर्ष भरेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ३ ॥

मुख चन्द्र को मैं देखा निर्मल शान्त पेखा ।

माताग्र ध्यान स्थिरेलां चरणों में अथ तो लेलो ॥ ४ ॥

ऐसी हृदय में रेखा कमौ की होगी रेखा ।

भय पार हूँगा घेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ५ ॥

मुक्ति से कर के मेलो राजुल को मेली पेला ।

पशु पर दया करेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ६ ॥

अथ तो मुझे भी तारो बैयल के अंश डारो ।

कुछ ध्यान इधर भी देलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ७ ॥

अन्नः सम्यक् सुधारो यह विन्ती स्वीकारो ।

दुःखी सदा बनेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ८ ॥

अन्तिम प्रार्थना करता आशातना से दरता ।

दयालु दीन चेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ९ ॥

संपत् रुखीमें चौत्तर माघ हृषला है सुखोत्तर ।

एकम को आपो पेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ १० ॥

गुरुवर्य पूर्यमागर तच्छिष्य हेमसागर ।

शरण्य शरण्य में लेलां चरणों में अथ तो लेलो ॥ ११ ॥

स्तोतुः शान्तिनिमित्तं, मंत्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥ १ ॥
 श्रुमिति निश्चिनवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ।
 शान्तिजिनाय जपवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥
 सकलातिशेषकमहासंशतिसमन्विताय शस्याय ।
 धौलोदपपूजिनाय च, नमो नमः शान्तिदेयाय ॥ ३ ॥
 सर्वाभरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिनाय निजिनाय । सु-
 नजनपालनोद्यन-तमाय सननं नमस्तरमै ॥ ४ ॥
 सर्वदुरितौघनाशनकराय सर्वाशिवप्रशमनाय । दुष्ट-
 ग्रहभूतपिशाचजाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति
 नाममंत्र-प्रधानचाक्रयोपयोगकृततोषा । विजया कुर्वते
 जनहितमिति च नुता नमस्त तं शान्तिम् ॥ ६ ॥ भवतु
 नमस्ते भगवति, विजये सुजये परापरैरजिते । अपरा-
 जिते जगत्यां, जयनीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥ सर्व-
 स्थापि च संघस्य, भद्रकल्याणमंगलं प्रददे । साधूनां
 च सदाशिव-सुनुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां
 कृतसिद्धे, निर्धृतिनिर्वाणजननि । सत्त्वानाम् । अभय-
 प्रदाननिरते, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्ता-
 नां जन्तूनां, श्रुभावहे नित्यमुद्यते देवि ! । सम्याह-
 णीनां धृति-रनिमित्तबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशास-
 ननिरतानां, शान्तिननानां च जगति जननानाम् । श्री-
 संपत्कीर्त्तिपशो-वर्द्धिनि ! जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥

सलिलानलविषविषधर- द्रष्टप्रहराजसो गरशभयतः ।
 राक्षसरिपुगणमारो , चारेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥
 मधरदा रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदे-
 ते । तुष्टिं कुरु कुरु दुष्टिं कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरुत्व-
 न् ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशांति-तुष्टिपुष्टि-
 त्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् । ओमिति नमो नमो
 ॐ ह्रीं हूं हः क्षः ह्रीं पुद् पुद् स्याद् ॥ १४ ॥ एवं
 पद्माभाक्षरपुररसरं संस्तुता जया देवी । कुम्भे शांतिं
 नमतां नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसुरि-
 दशित-मंत्रपदविद्भिः स्तवः शांतेः । सलिलादिम-
 पविनाशां, शांत्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यक्ष-
 नं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोग्यम् । स
 हि शांतिपदं यायात्, सुरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥
 उपसर्गाः क्षयं यानि त्रियंते विघ्नवद्भ्यः । मनःप्रस-
 मतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगलमां-
 गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वभर्माणां , जैनं
 जयति शासनम् ॥ १९ ॥

॥ अथ श्रीगौडीपार्श्वजिन वृद्धस्तवन लि० ॥

॥ टोहा ॥

याणी ग्रह्यावादिनी, जागै जगविद्यात ।

चासतजा गुण गायतां, गुज गुप्त पसज्यो-नात ॥ १ ॥

नारंगै अहणिकपुगे, अहिमदावादै पास ।

गौडीनो धणी जागनो, मट्टुनो पूरे आम ॥२॥

सुभ बेला सुभदिन घडी, मट्टुरन एक मंहाण ।

प्रतिमा ते इह पासनी, धई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥

॥ दाल ॥

गुणहि विशाला मंगलीक माना. बामानो सुभ
साधोजी । घण कण कंघण मणि माणक दे, गौडीनो
घणीं जाचोजी ॥ गु० ॥ ४ ॥ अणदिलपुर पाटण माई
प्रतिमा, तुरक तणै घर हुंभीजी । अश्वर्ना भूमि अश्व-
नी पीडा, अश्वर्ना बालि दिगूनी जी ॥ गु० ॥ ५ ॥ जाण
तो जह जेहने कहिये, सुहणो मुक्कने आवेजी । पास
जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवरु तुह संतापे जी ॥ गु० ॥ ६ ॥
महज्जाने परगट करजे, मेघा गोडीने देजे जी । अधिको
म लेजे ओंछो म लेजे । दफा पांचमै लेजे जी ॥ गु० ॥
॥ ७ ॥ नहीं आविन तो मागिस सुरहीस, मोरयंष
पंशास्याजी । पुत्र कलत्र घन हय हाथी तुम्ह, लाछि
घणी घर जास्येजी ॥ गु० ॥ ८ ॥ मारग पहिलो तुम्हने
मिलस्ये, सांध्यथाह जे गोडीजी । निलवट दीलो चोखा
गोल्या, वस्तु बदै तसु पोठी जी ॥ गु० ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

मनसुं पीहनो तुरकषो, माने अचन प्रमाण- ।

दीर्घानें सुदृणा तणो, संभलावै सहि नाणं ॥१०॥
 दीर्घी घाले तुरकने, घटा देर ह कोय ।
 अय सनाय परगटकरो, नहीतर मारै सोय ॥११॥
 पाछली रात पराछीगै, पाली धंधे राज ।
 सुदृणा माहें सेठने, संभलावै जक्षराज ॥१२॥
 ॥ दाल ॥

एम कही जक्ष आयो रातें, सारधयाहुने सुहणें
 जी । पास नणी प्रतिमा मुंलेजे, लेनां सिरमन धूणै जी
 ॥ एम० ॥ १३ ॥ पांचसै टफा तेहने आपे, अधिको म
 आपिम चारुजी । जनन करी पहुंचावै धानिक, प्रतिमा
 पुण संभारैजी ॥ एम० ॥ १४ ॥ तुझने होसी यह कल-
 दापर, भाई गोठीने सुणजे जी । पूजीस मणमीरा तेह-
 नापाया, महउठीने धुणजे जी ॥ एम० ॥ १५ ॥ सुहणो
 देहने सुरचाल्यो, अपने धानक पहुंचोजी । पाटण महि
 सारधयाहु, होवै तुरकने जोनोजी ॥ एम० ॥ १६ ॥ तुरक
 जानां दीओ गोठी, घोखा तिलक लिलावै जी । संकेत
 पहुंचो मायो जाणि, बोलावै पहुंचावै जी ॥ एम० ॥ १७ ॥
 तुम घरि प्रतिमा तुझनें आयुं, पास जिणेंसर बेरीजी ।
 पांचसै टफा जो मुम आवै, मोल न मायुं फेरीजी ॥
 एम० ॥ १८ ॥ नागो देह प्रतिमा लेह, धानक पहुंचो
 जी । केसरचंदन मृगमद घोली, बिघसुं पूजा रंगेजी ।

॥ एम० ॥ १८ ॥ गादी रुडी रुनी कीधी, ते मांदि
प्रतिमा राखै जी । अनुक्रम आज्या परिकर मांहे, ओसं-
घने सुरसाखै जी ॥ एम० ॥ २० ॥ ओच्छथ दिन दिन
अभिरुधा धाये, सत्तरभेद सनाथो जी । ठाम २ मा दर-
सण करवा, आवै लोक प्रभावो जी ॥ एम० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

इकदिन देखै अथयिहुं, परिकरपुरनो भद्र ।

जगन कहं प्रतिमा तगो, तारथ अछे अभंग ॥२२॥

सुदगो आवै सेठने, धल अटकी उज्जाट ।

महिमा भासै अनि घनी, प्रतिमा निहां पुद्गलाइ ॥२३॥

कुशल तेम निहां अछे, तुम्हने मुझने जाणि ।

संका छोटी काम करि, करतो मकरि संकाणि ॥२४॥

॥ दोहा ॥

पाम मसोअथ गुग करै, पाहण एक वृषभ जोनै ।

परिकरार्थ परिमाणो करै, एक धल चडि पीतो

नमरे ॥ २५ ॥ चारि काम आज्या जेनने, प्रतिमा मवि

बाधे जेनने । गोटी मनट विमासण धई, पाम भुवन

मंदाई मदी ॥ २६ ॥ आ आटकी किम कहं गणान,

कुदको कोई मदीम पाहण । देवण पाम जिनैसर तगो,

मंदाई किम घरी किनो ॥२७॥ जग विन श्रीसंघ

रहै निहां, लिखाये किम आवै रहा । विनापुर

धपो निद्रा लहे, यक्षराज आधीने कहे ॥२८॥ गेह
 ऊपर नांगो जिहां, गरथ घणो जाणि जे तिहां । स
 स्त्रिक सोपरी महीनांग, पाहाण तणो उलटस्ये खा
 ॥२९॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूजो, कमून जल
 नीमरमी कृष्णो । खाराकृषा तलो इह सही-
 नांग, भूमि पट्यो दै नीलो छाण ॥ ३० ॥ सि-
 लाबटो मोरोहि बस, कोट पराभवियो किस
 मित । तहां धकी तूं इहां आय जे, रुस्यवचन मा-
 रों मानजे ॥ ३१ ॥ गोडीनो मन थिर धापियो ।
 सिलाबटने सुणो दियो । रोगगमाउने पूर आस । पास
 तणो मंडे आवास ॥ ३२ ॥ सुपन मांडे मान्यो ते बैण,
 हेमबरण देखावो नैण । गोटी मनह मनोरथ हुआ,
 सिलाबटने गया तेहया ॥ ३३ ॥ सिलाबटो आवे
 घरमो, जोमे खीरखाटपून घरमो । घड़े घाट करे
 कोरणी, लगन भल पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ धंभ २
 तीथी पूनली, नाटक कौतुक करती रली । रंग कण्ठ-
 रनिधामगो रनै, जोनां मानवनों मन बसे ॥ ३५ ॥
 पायो पूरा प्रासाद, स्वर्गसमो मंडे आवास । दिवस
 चारी इण्टो घट्यो, मनसिण देवल ऊपर बस्यो ॥ ३६ ॥
 भ लगन शुभ बेला पास, पव्यारुण दैठा थीपास ।
 देमा मोटी मेरु समान, एकलमिल बगटे रहै- यान

(१३८)

॥ ३७ ॥ घात पुराणी में सांभली , तवन मांही स
सांभली । गोठो तणा गोतरीया अछै , यात्रा करीने प
पछै ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघनविहारण यक्ष जगि , तेहनी अकल सरूप ।
प्रीत करै श्री संघने , देखाई निज रूप ॥३९॥
गिरुओ गौटी पास जिन , आपै अरधमंडार ।
सानिध करै श्रीसंघने , आसा पुरगहार ॥४०॥
नील पलाणैनील हथ , नीलो थइ असवार ।
मारग चूका मानयो , पाट दिखावणहार ॥४१॥

॥ दाल ॥

वरण अदार तणो लहै भोग , विघन निषारै दा
रोग । पयिअ धई समैर जे जाव , टालै सगला पा
सेताप ॥४२॥ निरधनने घरि धननो सुन , आपै अ
पुत्रीयाने पुत्र । कायरने मुरावण धरै , पार उमारै स
खी धरै ॥ ४३ ॥ दोभानीने दै सोभाग , पग बिहना
आपै पग । टाम नहीं तेहने दै टाम , मन धंछिन परै अमि
राम ॥ ४४ ॥ निराधार ने दै आधार , भवसापर उता
पार । आरतीयानि आरत भोग । धरै ध्यान ते सों
सुरंग ॥४५॥ समर्या सहाय दीये यक्ष राज , तेहना मां
गछै दियाज । यदि हीण ने यदि प्रकाश . गंगाने

दधन विलाम ॥ ४६ ॥ दुखियाने सुरानो दांगारं, भय
भंजग रंजण अयमार । घंघन तूट बेटी तण्या, श्री
पार्श्वनाम अक्षर ममरणां ॥४७॥

॥ दोहा ॥

श्रीपाश्वं नाम अक्षर जपे, विभ्वानर विकराल ।
हमियूथ दूरे दलें, दुर्दर सिंह मियाल ॥४८॥
घोर नणा भय पकये, विष असून उदकार ।
विष धरनो विष ऊनरै, संग्रामे जयजयकार ॥४९॥
रोग मोग दालिद्र दुर, दोहण दूर पुलाय ।
परमेश्वर श्री वामनो, महिमा मन्त्र जपाय ॥५०॥

॥ टाल ॥ (कटखानी बाल)

उंजितु २ उंज उपमम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपाद्वं
अक्षर जपेन । मृगने ग्रैव भोटिंग जंगरसुरा, उरम-
मंधार इक्ष्मास गुणंते ॥५०॥५१॥ दुर्दरारोग मोगा जरा
जंगने, माय गेकांतरा दुमपेन । गर्भबंधन ग्रंथ मर्ष
विच्छू विष, बालिका बालमेवा भग्वेन ॥५०॥५२॥
माइगी डाइगी गंदिगी रंकी, कोटका मोटका दोष
हुंते । दाड उंदर मणी कोल मोला मणी, स्वाम सीयाल वि-
कराल दंते ॥५०॥५३॥ घरणेंद्र पद्मायनी समरशोभा-
यनी, घाट आघाट अटवी जटने । लक्ष्मी सीला मिलै
मुजस बेलाडन, मयल आसा फलै मन हमंते ॥५०॥

॥ ५४ ॥ अष्ट महाभय हरै कानपीडा टलै, ऊनरै सुल
 सीसग भणतै । वदतु वर प्रीतसुं प्रीति विमल प्रसु, श्री
 पास जिण नाम अभिराम मनै ॥ उंजितु ॥ ५५ ॥
 इति श्रीगोडी पाद्वनाथजी वृद्ध स्तवन समप्तम् ।

गौतमस्वामी का छंद ।

धीर जिनेश्वर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो नि-
 शदिस । जो कीजे गौतम नो ध्यान, तो घर बिलसै
 नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिवर चढ़े, मन
 घाञ्छित लीला संपजे । गौतम नामे नावे रोग, गौतम
 नामे सूर्य संजोग ॥ २ ॥ जे धैरी बिहारा धंकटा, तस
 नामे नावे टुकडा । भूत-प्रेत नवी मंहे प्राण, ते गौतम
 ना कहं पखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे मीरमल षाय,
 गौतम नामे बाधे आय । गौतम जिन शासन शणगार,
 गौतम नामे जय जघकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा
 घृत गोल, मन घाञ्छित का पडत पोल । घरसुं घरणी
 निरमल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनोत ॥ ५ ॥ गौतम
 उदयो अविचल भाण, गौतम नाम जपो जग जाण ।
 मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सकल बिहाण
 ॥ ६ ॥ घर मंगल घोड़ानी जोड़, बाहु बिलहे घाञ्छित
 कोड़ । महियल माने मोटा राय, जो तुठे गौतमना

पाप ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पानिक दले, उत्तम नरनी
 सेगम मोले । गौतम नामे नौरमट ज्ञान, गौतम नामे
 बाधे धान ॥ ८ ॥ पून्यवन अवधारो सह, गुरु गौतमना
 गुण छे पहु। बड़े लायण्य समय कर जोड़, गौतम खुटे
 संपत्ति कोड़ ॥ ९ ॥ इति ॥

देसावगासी का पद्यस्त्राण ।

आयक के तीन साधयिक लेनी हो तो तथा शिन्नी उपादा
 पद्यनी हो तो उन की विधि —

उत्तमो मे आ घर तथा घर के गहनस्थ स्थान में बाना हो
 तो प्रथम काज निकाल कर बटामय एक बानू गत का गानस-
 मय देखे—

इच्छामि स्वमासमणां वेदितं जायसिध्नाय निमी-
 रिष्यामि मत्पण्यं वन्दामि ।

एक एक इतिवादिषा हो —

इच्छाकारेण वेदिसह भगवन् ! इतिवादिषे प-
 रिक्कमामि ? इच्छं । इच्छामि परिक्कमिउं, इतिवादि-
 षाए विराहणाए ममणागमले पाणक्कमणे पीयक्कमणे
 हरियक्कमणे ओमां उत्तिग पगादग मदीमक्कटा सेना-
 णा संक्कमणे, जे मे ओवा विराहिणं, पणिदिषा, वेइं-
 दिषा, तेइदिषा, धररिदिषा, पं.पेदिषा, धमिदिषा,

मानस हंस सम चढ़ , नमो सिद्ध महागुणी ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय सिद्धपदं वासशे-
षजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

नमोऽर्हत् ० ॥ आचारजमुनिपति गङ्गी, गुण छतीसी
धामोजी । चिदानन्द रसस्वादता, परमात्रे निःकामोजी
॥ उलालो ॥ निःकाम निर्मल शुद्ध चिद्वन , साध
निज निरधारधी । निज ज्ञान दर्शन चरण वीरज,
साधना व्यापारधी । भवि जीव बोधक तत्त्व शोधक
सफल गुण संपत्ति धरा । संघर समाधि गन उपाधि,
दुविध तप गुण आगरा ।

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय आचार्यपदं वास-
शेषं जामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

नमोऽर्हत् ० ॥ खंति जुआ मुक्ति जुआ, अमर
मदय जुता जी । मय सोय अकिंचना , तव गुण
संजम रसाजी ॥ १ ॥ (उलालो) जे रम्या ब्रह्म सु-
गुति गुना , समिति समिता श्रुतधरा, स्थाछाद धार
तद्वशादक , आत्म पर विभजनकरा । भव भीर
साधन धार जामन , यदन धारा मुनिवरा । सिद्धान
वापगदान समरथ, नमो पाठक पद धरा ॥

ૐ હિં શ્રી પરમાત્મનેઽનન્તાનન્તજ્ઞાનસ્વરૂપાય જન્મ-
જરામૃત્યુનિવારણાય શ્રીમદ્વિનેન્દ્રાય ઉપાધ્યાયપદં વા-
સશેષં વજ્રામહે સ્વાહા ॥ ૪ ॥

નમોઽર્જુન૦ ॥ સમગ્ર વિષય વિષયારિને, નિઃકામો
નિઃસંગો જી । ભય દય તાપ શમાયતા । આત્મ
સાધન રંગી જી ॥૧॥ (ઉદ્ધાનો) જે રમ્યા શુદ્ધ સ્વરૂપ
રમણે, દેહ નિર્મલનિર્મલા । કાઉસગ્ગમુદ્રા ખીર આસન,
ધ્યાન અભ્યાસી મદા । તપ સેજ દીપે કર્મ ખીપે , નૈષ
દ્રીપે પર ભળી । મુનિરાજ કરુણા મિત્રુ ત્રિમુખન ,
પંદુ પ્રણમું હિત ભળી ॥

ૐ હિં શ્રી પરમાત્મનેઽનન્તાનન્તજ્ઞાનસ્વરૂપાય જન્મ-
જરામૃત્યુનિવારણાય શ્રીમદ્વિનેન્દ્રાય સાધુપદં વાસશેષં
વજ્રામહે સ્વાહા ॥ ૫ ॥

નમોઽર્જુન૦ ॥ સમ્પન્ન દર્શન ગુણ નમો , તત્ત્વ
સ્વરૂપ પ્રવીન જી ॥ જસુ નિરુગર સ્વમાય હે, ચેતન
ગુણ જે અમ્પો જી ॥૧॥ (બલાલો) જે અનૂપ શ્રદ્ધા
ધર્મ પ્રગટે , સગર પર દહા ટાલે । નિજ શુદ્ધ મક્તા
પ્રગટ અનુભવ , પડગા રૂપિના ઉચ્છલે । પશુ માન
પરિણતિ યત્નુત્તમે , અદ્યતન સુ કારણ પળે । નિજ
સાચ દોષ મર્ચગત્તી . મત્યના મંપત્તિ ગળે ॥

मानस हंस सप्त यद्व , नमो मित्र मद्रागुणी ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमन्निनेन्द्राय मित्रपदं वासतो
यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

नमोऽर्हत् ० ॥ आचारजमुनिपनिगर्भा, गुण छर्तामी
धामोजी । चिदानन्द रसस्वादना, परभायं निःकामोजी
॥ उलालो ॥ निःकाम निर्मल शुद्ध चिद्वन , सात्य
निज निरधारधी । निज ज्ञान दर्शन चरण वीरज,
साध्यता व्यापारधी । भवि जीव बोधक तन्व शोधक
सफल गुण संपत्ति धरा । संवर समाधि गन उपाधि,
दुविध तप गुण आगरा ।

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमन्निनेन्द्राय आचार्यपदं वास-
तो यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

नमोऽर्हत् ० ॥ खेति जुआ मुक्ति जुआ, अत्र
मदय जुता जी । सद्य सोय अकिंचना , तव गुण
संजम रत्ताजी ॥ १ ॥ (उलालो) जे रम्या ब्रह्म सु-
गुति गुता , समिति समिता श्रुतधरा, स्वादाद धारै
तत्त्ववादक , आत्म पर विभजनकरा । भव भीह
साधन धीर शासन , बहन धोरी मुनिवरा । सिद्धाल
वापणदान समरथ , नमो पाठक पद धरा ॥



ॐ હીં શ્રી પરમાત્મનેઽનન્તાનન્તજ્ઞાનસ્વરૂપાય જન્મ-
જરામૃત્યુનિષારણાય શ્રીમદ્ભિનેન્દ્રાય ત્રિપાઞ્ચાવપદં પા-
સદ્ધેવં પજામોઃ સ્વાહા ॥ ૪ ॥

નમોઽર્હત્ ॥ સર્વલ વિષય વિષયારિને, નિઃકામી
નિઃશંકી જી । ખચ દય તાર ઝગાવના । આત્મ
માધન રંગી જી ॥૧॥ (હલાલો) જે રમ્યા શુદ્ધસ્વરૂપ
રમણે, દેહ નિર્મલનિર્મલ । પાડસગમુદ્રાધીર આસન,
ધ્યાન અભ્યાસી મદા । તપ તેજ દીપે કર્મ મીપે , નેવ
હીપે પર મળી । મુનિરાજ વરુણા મિન્ધુ ત્રિમુખ ,
વંદુ પ્રણવું દિન મળી ॥

ॐ હીં શ્રી પરમાત્મનેઽનન્તાનન્તજ્ઞાનસ્વરૂપાય જન્મ-
જરામૃત્યુનિષારણાય શ્રીમદ્ભિનેન્દ્રાય ત્રિપાઞ્ચદં વાસદ્ધેવં
પજામોઃ સ્વાહા ॥ ૫ ॥

નમોઽર્હત્ ॥ સમ્પન્ન દર્શન ગુણ નમો , તત્ત્વ
મ્યત્ત્વ પ્રમાણ જી ॥ જાતુ નિરખાર સ્વભાવ મે, ચેતન
ગુણ જે અરૂપાં જી ॥૧॥ (હલાલો) જે અનુપ શ્રદ્ધા
ધર્મ પ્રગટે , સર્વલ પર દટા દટે । નિજ શુદ્ધ મત્તા
પ્રગટ અનુભવ , વરુણા રુપિણા ઉન્નતે । વહુ માન
પરિણાનિ પાતુનત્વે , આદ્યનહુ કારણ પળે । નિજ
સાધ્ય દોષે સર્વજગતી , મન્યના મંપત્તિ મળે ॥

मानस हंस सम बड़ , नमो सिद्ध महागुणी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनियारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय सिद्धवदं वाससे
यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

नमोऽर्हत् ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुण उत्तमी
धामोर्जा । चिदानन्द रमस्यादना, परभावे निःकामोर्जा
॥ उल्लासो ॥ निःकाम निर्मल शुद्ध निद्रुगन , साय
निज निश्चारर्था । निज ज्ञान दर्शन परमा वीरज,
माधयना व्यापारर्था । भवि जीव पोषक तत्त्व जोषह
सकल गुण संगति परा । संयर समाधि गन उपाधि,
दूषिष तय गुण आगरा ।

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनियारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय आगारगर्भे वा
श्री यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

नमोऽर्हत् ॥ ग्यनि गुप्ता सुति गुप्ता, अत्र
मद्व गुप्ता जो । गद्य मोर्ग अकिंयता , तय गु
संजम रभाजी ॥ १ ॥ (उल्लासो) जे रभा मय गु
गुनि गुप्ता , ममिनि ममिना भुन-परा, आग्राद को
नरबादक , आगम पर विगतनरग । भव भोद
माधन भोर जामन , पदन भोर्ग मुनिपरा । गिराग
बाग्रादान समरग , मधो नाटक पद् धरा ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय दर्शनपदं वासक्षे-
पजामहे स्वाहा ॥६॥

नमोऽर्हत् ॥ भव्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपर प्रकाशरु
भावेजी । पर जय धर्म अनन्ता, भेदाभेद स्वभावेजी
॥ १ ॥ (उलालो) जे मुख्य परिणति सकल ज्ञायरु,
बोधक भाव बिलक्षण । स्यादाद-संगीतत्व- रंगी,
प्रथम भेदा भेदता । सविकल्पने अविकल्पवस्तु, सकल
संशय छेदता ।

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय ज्ञानपदं वासक्षे-
पजामहे स्वाहा ॥७॥

नमोऽर्हत् ॥ चारित्र गुण बन्धी बली नमो, तत्व
रमण जसु मूलोजी ॥ पर रमणीय वस्तु दले, सकल
सिद्ध अनुकूलोजी ॥१॥ (उलालो) प्रतिकूल आश्रव
त्याग संजम, तत्त्व धिरता दम मयी ॥ शुचि परम
खंति मुक्ति दश पद, पंच संवर उपचयी ॥ सामायिका-
दिक भेद धर्म, यथाख्याते पूर्णता ॥ अकपाय अक-
लुप अमल उज्ज्वल, काम कदमल चूर्णता ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-

जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्र्यवर्द्धाय नमः-
क्षेत्रं यजामहे स्वाहा ॥८॥

एवमा रोधन तव नमो, पाप अभ्यंजर भेदेजा ॥
आत्मस्य सत्ता एवता, पर परिणमि उच्छेदे जी ॥ १ ॥
(उलालो) उच्छेदे कर्म अनादि संमति, जेह मिदुपणु
परे । योग संगे आहार दार्दी, भाव अक्रियता करे ।
अंतर सुहरन तम्य भाधे, मय संगरना करी । निज
आत्म सत्ता प्रगट भागे, करां तव गुण आदरी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय तपवर्द्धाय चारित्र्य-
यजामहे स्वाहा ॥९॥ इति

अथ नव पदों के नव चैत्यवन्दन, नव स्तवन
तथा नव धुइ ॥

॥ अथ अरिहंनपद् धैर्यवर्द्धन ॥

जय २ श्री अरिहंन भानु, भविकमन्द विशासी ॥
लोकाढोक अरुवि रुवि, मम पातु प्रशसी ॥१॥ स-
मुद्रपात शुभ केयदे, दासदृज मादसी, सुहृद व-
रम शुवि पादमे, भयो पर अदितासी ॥ २ ॥ अंतरंग
रिपुगण दग्गीए, हृय अन्ता अरिहंन ॥ ततु पद पै-
बजमे रमत, दीरपरम निज संग ॥३॥ इति ॥ 'अरि-
वि मामतित्थे'मे नमोऽर्तु तक ॥

जा ॥ इति अरिहंत पद स्तुति ॥

॥ अथ सिद्धपद ध्यात्यर्थदन ॥

श्रीशैलेरी पूर्व प्रांत, तनुदिनन भारी ॥ पुण्य प-
उपसंग में, ऊरध गन जागी ॥ १ ॥ समय एक में
लोकप्रांत, गया निगुण निरामी ॥ चेननभुवं ध्यात्माप्य,
सुदिशा रही मागी ॥ २ ॥ केवल दंगमनागधी न ,
रुपातीन स्वभाव ॥ सिद्ध भये तनु हीरधर्म, धरे धरि
हृम भाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद ध्यात्यर्थदन ॥

॥ सिद्धपद स्तवन ॥

(धरि महिला ऊपर मेह करोगे पीजली, न दात)

अष्ट परम नग मान हीना कोही पूर्वमें ॥ म्हा-
गालाल ति० ॥ उल्लुगो धरे धाम गयोगी धाममें ॥
म्हा० स० ॥ अजोगी के अंत मजे भविष्यता ॥
म्हा० त० ॥ शैलेरी रही र्म दहै गुण धेनिना ॥
म्हा० द० ॥ १ ॥ हस्याक्षर पंच पाद रहे ते योगमें ॥
म्हा० र० ॥ तेरम प्रवृत्तिनो अगत करीनें अभ्यर्में ॥ म्हा-
क० ॥ गमन कर नगरहामें अक्षिप योगमें ॥ म्हा०
अ० ॥ पुन्ययोग असेन स्वभाष अर्थधर्म ॥ म्हा०
स्य० ॥ २ ॥ हृषुगुण नय परमाण योगिन लक्षे रही ॥
म्हा० धो० ॥ धर्तुग विनदा भासर निगनेदन रही ॥
म्हा० नि० ॥ मध्ये योगिन अष्टधनारूति अगतमें ॥

म्हा० घ० ॥ मक्षी पक्ष थी हीन भणी सिद्धांतमें ।
 म्हा० भ० ॥ ३ ॥ तनुपन्मारा नाम शिलासैं जोपैं ।
 म्हा० शि० ॥ युग लोचन में भाग अलोक कुं स्पर्श
 ॥ म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल वत्तीस प्रमाण स्वगाहन
 ॥ म्हा० प्र० ॥ वृद्धि घनुशतपंच गुणासैं हीनता ॥ म्हा
 ॥ गु० ४ ॥ मिलिया एकमें अनंत आयाघा ना लही ॥ म्हा
 अ० ॥ अष्ट प्राण धरि रम्य सिरीही जो सही ॥ म्हा
 सि० ॥ बीजो पद श्री सिद्ध धरो मनगेह में ॥ म्हा
 धरो० ॥ कुशल भये जग जीव मिलोगा तेहमें ॥ म्हा
 मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवन ॥

॥ सिद्धपद स्तुति ॥

अष्ट करमकुं धमन करीनैं गमन कियो शिववास
 जी । अब्यायाघे सादिअनादि चिदानंद विदरासीजी ।
 परमात्म पद पूरण विलाशी अघ घन दाघ विनाश
 जी । अनंत चतुष्टमय शिवपद घ्यावो केवलज्ञान
 भासीजी ॥ १ ॥ इति सिद्धापद स्तुति ॥

॥ तृतीय आचार्य पद चैत्यवंदन ॥

जिन पद कुल मुखरम अनिल । मिनरस गुण
 धारी । प्रथल सथल घन मोहकी । जिणतें चमूहारी ।
 ॥ १ ॥ ऊज्यादिक जिनराज गीन । नयनन विस्तारी
 भय कूपै पापै पटंत । जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचा

धारी जीयक, आचारिजपद मार । निन कुं पद हीर
भर्म , अटोमर सौ बार ॥ ३ ॥ इति आचारिपद
न्यवेदन ॥

॥ अथ आचार्य पद स्मयन ॥

(नणदल धीदर्ता नो, १ बाल)

त्यर्था खडगधी जेणे, हण्यो कोभ सुभट सम देणे
हां, गणपति गुण पेर्या ॥ टेर ॥ मान महागिरि वपरे,
अतिगोभन मदय वपरे हां ॥ ग० ॥ १ ॥ दंभरूप विम
वेली, यर अउमय कीर्त देली हां ॥ ग० ॥ मुच्छा गंधभा
भरियो, लोह मागर मुनें मगियो हां ॥ ग० ॥ २ ॥ मदन
नाग मद हीनो, जिण दम जम जेनें कीनो हां ॥ ग० ॥
मोह महामह नाहयो, पुण वराग मुगरें पाहयो हां ।
ग० ॥ ३ ॥ दोम गरुद यम कीनो, भरि उवजम भेकुम
लीनो हो ॥ ग० ॥ अंतरंग रिपु भेना, सुरवर विण जिण
निपेचा हां ॥ ग० ॥ ४ ॥ रम कृति गुणधी लीनो, मय
अरुणे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एह-
यो, धरी जीव कृमलमा मेयो हां ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति
आचारिपद स्मयन ॥

॥ अथ आचार्यपद स्तुति ॥

पंथाचारकुं पार्ये उज्जवाये दोष गति गुणधारी
जी । गुण हसीसे आगमधारी दाददा धंग विधारी

जी । प्रबल मयल धन मोह हणकरं अनिल समो गुण
चाणी जी । क्षमा मझिन जे मंजम पाले आचारज गुण
ध्यानी जी ॥ इति आचार्यपद स्तुति ॥

॥ चतुर्थ उपाध्यायपद चैत्यवंदन ॥

धन धन श्री उवङ्काय राय, शठता धन भंजन ।
जिनवर दिम्भन दृवाल संग, कर कून जन रंजन ॥ १॥
गुणघण भंजण मण गयंद, सुय शृणि क्रियगंजन ।
कुणालंध लोय लोयणें, जन्थय सुयमंजन ॥ २॥ महा
प्राणमें जिन लह्यो न , आगममें पद तुर्य । तिनमें
अहनिश हीरधर्म बंदे पाठक बर्य ॥ ३ ॥ इति उपा-
ध्यायपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवन ॥

(सांबलिया अलगा रहोनें, न चाल)

हुयने रे दूरी हुयने, चेतन भापै सठने ॥ दूरी
हुयने ॥ तुं मुक्त पाम धर्यु आवै ॥ १० ॥ तुभने कुण पन-
लाये, ॥ १० ॥ १ ॥ आंकणी ॥ मो संगे निज पनें डीनो, रचना
चरम भुलागो । नाणावरणी खय उपशमसे, भावेंती
मंडाणो ॥ १० ॥ १ ॥ द्रव्ये ते परजासैं कीना, जानि-
नाम व्यपदेश । एवंतो गो तुरग गजादिक, किण कमें
उपदेश ॥ १० ॥ २ ॥ इत्यादिक बहू मुझकुं शंका, तें
संगे लागी । नीलवर्णकी समता सेनी, में भयो तोहुं

रार्गी ॥३०॥३॥ उप कटिमे हणियां भविष्यां, अवि-
यां लाभन आग । आभीनां मन वाङ्मानसं, मार्ग-
मेनयिनाय ॥३०॥४॥ आभिरमे समर्थां वर आगम,
सूत्रमेने उवउमानय । तन् मेयामे हणि शठमाकुं, येनन
कृजलना पाग ॥ ३० ॥५॥ इति उवाच्याय स्तवन ॥

॥ अथ उवाच्यायपदं स्तुति ॥

अंग इग्यां वउदं पुरष गुण वनर्धामना भारी जी,
सूत्र अरुषा पाठक कटिमे जोग मताधि विवारी जी ।
नगुण सुग आगम पुर नय निक्षेपं नारी जी, मुनि-
गुण भारी सुध विवारी पाठक गुजो अविवारी जी ॥
१ ॥ इति उवाच्याय स्तुति ॥

॥ अथ पंचम साधुपदं श्रवणं ॥

दंसरु नाग गरित नारी, पर जिवपद नारी, भर्म
जुष्ट श्रुति नक्षत्रं, आदिम मग कामी ॥ १ ॥ गुणव-
मत अपमत्तनं, भये अंतरजामी । मानस इंदिय दम-
नभून, समदम अभिरामी ॥ २ ॥ आहनि घन गुणगणा
भरयो ए, पंचम पद मुनिराज । मस्पदपंक्त मसन ई,
ईशभर्म के वज्र ॥ ३ ॥ इति साधुपदं श्रवणं ॥ ५ ॥

॥ साधुपदं स्तवन ॥

(साष्टन सालन सति कर्त्तुं, एवात्त)

निकवाया जगजन कटि, पौर वउगनि दसन नं

रोमहो ॥ मुर्नादजी ॥ गग हीन भय तु कर ॥ सादि ॥
 शिव रमणा में हेन हो ॥ मुर्नादजी ॥ १ ॥ सर्व प्रसाद
 नही रहे ॥ सा० ॥ छटे पुर्य कोइहो ॥ मु० ॥ शन
 मोगम आगम कर ॥ सा० ॥ लघु काले गुण जाति
 हो ॥ मु० ॥ २ ॥ म्यानद्वि निद्रा उदै ॥ सा० ॥ पामें कर्म
 निकंद हो ॥ मु० ॥ प्रचला निद्रा में गही ॥ सा० ॥
 पारम गुणना घाम हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ धिनि रस पाप
 प्रमुक्त भैर ॥ सा० ॥ जो गुण संख्यानीत हो ॥ मु० ॥
 सो पिण निण जगमें लही ॥ सा० ॥ त्रिकधन गुणी
 ल्यात हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ ग्यण घन में शिव पथे ॥ सा० ॥
 माधन पर वर जावहो ॥ मु० ॥ साधु हुबड नहु परम
 में ॥ सा० ॥ कुशल भवतु जगनीयहो ॥ मु० ॥ ५ ॥ इति
 पंचम साधुपद स्तवन ॥

। अथ साधुपद स्तुति ॥

सुमनि गुणनि कर संजम पाले हांप बयालीश
 शाले जी, पटकाया गोकुल रुखवाले नवविध ब्रह्मजन
 गान्दिजी । पंच महाजन मूभा पाले धर्म शुद्ध उज-
 वादिजी । ज्ञापक श्रणि कर कर्म स्वपावे दम पद गुण
 उपजाने जा ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ छटे दर्शनपद चैत्यवदन ॥

दृग पुगल परिपट, अट्ट गरमिन संसार ।

गंठिभेद तप करि लहे , मप गुण आधार ॥ १ ॥
 क्षापक चेदक जजि असेख, उपजम वण पार । विना-
 जेण चारिअ नाण , नही हुये जिव दातार ॥ २ ॥
 श्रीसुदेव गुरु भर्मेनीए , रुचि लह्यन अभिराम । दर-
 शनकुं गणि हीरधर्म , अह निज करत प्रणाम ॥ इति
 दर्शनपद रत्नचंद्रन ॥

॥ दर्शनपद रत्नचंद्रन ॥

(रामचंद्रके पाग में आंखों मोहि रह्यो री, ए बाल)

देव श्री जिनराज . गुरु ते साधु भणोरी । धर्म
 जिनेश्वर प्रोक्त . लह्यण पोधि तणोरी ॥ १ ॥ पोधि
 लाभके काज , मसम मरक भलोरी । नेण विना सुर
 लोय . तानि अधिक पुगेरी ॥ २ ॥ मिथ्या तापे तस,
 पोधिही छांहे लोरी । उपजम क्षापक चेद , ईश्वर सीन
 गहेरी ॥ ३ ॥ भव सागर छे अपार , पूण अस्ताव
 कलोरी । जसु लान ते लोय , गोमपद मात्र गगेरी
 ॥ ४ ॥ यद भावे अप्रमाण , नाण शक्तिभलोरी ।
 पोधि धर्ममें जाय , लाभ कूजल कलोरी ॥ ५ ॥ इति
 दर्शनपद रत्नचंद्रन ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तुति ॥

जिनपणगतनम्व सुभा मरथै समचित्त गुण उजवाले
 ज्ञा, भेद छेद करि आत्मनिर्गवा पशु टाल्यो गुरु पावै

जी । प्रत्याख्यानने सम तुल्य भाग्यो गणधर अति
मुरा जी, ए दर्शनपद निन निन दंदो भवमागर
तीरा जी ॥ १ ॥ इति दर्शनपद स्तुति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मिन आदम, नाण
भाव मिलापसें जिन जनिन , सुय धीस प्रमाण ॥१॥
भव गुण पप्रवि ओहि दोय, मण लोचन नांग । लोक
लोक स्वरूप जाण, इक केवल भांग ॥२॥ नाणावर
नासधी ॥, चेसन नाण प्रकाश । मसम पदमें हीर्यम
नित चाहन अवकाश ॥३॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ।

॥ अथ ज्ञानपद स्तवन ॥

(म्हागे अनि उद्धरंगे, ए चाल)

जिनवर भापिन आगम भणिया, नत्य यथास्थित
गमिया जी ॥म्हागे जगजन नाक ॥ ते उत्तम घर ना
कहाये, भविजन अहनिश चाहे जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥
भक्षाभक्ष कुपंध सुपंधा, पेयापेय अग्रंधा जी ॥म्हा०॥
देय कुदेय अहिन दिनचारी, जाणें जेण विचारी जी ॥
म्हा० ॥२॥ श्रुति मनि दोष है इंड्री मारु, तेण पोष
विचारु जी ॥म्हा०॥ ओही मण केवल हे वारु, जी
प्रणय सुधारु जी ॥म्हा०॥३॥ अथ विजसम यलें ज
जाणें, लोकादिक अनुमाने जी ॥म्हा०॥ त्रिमुवन पत्रे

जातु पर्याय, भारी शुभ अध्ययमायें जी ॥ मत् ० ॥ ४ ॥
 नागापरणी उपशम क्षयभी, येन न नागाकुं विलम्ब जी
 ॥ मत् ० ॥ समस पदमें भवि जन हरये, निमदिन कुश-
 लता निररै जी ॥ मत् ० ॥ ५ ॥ इति ज्ञानपद रत्नवन ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तुति ॥

मनि भुनि ईंद्रा जनिम कटिर्ग लटिर्ग गुण मर्भांग
 जी, आत्मभारां गणपर विचारां द्वादस अंग विमारां
 जी । अपभि मन परेष केवल बलि प्रमक्ष रूप अय-
 भारां जी, ए पांच ज्ञानहं वेदो पूजा भविजनने सुख-
 पारो जी ॥ इति ज्ञानपद स्तुति ॥

अथ अष्टमचारित्रपद वैश्ववेदन ॥

जगत् पर्याय बालु पाप, जग ५ समिन्नेद । समन
 करे शुभ भाव लाप, पून नरपनि हृद ॥ १ ॥ अंवे परि
 अरिहेतराग, करि पर्म निवेद । सुमनि वेण नीम गुणि
 युम, ई सुख आमंद ॥ २ ॥ इपु कृति मान कामायभी
 ए, रतिम लेम सुविधेम । जीव अरिभृते हीरभर्म, न-
 मन करत निम धर्म ॥ ३ ॥ इति आरित्रपद वैश्ववेदन ॥

आरित्रपद रत्नवन ॥

निर्विकल्प अज निर्गुणा । विदाभास निमंग, सुलार्नी
 मांभलां) देर ॥ मृनि हीन येन करे, रूपी पुद्गल ० ॥ ग. सु ०)
 ॥ १ ॥ उपर्द्धक कायका पराणा, कायें कायस भाव (सु ०)

कृत्वा जोग सुधा मना , लब्धा मंगल स्वभाव (सु०)
 ॥ २॥ पर्याप्ता लघु जोग में, वृद्धि लई जगमान (सु०)
 मध्ये वसु ममये लई , अने छौने जाण (सु०) ॥ ३ ॥
 सहकारी मानसमुखा , कारण रम्य बलेण (सु०) ॥ ४ ॥
 घम्य प्रकारता , सम प्रभून का तेन (सु०) ॥ ५ ॥
 धन रूपो भलो, चैनन संगम भाम (सु०) ॥ ६ ॥
 पद धर्म में , कुशल भवतु अमिगम (सु०) ॥ ७ ॥
 ॥ इति चारित्र्य पद स्तवन ॥

अथ चारित्र्यपद स्तुति ॥

करम अपनय दूर लपाये आरम ध्यान लगारिजी ।
 पारे भायना सुधी भाये सागर पार उमारिजी ।
 राज कुं दूर तजी ने शक्ती संगम पारिजी ।
 चारित्र्य पद निज यन्त्रो आत्म गुण हितकारी जी ।
 इति चारित्र्य पद स्तुति ॥

नवमो गणपद कैलायन्दन ॥

श्रीशिवभादिक सीवेनाथ, तद्वै शिव जाण ।
 अनेरनि पाता, मंग्य गुदश परिमाण ॥ १ ॥
 मित आमां मर्ती, आदिक लज्जि निदान ।
 युग लिंगे, दगन कर्म विमान ॥ २ ॥
 नवमो श्री गणपति , इन्द्रा मंग्य मङ्गल ।
 दूर भवतु भद्रकृ ॥ ३ ॥ इति नव गणपति

अथ तपपद स्मरण ॥

पारम्य भेद भण्णा जिनराजै, पाद्य मणा जगंकारै
 रे(जिय पदत्रेणि)। निण भव मिद्धि मणा वर जाता ।
 जिनवर पिण तपना कर्मा रे ॥१॥ (जि०) समता महिसे
 जिनते भारी, भर्त्ता कर्मण्यु पिणक्षारैरे(जि०) जीव
 वमक में कर्म कर्मोग । दहे तप पावक, वर जोरा रे
 (जि०) ॥२॥ तप तप्यर ना कुसुम हे आदि, देव नर
 नी फलते मिद्धि रे(जि०) पाप सकल हे नमनी राशी,
 तपमान से जाय नार्जी रे(जिय०) ॥३॥ जस्य पसाये
 लहिये वारु । न्दुग्धां स्वार्त्ता जग हिन वारु रे(जि०)
 अनि दुष्कर पृण साधयता हीना, वरम माने वारु कि
 मारे (जि०) ॥४॥ इच्छा गंधन रूपी कहिये, तपपद ही
 येनन बहिये रे (जि०) पाठक हीरधर्म मृषा से । नव
 पद कुशल्य कुं भासे रे ॥ जि० ॥ इति तपपदस्मरण ॥

अथ तपपद स्तुति ॥

इच्छागंधन तप से भाव्या आगम तेजनी स्वार्त्ता
 जी, इच्छा भावने द्वाद्वा दार्त्ता जोग समार्त्ता रात्री
 जी । येनन निजगुण परिणन वेर्त्ता तेहीज तपगुण
 दार्त्ता जी, म्पधि सकलनो कारण देर्त्ता ईश्वर से सुत
 भाव्या जी ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन ॥

सुरमणी सम सद्गु मंत्रमा, नवपद अभिरामी रे
 लोय ॥ अहो नव० ॥ कल्पासागर गुणनिधि, जग
 अंतरजामी रे लोय ॥ अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनजन
 पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी रे लोय ॥ अहो
 लो० ॥ गङ्गा श्रीअरिहंमजी, नम्रु चित्त उह्लासी रे
 लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्षय करी,
 धया सिद्ध सरूपी रे लोय ॥ अहो ध० ॥ सिद्ध नमो
 भवि भाषणी, जे आगम अरूपी रे लोय ॥ अहो जे०
 ॥ ३ ॥ गुण छर्त्तामे सोभता, सुंदर सुखकारी रे लोय
 ॥ अहो सु० ॥ आचारज मीजै पदै, बंदू अविकारी रे
 लोय ॥ अहो ब० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशामी, तप
 द्विविध आधारि रे लोय ॥ अहो त० ॥ चौथे पद पा-
 ठक नमो, संवेग समार्थी रे लोय ॥ अहो सं० ॥ ५ ॥
 पंचाचार पालण परा, पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अहो
 प० ॥ गुणतर्गा मुनि पांचमें, प्रणमं बडभार्गी रे लोय
 ॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनें ओलखै, श्रुत अढा
 आवै रे लोय ॥ अ० श्रु० ॥ छठे गुण दरमण नमो, ध्यातम
 शुभ भावे रे लोय ॥ अ० आ० ॥ ७ ॥ ज्ञान नमो गुण
 सामने, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ स्य पर
 प्रकाशक दिनमर्णा, अज्ञान निवारै रे लोय ॥ अ० अ०

॥ ८ ॥ स्वात्मं चारित्र्यपदं नमो, परमेश्वर नियारी रे
 लोच ॥ अ० प० ॥ स्वांन्यादिक दम धर्मनां, जेह ते अ-
 धिकारी रे लोच ॥ अ० जे० ॥ ६ ॥ नयमे बलि नयः
 पदं नमो, पात्नार्थनर भेदे रे लोच ॥ अ० पा० ॥ पांघवा
 काल अनंमना, जे कर्म उच्छेदे रे लोच ॥ अ० जे०
 ॥ १० ॥ ए नयपदं बहुमानार्थ, जगद्वै शुभ भावै रे
 लोच ॥ अ० प्या० ॥ नृप श्रीपालनार्थ परे, मन वंछित
 पावै रे लोच ॥ अ० म० ॥ ११ ॥ आम् नैष्टुक मासमा,
 नय आंघिल करिये रे लोच ॥ अ० न० ॥ नय आंली
 विधि पुन करी, शिष्यकमला वरिये रे लोच ॥ अ० शि०
 ॥ १२ ॥ मिद्वयकनी बहु परे, पर महिमा कीजे रे लोच
 ॥ अ० व० ॥ श्रीजिनलाम करे मद्रा, अनुपम जस
 कीजे रे लोच ॥ अ० अ० ॥ १३ ॥ इति नयपदं स्तवन ॥

अथ नयपदं स्तवन २. जं ॥ राग मारु ॥

मोक्षनाथक जिनवरु जी, अनिमग जाम अनूप ।
 मिद्व अनन महागुणी जी, परमानंद मरुप । भविक
 मन भारजों रे । भारजों नयपदं प्याम ॥ अ० ॥ १ ॥
 ॥ ए देह ॥ श्री आचारज गणधरु रे, गुण चर्मास
 नियाम । पाठक पदभर मुनिवरु जी, भुत दायक सु-
 विलाम ॥ अ० ॥ २ ॥ सुमति गुपति पर जोभनाजी,
 साधु समभावन । सम्यग्दर्शन सुंदरु जी, ज्ञान प्रकाश

अंगेन ॥ भ० ॥ ३ ॥ संवर सावना चरण छे रे, ता
 वलम विधि दोष । ए नवपदना घ्यानपी रे, निरुपाधि
 सुख होष ॥ भ० ॥ ४ ॥ अमृत सम जिनधर्मनो रे,
 मूल ए नवपद जाण । अविचल अनुभव कारणे जी,
 नितप्रति नमन कल्याण ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति पद ॥

॥ रागप्रभाति ॥ नवपद घ्यान धरोरे ॥ भविता भ० ॥
 मन ध्यान काया कर एकांते, यिरुथा दूर दरीरे ॥ भ०
 भ० ॥ १ ॥ मंत्र जई अरु मंत्र धने रा । इन सप कुं
 विमरी रे । अग्निहोत्रादिक नवपद जपने, पुण्य भंडार
 भरोरे ॥ भ० ॥ २ ॥ छोट मिट्ट मय निध मंगल माया,
 गंगसि मरुज धरोरे । बालचन्द्र गार्भा बलिहारी, शिव
 मरु बीज धरोरे ॥ भ० ॥ ३ ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥ जीया ननु सुजाण, नवपद के गुण गावरे
 ॥ जी० ॥ नवपद मद्रिमा जगमें मोदी, मणभर ता म
 गाव रे ॥ जी० ॥ १ ॥ करम निरुपाधि दूर करण को,
 सुन्दर सुदु वराव रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इनको पुत्र भा-
 वनन करमा, अजगमा सुख गावरे ॥ जी० ॥ ३ ॥ ए
 तिव मरु आगामी शायने, नवपद संग वगावरे ॥ जी०
 ॥ ४ ॥ वरम लमा शिव समगाव रे, ममर ममा सुद
 गावरे ॥ जी० ॥ ५ ॥ निरु ॥

॥ ओ नवपद स्तुति ॥

मम संदन हो सिद्धचक्रपदम् ,
 मन घोटित है शिषराजपदम् ।
 मह मंत्रन में पद मंत्रपदम् ,
 शुभस्नान नमो शुभध्येयपदम् ॥ १ ॥
 अरिहंतपद दुष सिद्धपदम् ,
 गिरि गुरिपदं षड् उमापदम् ।
 गुरु ग्राह दशजानजानपदम् ,
 तपकर्म दलं भग होष अरम ॥ २ ॥
 अतो भण्यजनो नव आम्लकरो ,
 मनुरांग हरी कहै गान्धर्वरी ।
 तुम छान धरो बहुमान करो ,
 भयगर परो शिषराज धरो ॥ ३ ॥
 गच्छ लखनमें मुख्य पूर्ण लियो ,
 विमलेश्वर दलमें माज्य दिगो ।
 जय हो जय हो मुझ प्राण मिगो ,
 कहै भेषमागर आगम लियो ॥ ४ ॥

॥ श्री नवपदस्तुतिः ॥

सिद्धं चक्रं चाहं वन्दे ॥ १ ॥

श्रीगण्येकं पादं नीमि ॥ २ ॥

शास्त्रे चोक्तं कर्तुं भव्याः ॥ ३ ॥

सानिध्यं कुर्वन्तु देवाः ॥ ४ ॥

॥ नवपदं धर्म्यवन्दनानि ॥

उत्पन्नसद्भावात् महोमणां , सप्ताविंशत्य
संदिवाणं । सदेमणाणं दिगमङ्कणाणं, नमो नमो मे
सगा जिगाणं ॥ १ ॥ मिट्टायामाणं सुरमायणं
ममो नमोऽङ्गनगङ्कणाणं । मुरीण दुरीकगङ्कणाणं
नमो नमो मुरममण्डाणं ॥ २ ॥ मुमग्गविग्गामण
राणं , नमो नमो वागगङ्कतराणं । माहण संतावि
संतामाणं, नमो नमो मुद्धदपाद्माणं ॥ ३ ॥ त्रिपुनर
चाइ ललणगाम, नमो नमो निम्ममद्गणाम । मज्ज
संमोहमोहमाम , नमो नमो नाणदियायाम ॥ ४ ॥
भागदियल्लोप सदिगाम, नमो नमो संतामर
गाम । कम्मदुमोम्म नगङ्कणाम, नमो नमो वि
मयायाम ॥ ५ ॥ इह नवपदमिदं लद्धिविज्जापि
नगदियमुराणं ही निवेशामणाम । दिगपद मु
गा । प्पातिर्वादायणं । विज्जण विज्जण नरं , नि
ट्ठनरं, नमामि ॥ ६ ॥ इति व्रजमम् ॥

॥ पुनः द्वितीयव्रजमम् ॥

आद्यविद्वन् उदाह कवि . अयि मुदाह ७९ ।
मेवा हिद अकन्व शास्त्र आनमन्ता नव ॥ १५

आधारज उपजाय माधु , ममता रस धाम । जिन
 भाषिनि सिद्धान्त शुद्ध , अनुभव अभिराम ॥ २ ॥
 पौध पौज गुण संवदाण, नाण चरणा नय शुद्ध । ध्याये
 परमानन्दपद , ए नय पद अविरुद्ध ॥ ३ ॥ इह पर-
 भय आनन्दकन्द , जग माहि प्रसिद्धी । विनामणि
 सम ज्ञान जोग , बहु पुराये लद्धी ॥ ४ ॥ तिहुअण
 सार अपार एह महिमा मनधारां, परिहर पर जेजाल-
 जाल निम एह संभारो ॥ ५ ॥ सिद्धचक्र पद लेखतां ,
 महजानन्द स्वरूप । असृजमय कल्याणनिधि , प्रगटे
 वेगन भूप ॥ ६ ॥ दिनाये संपूर्णम् ॥

॥ श्रीनवपदजी की स्तुति॥

निरुपम सुखदायक जगनायक, लायक शिष्यानि
 गार्भा जी । कल्याणसागर निजगुण आगर , शुभ स-
 मता रस धार्मा जी । श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर,
 ध्याये जे मन रंगेजी । ते मानय श्रीपाल तर्णापरे, पामे
 सुख सुखमंगेजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आधारिज पा-
 ठक , माधु महागुणधर्मजी । दरिखण नाण चरण
 नय उत्तम, नवपद जग जयधर्मा जी ॥ एहनुं ध्यान व-
 र्णां लहिंय, अविचल पद अविनाशीजी । ते सघला
 जिननायक नमिधे , जिण ए नीनि प्रकाशीजी ॥ २ ॥
 आसु मासमनाहार निम बलि, वैत्रकमास जमीशें जी ।

शास्त्रे शोक्तं कर्तुं भव्याः ॥ ३ ॥

सान्निध्यं कुर्यन्तु देवाः ॥ ४ ॥

॥ नवपदैर्न्यवन्दनानि ॥

उत्पन्नमन्त्राणां सद्गोमयाणं , गणपतिर्गण-
पतिर्गणपतिः । सद्गोमयाणं दिगम्बरकणां, नमो नमो
मया जिगाणं ॥ १ ॥ मित्राणामाणं सुरमाणां
नमो नमोऽंगभगवत्कणां । गुरीणां दूरीकृतकणां
नमो नमो गुरममण्डलाणं ॥ २ ॥ सुमन्त्रविशारद-
राणां , नमो नमो गायत्र्युत्तराणं । साहज्यं सद्गो-
मयाणां, नमो नमो मुद्रादयस्त्रयाणं ॥ ३ ॥ त्रिगुण-
पदं लक्षणगणं, नमो नमो निम्नमर्दगणं । भग-
वन्मोक्षमोक्षगणं , नमो नमो नागादिपाशाणं ॥ ४ ॥
सागद्विषयार्थगणं सद्गोमयाणं, नमो नमो सत्त्वम-
याणं । कर्मदुर्माभ्युत्तमगणं, नमो नमो वि-
त्तमयाणं ॥ ५ ॥ इह नवपदमिदं सद्गोमयाणां
गणपतिगणपतिः । निरेष्टागणपतिः । दिगम्बर-
गणपतिः , नागिर्गणपतिः । विजय विजय गणपतिः , त्रि-
दशक नमामि ॥ ६ ॥ इति प्रथमम् ॥

॥ नमः शिवाय ॥

आद्यविष्णु-वराह-कालि-चरित-सुन्दर-
संज्ञा-सिद्ध-चक्र-दश-शालग्राम-मण्डप- ॥ १ ॥

आधारज उवडदाप साधु , समता रस धाम । जिन
 भायिन सिद्धान्त शुद्ध , अनुभव अभिराम ॥ २ ॥
 बोध बीज गुण संरदाप, नाण चरण तव शुद्ध । ध्यावो
 परमानन्दपद , प नव पद अविरुद्ध ॥ ३ ॥ इह पर-
 भव आनन्दकन्द , जग माहि प्रमिर्दी । चितामणि
 सम जाम जोग , यह पुरायै लदी ॥ ४ ॥ तिहुअण
 मार अपार एह मतिमा मनधारो, परिहर पर जंजाल-
 जाल निम एह संभारो ॥ ५ ॥ सिद्धगक पद लेखतां ,
 सहजानन्द स्वरूप । अमृतमय कल्याणनिधि , प्रादे
 नेतन भूष ॥ ६ ॥ दिर्भायं संपूर्णम् ॥

॥ श्रीनवपदजी की स्तुति॥

निरूपम सुखदायक जगनायक, लायक शिष्यानि
 गार्मी जी । करुणासागर निजगुण आगर , शुभ स-
 मता रस धार्मी जी । श्रीसिद्धगक शिरोमणि जिनवर,
 ध्याये जे मन रंगेजी । ते मानव श्रीपाल तर्णीपरे, पामे
 सुख सुरमगेजी ॥ १ ॥ अरिहंन सिद्ध आधारिज पा-
 ठक , साधु महागुणर्यमार्जी । दरिस्सण नाण चरण
 मय उत्तम, नवपद जग जययेमा जी ॥ एहनुं प्यान प-
 रतां लहिंये, अविचल पद अविनार्जीजी । ते सचला
 जिननायक नमिये , जिग ए नानि प्रकाशीजी ॥ २ ॥
 आसु मास मनोहार निम बलि, शत्रकमास जगोरी जी ।

ॐ अमुष्मन्नुपुल्लस्युनाय नमः ॥ मिः

८. अनेमरीगंगुमर्ममुलाव श्री सि०

॥ इति सिद्ध चतुर्गुणाः ॥

एक चोट नेमस्कार का है समस्त दुःखों का नाश होता है ॥ ११ ॥
 का काव्यमय को एक योग्यता दा ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥
 को ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥
 स्थाप को, एक योग्यता कहिके उक्त ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥
 सो को—

अथ आचार्यं दृष्ट्वा गृणाः ॥

१ प्रतिरूपगुणमेशुताय श्रीं आचार्याय नमः ॥

२ सूर्ययत्नेजस्विगुणसंगुताय श्री आ० ॥

३ पुण्यशानागमसंयुताय श्री आ०

४ मधुरवाक्यगुणसंयुताय श्री आ० ॥

५ गर्भायै गुणसंयुताय श्री आ० ॥

६ धैर्यगुणसंयुताय श्री आ० ॥

७ उपदेशयुगसंयुताय श्री आ० ॥

८ अपरिश्राविगुणसंयुताय श्री आ० ॥

०. सौम्यप्रकृतिगुणंभयुताय श्री आ० ॥

१० शीलगुणसंयुक्ताय श्री आ० ॥

११ अविग्रहगुणसंपुताय श्री आ० ॥

१२ अविकथकगुणसंयुताय श्री मां ॥

- ११ अक्षयपल्लवगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १४ प्रसन्नवदनगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १५ क्षमागुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १६ मृदुगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १७ सर्वसंगमुक्तिगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १८ मङ्गलगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १९ द्वादशविधनपगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २० सप्तदशविधसंपन्नगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २१ सत्यव्रतगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २२ गौणगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २३ अकिञ्चनगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २४ ब्रह्मचर्यगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २५ अनित्यभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 २६ अक्षरणभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 २७ संसारस्वरूपभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 २८ एकव्यक्तरूपभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 २९ अन्यव्यक्तरूपभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 ३० अनुविभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 ३१ आश्रयभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 ३२ संधाभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 ३३ निर्जराभाषनाभावकाय श्री आ० ॥

१४ लोकस्वरूपभावनाभावकाय श्री आ० ॥

१५ योगिदुर्लभभावनाभावकाय श्री आ० ॥

१६ धर्मदुर्लभभावनाभावकाय श्री आ० ॥

॥ इति आचार्य षट्त्रिंशत् गुणाः ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २५ गुण लिख्यते ॥

१ श्री आचारांगमृत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उपाध्याय नमः ॥

२ श्री सुयगदांगमृत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

३ श्री ठाणांगमृत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

४ श्री समवायांगमृत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

५ श्री भगवन्तीमृत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

६ श्री ज्ञातामृत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

७ श्री उपामगदसामृत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

८ श्री अंतगदमृत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

९ श्री अणुत्तरोक्वाद्दयमृत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

१० श्री प्रश्नव्याकरणमृत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

११ श्री विपाकमृत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

१२ श्री उत्पादपूर्वपठनगुणयु० ॥

१३ अग्राधलीपूर्वपठनगुणयु० ॥

१४ वीर्यप्रवादपठनगुणयु० ॥

१५ अस्तिप्रवादपूर्वपठनगुणयु० ॥

१६ ज्ञानप्रवादपूर्वपठनगुणयु० ॥

- ११ घनस्पनिकायरक्षकाय श्री सा०
 १२ असकायरक्षकाय श्री सा०
 १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १४ वेद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १५ तेद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १६ चउद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
 १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
 २० शुभभाषनाभावकाय श्री सा०
 २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
 २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
 २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २६ शीतादिद्वारविंशतिपरीमहमहनतन्त्राय श्री सा०
 २७ मरणांतउपसर्गमहनतन्त्राय श्री सा०
 ॥ अथ सम्यक्तत्वे सदसत् भेद लिख्यते ॥
 १ परमार्थसंन्ययनारूपमहर्जनाय नमः ॥
 २ परमार्थजननेयनारूप मह० ॥
 ३ श्लाघ्यदर्शनयर्जनारूप मह० ॥

- ११ घनस्वनिकायरक्षकाय श्री सा०
 १२ असकायरक्षकाय श्री सा०
 १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १४ वेद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १५ त्रैवेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १६ चतुर्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १७ पंचवेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
 १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
 २० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
 २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
 २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
 २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २४ ध्यानगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहस्रतन्त्रराग श्री सा०
 २७ मरणांतउपसर्गसहनतन्त्रराग श्री सा०
 ॥ अथ सम्यक्तत्वे सदसद्व्यभिचारभेद लिख्यते ॥
 १ परमार्थसंग्रहनामपर्याप्तदर्शनाय नमः ॥
 २ परमार्थजन्यमेवनामपर्याप्तदर्शनाय नमः ॥
 ३ दयापन्नदर्शनवर्जननामपर्याप्तदर्शनाय नमः ॥

- ४ कुदर्शनयजनरूप सह० ॥
 ५ शुभ्रपाकरूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैवाह्यरूप सह० ॥
 ८ अर्हतिनयरूप सह० ॥
 ९ सिद्धयिनयरूप सह० ॥
 १० श्रुत्ययिनयरूप सह० ॥
 ११ श्रुतयिनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मयिनयरूप सह० ॥
 १३ साधुदर्शनयिनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्ययिनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्याययिनयरूप सह० ॥
 १६ प्रपन्नयिनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनयिनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनज्ञानारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनसारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थिमन्माद्यादिमारमिति चि० ॥
 २१ चांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
 २२ चांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
 २३ विविचित्रमारूपदृषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुट्टिप्रज्ञामारूपदृषणरहिताय सह० ॥

- ११ घनस्पनिकायरक्षकाय श्री मा०
- १२ असकायरक्षकाय श्री सा०
- १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १४ वेद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
- १५ तेद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
- १६ चउद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
- १७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
- १८ लोभनिग्रहकाय श्री मा०
- १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
- २० शुभभावनाभावकाय श्री मा०
- २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री मा०
- २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
- २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २६ शीतादिद्वाविंशतिपरीमहमहनतत्पराय श्री मा०
- २७ मरणांतउपसर्गमहनतत्पराय श्री मा०

॥ अथ सम्यक्तके सदसद्व भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थसंनयनारूपश्रीमद्दर्शनाय नमः ॥
- २ परमार्थजननेवनारूप सह० ॥
- ३ दृगापक्षदर्शनवर्जनरूप सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सद० ॥
- ५ शुभ्रपारूप सद० ॥
- ६ भर्मरगरूप सद० ॥
- ७ वैराग्यरूप सद० ॥
- ८ अर्हतिनगरूप सद० ॥
- ९ सिद्धविनगरूप सद० ॥
- १० सत्त्वविनगरूप सद० ॥
- ११ श्रुतविनगरूप सद० ॥
- १२ भर्मविनगरूप सद० ॥
- १३ साधुवर्गविनगरूप सद० ॥
- १४ आचार्यविनगरूप सद० ॥
- १५ उपाध्यायविनगरूप सद० ॥
- १६ प्रवचनविनगरूप सद० ॥
- १७ दर्शनविनगरूप सद० ॥
- १८ संसार जिनज्ञानमिति विनवनरूप सद० ॥
- १९ संसार जिनमनसारमिति विनवनरूप सद० ॥
- २० संसार जिनमनस्थितसाध्यादिसारमिति वि० ॥
- २१ तांकादयणरहिताय सद० ॥
- २२ बाह्यादयणरहिताय सद० ॥
- २३ विविचिन्माकदयणरहिताय सद० ॥
- २४ बुद्धिप्रदीपारूपदयणरहिताय सद० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनस्य सद० ॥
 ५ शुभ्रपारस्य सद० ॥
 ६ धर्मरागस्य सद० ॥
 ७ वैपायुस्य सद० ॥
 ८ अर्हतिनस्य सद० ॥
 ९ सिद्धयिनस्य सद० ॥
 १० शून्ययिनस्य सद० ॥
 ११ भुतयिनस्य सद० ॥
 १२ धर्मयिनस्य सद० ॥
 १३ साधुवर्गयिनस्य सद० ॥
 १४ आचार्ययिनस्य सद० ॥
 १५ उपाध्याययिनस्य सद० ॥
 १६ प्रवचनयिनस्य सद० ॥
 १७ दर्शनयिनस्य सद० ॥
 १८ संसारे जिनज्ञानारमिति चिन्तनस्य सद० ॥
 १९ संसारे जिनमनसारमिति चिन्तनस्य सद० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितमार्गादिसारमिति चि० ॥
 २१ लोकादृषणरहिताय सद० ॥
 २२ वांछादृषणरहिताय सद० ॥
 २३ विविचिन्त्यारूपदृषणरहिताय सद० ॥
 २४ बुद्धिप्रज्ञास्यारूपदृषणरहिताय सद० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुभ्ररूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैपाय्वरूप सह० ॥
 ८ अर्हतिनयरूप सह० ॥
 ९ निष्ठविनयरूप सह० ॥
 १० शैत्यविनयरूप सह० ॥
 ११ भुतविनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
 १३ साधुवर्गविनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्यविनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनाज्ञामारमिति चिंतनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनमारमिति चिंतनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितमाध्यादिमारमिति चि० ॥
 २१ शंकादूषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादूषणरहिताय सह० ॥
 २३ विचित्रिमारूपदूषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुहप्रिप्रशंमारूपदूषणरहिताय सह० ॥



- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
- ५ शुभ्रपारूप सह० ॥
- ६ धर्मरागरूप सह० ॥
- ७ वैपाकृत्यरूप सह० ॥
- ८ अर्हतिनयरूप सह० ॥
- ९ सिद्धविनयरूप सह० ॥
- १० नैत्ययिनयरूप सह० ॥
- ११ श्रुतयिनयरूप सह० ॥
- १२ धर्मयिनयरूप सह० ॥
- १३ साधुपार्गयिनयरूप सह० ॥
- १४ आचार्ययिनयरूप सह० ॥
- १५ उपाध्याययिनयरूप सह० ॥
- १६ प्रवचनयिनयरूप सह० ॥
- १७ दर्शनयिनयरूप सह० ॥
- १८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
- १९ संसारे जिनमनसारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
- २० संसारे जिनमनस्थितमाध्यादिसारमिति चि० ॥
- २१ शंकादूषणरहिताय सह० ॥
- २२ कांक्षादूषणरहिताय सह० ॥
- २३ विनिवृत्तिमारूपदूषणरहिताय सह० ॥
- २४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
- ५ शुभ्रपारुष सह० ॥
- ६ धर्मगगरूप सह० ॥
- ७ वैषाद्यनयरूप सह० ॥
- ८ अर्हतिनयरूप सह० ॥
- ९ मित्रविनयरूप सह० ॥
- १० शैत्यविनयरूप सह० ॥
- ११ धृतविनयरूप सह० ॥
- १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
- १३ माधुवर्गविनयरूप सह० ॥
- १४ आचार्यविनयरूप सह० ॥
- १५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
- १६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
- १७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
- १८ संसारे जिनाजामारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
- १९ संसारे जिनमनसारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
- २० संसारे जिनमनस्थितमाध्यादिमारमिति चि० ॥
- २१ शंकादूषणरहिताय सह० ॥
- २२ कांक्षादूषणरहिताय सह० ॥
- २३ विचिक्छिमारूपदूषणरहिताय सह० ॥
- २४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सह० ॥

- ११ यनस्पनिकायरक्षकाय श्री सा०
 - १२ असकायरक्षकाय श्री सा०
 - १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 - १४ वेद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 - १५ तेद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 - १६ चउद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 - १७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 - १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
 - १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
 - २० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
 - २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
 - २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
 - २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 - २४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 - २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 - २६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
 - २७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०
- ॥ अथ सम्यक्तके सदसद भेद लिख्यते ॥
- १ परमार्थसंस्मरणारूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
 - २ परमार्थजन्यमेवमारूप सह० ॥
 - ३ व्यापद्यदर्शनवर्जनरूप सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुश्रूषारूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैषाष्ट्यरूप सह० ॥
 ८ अर्हतिमयरूप सह० ॥
 ९ सिद्धयिनयरूप सह० ॥
 १० चैत्ययिनयरूप सह० ॥
 ११ धृतयिनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मयिनयरूप सह० ॥
 १३ माधुषर्गयिनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्ययिनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्याययिनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनयिनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनयिनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनसारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितमाध्यादिसारमिति चि० ॥
 २१ शंकादूषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादूषणरहिताय सह० ॥
 २३ विनिवृत्तिस्वरूपदूषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुहप्रिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुभ्रपारूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैपायूर्यरूप सह० ॥
 ८ अर्हतिनयरूप सह० ॥
 ९ मिद्धविनयरूप सह० ॥
 १० धैत्यविनयरूप सह० ॥
 ११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
 १३ माधुवर्गविनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्यविनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमगसारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमगस्थितमसाध्यादिमारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 २१ शंकादूषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादूषणरहिताय सह० ॥
 २३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुटप्रिपशंसारूपदूषणरहिताय सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुभ्रपारूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैपाष्टन्यरूप सह० ॥
 ८ अर्हटिनयरूप सह० ॥
 ९ मिट्टयिनयरूप सह० ॥
 १० नित्ययिनयरूप सह० ॥
 ११ भ्रुतयिनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मयिनयरूप सह० ॥
 १३ साधुर्गयिनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्ययिनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्याययिनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनयिनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनयिनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनजामारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनमारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितमाध्यादिमारमिति चि० ॥
 २१ जंकादृषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
 २३ विचिक्लिप्सारूपदृषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुदृष्टिप्रज्ञासारूपदृषणरहिताय सह० ॥

- १ कुदर्शनवर्जनरूप सद० ॥
- २ शुश्रूषारूप सद० ॥
- ३ धर्मरागरूप सद० ॥
- ४ वैवाह्यरूप सद० ॥
- ५ अर्हतिनयरूप सद० ॥
- ६ सिद्धविनयरूप सद० ॥
- ७ चैत्यविनयरूप सद० ॥
- ८ श्रुतविनयरूप सद० ॥
- ९ धर्मविनयरूप सद० ॥
- १० साधुवर्गविनयरूप सद० ॥
- ११ आचार्यविनयरूप सद० ॥
- १२ उपाध्यायविनयरूप सद० ॥
- १३ प्रवचनविनयरूप सद० ॥
- १४ दर्शनविनयरूप सद० ॥
- १५ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतयनरूप सद० ॥
- १६ संसारे जिनममसारमिति चिंतयनरूप सद० ॥
- १७ संसारे जिनमनस्थितमाध्यादिसारमिति चिं० ॥
- १८ शंकादूषणरहिताय सद० ॥
- १९ कांक्षादूषणरहिताय सद० ॥
- २० विचिषि्टसाररूपदूषणरहिताय सद० ॥
- २१ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद० ॥

- ११ घनस्पनिकायरक्षकाय श्री सा०
- १२ घ्रसकायरक्षकाय श्री सा०
- १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १४ त्रेद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १५ तेद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १६ चउद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
- १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
- २० शुभभाषनाभावकाय श्री सा०
- २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
- २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
- २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २६ शीतादिद्व्याविशतिपरीमहसहनतत्पराय श्री सा०
- २७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सदसत् भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थसंन्यनारूपश्रीसहर्षनाय नमः ॥
- २ परमार्थजनसेवनारूप सह० ॥
- ३ दयापन्नदर्शनयर्जनरूप सह० ॥

- १ बुद्धदर्शनवर्जनरूप सद० ॥
- २ शुश्रूषारूप सद० ॥
- ३ धर्मरागरूप सद० ॥
- ४ वैपायनरूप सद० ॥
- ५ अर्हट्टिनरूप सद० ॥
- ६ मिट्टविनगरूप सद० ॥
- ७ नैत्यविनगरूप सद० ॥
- ८ श्रुतविनगरूप सद० ॥
- ९ धर्मविनगरूप सद० ॥
- १० साधुवर्गविनगरूप सद० ॥
- ११ आचार्यविनगरूप सद० ॥
- १२ उपाध्यायविनगरूप सद० ॥
- १३ प्रवचनविनगरूप सद० ॥
- १४ दर्शनविनगरूप सद० ॥
- १५ संसारे जिनजामारमिति चिंतनरूप सद० ॥
- १६ संसारे जिनमनसारमिति चिंतनरूप सद० ॥
- १७ संसारे जिनमनस्थितसाध्यादिमारमिति चिं० ॥
- १८ शंकादूषणरहिताय सद० ॥
- १९ कांक्षादूषणरहिताय सद० ॥
- २० विनिवृत्तिस्माररूपदूषणरहिताय सद० ॥
- २१ बुद्धप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद० ॥

- ११ वनगविद्यागम्यकाय श्री सा०
- १२ ग्रमकायगम्यकाय श्री सा०
- १३ एकेन्द्रियजीवगम्यकाय श्री सा०
- १४ चेद्वेन्द्रियजीवरगम्यकाय श्री सा०
- १५ त्रैवेन्द्रियजीवरगम्यकाय श्री सा०
- १६ चतुर्वेन्द्रियजीवरगम्यकाय श्री सा०
- १७ पंचवेन्द्रियजीवरगम्यकाय श्री सा०
- १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
- १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
- २० शुभभाषनाभावकाय श्री सा०
- २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
- २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
- २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २६ शीतादिद्वाविंशतिगरीमहसहनतत्पराय श्री सा०
- २७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सदसत् भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
- २ परमार्थज्ञानसेवनारूप सद० ॥
- ३ दयापक्षदर्शनवर्जितरूप सद० ॥

- ८ कुदर्शनवर्जनरूप सद० ॥
- ९ शुभ्रपारूप सद० ॥
- १० धर्मरागरूप सद० ॥
- ११ वैपाकृत्तरूप सद० ॥
- १२ अर्हतिनयरूप सद० ॥
- १३ सिद्धचिन्मयरूप सद० ॥
- १४ नैत्यचिन्मयरूप सद० ॥
- १५ भ्रुतचिन्मयरूप सद० ॥
- १६ धर्मचिन्मयरूप सद० ॥
- १७ साधुवर्गचिन्मयरूप सद० ॥
- १८ आचार्यचिन्मयरूप सद० ॥
- १९ उपाध्यायचिन्मयरूप सद० ॥
- २० प्रवचनचिन्मयरूप सद० ॥
- २१ दर्शनचिन्मयरूप सद० ॥
- २२ संसारे जिनज्ञानारमिति चिन्मयरूप सद० ॥
- २३ संसारे जिनमनसारमिति चिन्मयरूप सद० ॥
- २४ संसारे जिनमनस्थितमाध्यादिमारमिति चि० ॥
- २५ शंकादूषणरहिताय सद० ॥
- २६ कांक्षादूषणरहिताय सद० ॥
- २७ विनिविन्मसारूपदूषणरहिताय सद० ॥
- २८ कुदृष्टिप्रज्ञासारूपदूषणरहिताय सद० ॥

- ११ घनस्वनिकायरक्षकाय श्री मा०
- १२ ग्रसकायरक्षकाय श्री सा०
- १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १४ वेदंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
- १५ तेदंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
- १६ षडदंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
- १७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
- १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
- १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
- २० शुभभाषनाभावकाय श्री सा०
- २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री मा०
- २२ संजययोगयुक्ताय श्री मा०
- २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २६ शीतादिद्वाविशनिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
- २७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री मा०

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थसंन्यवनारूपश्रीमदर्शनाय नमः ॥

२ परमार्थजनसंन्यवनारूप मह० ॥

३ दयापद्मदर्शनयर्जनरूप मह० ॥

- ६ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ७ शुभ्रपारूप सह० ॥
 ८ धर्मरागरूप सह० ॥
 ९ वैपाय्वरूप सह० ॥
 १० अर्हतिनयरूप सह० ॥
 ११ सिद्धविनयरूप सह० ॥
 १२ चैत्यविनयरूप सह० ॥
 १३ भूतविनयरूप सह० ॥
 १४ धर्मविनयरूप सह० ॥
 १५ साधुवर्गविनयरूप सह० ॥
 १६ आचार्यविनयरूप सह० ॥
 १७ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
 १८ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
 १९ दर्शनविनयरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनाजामारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 २१ संसारे जिनमनमारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 २२ संसारे जिनमनस्थितसाध्यादिमारमिति चिं० ॥
 २३ शंकादूषणरहिताय सह० ॥
 २४ कांक्षादूषणरहिताय सह० ॥
 २५ विचिक्छिन्नमारूपदूषणरहिताय सह० ॥
 २६ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सह० ॥

१. धनसन्निपातशक्त्याय श्री मा०
 २. प्रसन्नपक्षकाय श्री मा०
 ३. एकेन्द्रियजीवशक्त्याय श्री मा०
 ४. वेद्वेन्द्रियजीवशक्त्याय श्री मा०
 ५. तैव्वेन्द्रियजीवशक्त्याय श्री मा०
 ६. षड्वेन्द्रियजीवशक्त्याय श्री मा०
 ७. पञ्चेन्द्रियजीवशक्त्याय श्री मा०
 ८. लोभनिग्रहकाय श्री मा०
 ९. क्षमागुणयुक्ताय श्री मा०
 १०. शुभभाषनाभावकाय श्री मा०
 ११. प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री मा०
 १२. संजमयोगयुक्ताय श्री मा०
 १३. मनोगुप्तियुक्ताय श्री मा०
 १४. वचनगुप्तियुक्ताय श्री मा०
 १५. कायगुप्तियुक्ताय श्री मा०
 १६. शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री मा०
 १७. मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री मा०
- ॥ अथ सम्यक्तके सदसठ भेद लिख्यते ॥
- परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसहर्जनाय नमः ॥
- परमार्थज्ञानसेवनारूप सह० ॥
- व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुश्रूषारूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैद्यावृत्तरूप सह० ॥
 ८ अर्हट्टिनयरूप सह० ॥
 ९ मिद्वयिनयरूप सह० ॥
 १० नैत्ययिनयरूप सह० ॥
 ११ श्रुतयिनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मयिनयरूप सह० ॥
 १३ साधुवर्गयिनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्ययिनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्याययिनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनयिनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनयिनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनज्ञानारमिति यिनयरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनसारमिति यिनयरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितमसाध्यादिसारमिति नि० ॥
 २१ जंकादृपणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादृपणरहिताय सह० ॥
 २३ विचिकित्सारूपदृपणरहिताय सह० ॥
 २४ कुहट्टिप्रजंसारूपदृपणरहिताय सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुश्रूषारूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैषाष्ट्यरूप सह० ॥
 ८ अहंठिनयरूप सह० ॥
 ९ मिद्वयिनयरूप सह० ॥
 १० पैत्ययिनयरूप सह० ॥
 ११ श्रुतयिनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मयिनयरूप सह० ॥
 १३ साधुवर्गातिनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्ययिनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्याययिनयरूप सह० ॥
 १६ प्रयत्नयिनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनयिनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनज्ञासारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनसारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थिममाध्यादिसारमिति चि० ॥
 २१ शंकादृषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
 २३ विचित्रिस्मारूपदृषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदृषणरहिताय सह० ॥

- ११ घनस्पनिकायरक्षकाय श्री सा०
 १२ असकायरक्षकाय श्री सा०
 १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १४ वेदंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
 १५ तेदंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
 १६ चउदंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
 १७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
 १८ लोभनियग्रहाय श्री सा०
 १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
 २० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
 २१ मनिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री मा०
 २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
 २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २६ शीतादिद्वयाविशनिपरीमहमहनतत्पराय श्री मा०
 २७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री मा०

॥ अथ सम्यक्तके सदसद्व भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थमन्त्रवनाख्यश्रीमद्दर्शनाय नमः ॥
 २ परमार्थजन्मेवनाख्य मह० ॥
 ३ दयापद्मदर्शनवर्जनख्य मह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुश्रूषारूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैषाद्युत्तररूप सह० ॥
 ८ अर्हट्टिनयरूप सह० ॥
 ९ सिद्धयिनयरूप सह० ॥
 १० धित्ययिनयरूप सह० ॥
 ११ भुतयिनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मयिनयरूप सह० ॥
 १३ साधुवर्गयिनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्ययिनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्याययिनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनयिनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनयिनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनाज्ञानारमिति चित्तवनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनसारमिति चित्तवनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितमाप्णादिसारमिति चि० ॥
 २१ ज्ञांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
 २३ विमिबिम्भारूपदृषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुट्टिप्रज्ञारूपदृषणरहिताय सह० ॥

- ११ घनस्पर्शिकाग्रक्षकाय श्री सा०
- १२ प्रसक्तग्रक्षकाय श्री सा०
- १३ एकैन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १४ वेद्वैन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १५ तैद्वैन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १६ चतुर्वैन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १७ पञ्चैन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
- १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
- २० शुभभायनाभावकाय श्री सा०
- २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
- २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
- २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहस्रनतत्पराय श्री सा०
- २७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सदसठ भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
- २ परमार्थज्ञानसेवनारूप सह० ॥
- ३ दयापक्षदर्शनवर्जनरूप सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सद० ॥
- ५ शुद्धपारूप सद० ॥
- ६ धर्मरागरूप सद० ॥
- ७ वैषाण्वरूप सद० ॥
- ८ अर्हट्टिनयरूप सद० ॥
- ९ सिद्धविनयरूप सद० ॥
- १० सत्यविनयरूप सद० ॥
- ११ श्रुतविनयरूप सद० ॥
- १२ धर्मविनयरूप सद० ॥
- १३ साधुवर्गविनयरूप सद० ॥
- १४ आचार्यविनयरूप सद० ॥
- १५ उपाध्यायविनयरूप सद० ॥
- १६ प्रवचनविनयरूप सद० ॥
- १७ दर्शनविनयरूप सद० ॥
- १८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिन्तनरूप सद० ॥
- १९ संसारे जिनमगसारमिति चिन्तनरूप सद० ॥
- २० संसारे जिनमगस्थिमसाध्यादिसारमिति चि० ॥
- २१ शंकादूषणरहिताय सद० ॥
- २२ कांक्षादूषणरहिताय सद० ॥
- २३ विचित्रिस्मारूपदूषणरहिताय सद० ॥
- २४ कुरत्प्रियगोसारूपदूषणरहिताय सद० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सद० ॥
 ५ शुद्धरूपरूप सद० ॥
 ६ धर्मरागरूप सद० ॥
 ७ वैपाद्यरूप सद० ॥
 ८ अर्हतिनयरूप सद० ॥
 ९ सिद्धचिन्तनरूप सद० ॥
 १० धर्मचिन्तनरूप सद० ॥
 ११ भुतचिन्तनरूप सद० ॥
 १२ धर्मचिन्तनरूप सद० ॥
 १३ साधुवर्गचिन्तनरूप सद० ॥
 १४ आचार्यचिन्तनरूप सद० ॥
 १५ उपाध्यायचिन्तनरूप सद० ॥
 १६ प्रवचनचिन्तनरूप सद० ॥
 १७ दर्शनचिन्तनरूप सद० ॥
 १८ संसारे जिनाज्ञामारमिति चिन्तनरूप सद० ॥
 १९ संसारे जिनमनसारमिति चिन्तनरूप सद० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितसाध्यादिमारमिति चि० ॥
 २१ शंकादूषणरहिताय सद० ॥
 २२ कांक्षादूषणरहिताय सद० ॥
 २३ विचित्रिमारूपदूषणरहिताय सद० ॥
 २४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद० ॥

- ११ घनरूपनिकायरक्षकाय श्री मा०
- १२ असकायरक्षकाय श्री सा०
- १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १४ वेद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १५ तद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
- १६ चतुर्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
- १७ पंचवेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
- १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
- २० शुभभाषनाभावकाय श्री मा०
- २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री मा०
- २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
- २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
- २७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री मा०

॥ अथ सम्यक्तके सदसद्व भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थसंनवनारूपश्रीमद्वर्जनाय नमः ॥
- २ परमार्थजनसेवनारूप सह० ॥
- ३ दयापत्रद्वर्जनवर्जनरूप सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुश्रूषारूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैषाद्युत्तररूप सह० ॥
 ८ अर्हतिनयरूप सह० ॥
 ९ सिद्धयिनयरूप सह० ॥
 १० क्षिप्तयिनयरूप सह० ॥
 ११ श्रुतयिनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मयिनयरूप सह० ॥
 १३ साधुवर्गयिनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्ययिनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्याययिनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनयिनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनयिनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनाज्ञामारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनसारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितमाध्यादिमारमिति चि० ॥
 २१ शंकादूषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादूषणरहिताय सह० ॥
 २३ विधिविद्मरूपदूषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
- ५ शुश्रूषारूप सह० ॥
- ६ धर्मरागरूप सह० ॥
- ७ वैपायूर्यरूप सह० ॥
- ८ अर्हद्विनयरूप सह० ॥
- ९ सिद्धविनयरूप सह० ॥
- १० चैत्यविनयरूप सह० ॥
- ११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
- १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
- १३ साधुयर्गविनयरूप सह० ॥
- १४ आचार्यविनयरूप सह० ॥
- १५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
- १६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
- १७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
- १८ संसारे जिनाज्ञामारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
- १९ संसारे जिनममसारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
- २० संसारे जिनमनस्थिममाध्यादिमारमिति चि० ॥
- २१ शंकादृषणरहिताय सह० ॥
- २२ कांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
- २३ विचित्रिस्मारूपदृषणरहिताय सह० ॥
- २४ कुदृष्टिप्रज्ञास्मारूपदृषणरहिताय सह० ॥

- ११ धनस्पनिकायरक्षकाय श्री सा०
- १२ असकायरक्षकाय श्री सा०
- १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १४ वेदंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १५ तेदंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १६ चउदंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
- १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
- २० शुभभाषनाभावकाय श्री सा०
- २१ प्रनिलेखनादिप्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
- २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
- २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
- २७ सरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थसंनयनारूपश्रीमदर्शनाय नमः ॥
- २ परमार्थज्ञानमेवमारूप सद० ॥
- ३ दयापद्मदर्शनवर्जनरूप सद० ॥

४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥

५ शुभ्रपारूप सह० ॥

६ धर्मरागरूप सह० ॥

७ वैषादृश्यरूप सह० ॥

८ अर्हेटिनयरूप सह० ॥

९ मिद्विचिनयरूप सह० ॥

१० चैत्यविनयरूप सह० ॥

११ श्रुतविनयरूप सह० ॥

१२ धर्मविनयरूप सह० ॥

१३ साधुवर्गविनयरूप सह० ॥

१४ आचार्यविनयरूप सह० ॥

१५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥

१६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥

१७ दर्शनविनयरूप सह० ॥

१८ संमारे जिनाज्ञामारमिति चिन्तनरूप सह०

१९ संमारे जिनमनमारमिति चिन्तनरूप सह०

२० संमारे जिनमनस्थितमाध्यादिसारमिति चि०

२१ शंकादृषणरहिताय सह० ॥

२२ कांक्षादृषणरहिताय सह० ॥

२३ विचिचिन्सारूपदृषणरहिताय सह० ॥

२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदृषणरहिताय सह० ॥

२२. तत्परिचयभूषणरहिताय मह० ॥
 २३. प्रवचनप्रभावकरूप सह० ॥
 २७. धर्मकथाप्रभावकरूप सह० ॥
 २८. चादिप्रभावकरूप सह० ॥
 २९. नैमित्तिकप्रभावकरूप सह० ॥
 ३०. तपस्विप्रभावकरूप सह० ॥
 ३१. प्रज्ञात्पादिकविद्याभूतप्रभावक मह० ॥
 ३२. धर्माभंजनादिसिद्धप्रभावक सह० ॥
 ३३. कविप्रभावकरूप सह० ॥
 ३४. जिनशासने कौशलता भूषण स० ॥
 ३५. प्रभावनाभूषणरूप स० ॥
 ३६. तीर्थसेवाभूषणरूप स० ॥
 ३७. स्तौर्पनाभूषणरूप स० ॥
 ३८. जिनशासने भक्तिभूषणरूप स० ॥
 ३९. उपशमगुणरूप स० ॥
 ४०. संवेगगुणरूप स० ॥
 ४१. निर्वेदगुणरूप स० ॥
 ४२. अनुकंपागुणरूप स० ॥
 ४३. आस्तिक्यगुणरूप सह० ॥
 ४४. परतीर्थकादिवन्दनवर्जनरूप सह० ॥
 ४५. परतीर्थकादिनमस्कारवर्जनरूप सह० ॥

- ४६ पर्माधिंकादिआष्टापयर्जनरूप स० ॥
 ४७ पर्माधिंकादिमंलापयर्जन रूप श्रीस० ॥
 ४८ पर्माधिंकादि अजनादिदानयर्जन श्रीस० ॥
 ४९, पर्माधिंकादि मंथपुष्पादिप्रेषणयर्जन श्रीस० ॥
 ५० गणाभिदंगाकारयुक्तश्रीस० ॥
 ५१ गणाभियोगाकारयुक्तश्रीस० ॥
 ५२ पालभियोगाकारयुक्त श्री स० ॥
 ५३ सुगभियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥
 ५४ कांनारपृथ्वाकारयुक्त श्रीस० ॥
 ५५ गुम्फनिघ्नकारयुक्त श्रीस० ॥
 ५६ सप्ततयचारित्रधर्मस्य मूलमिति चिन्तनरूप स० ॥
 ५७ चारित्रधर्मस्य पुरम्पद्वारमिति चिन्तन श्री स० ॥
 ५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिप्रानमिति चिन्तनरूप स० ॥
 ५९ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिन्तनरूप स० ॥
 ६० चारित्रधर्मस्य धारकमिति चिन्तनरूप स० ॥
 ६१ चारित्रधर्मस्य भाजनमिति चिन्तनरूप स० ॥
 ६२ चारित्रधर्मस्य सतिभमिति चिन्तनरूप स० ॥
 ६३ अतिजोष इति अट्टानस्थानयुक्त श्री स० ॥
 ६४ स च जोषां निग्याहति अट्टानस्थानयुक्त स० ॥
 ६५ स च जोषः कर्माणि करोमीति अट्टानस्थानयुक्त स०
 ६६ स च जोषः कृतकर्मोणि वेदयमीति अट्टानस्थानयुक्तं

६७ जावस्यास्ति निर्व्वानमिति श्रद्धानस्थानयुक्तश्रीस०

६८ अस्ति पुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानयुक्तश्रीस०

इमी तस्य प्रथमं ममात्मनः देना

अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

१ स्पर्शनेन्द्रियव्यंजनावग्रहमनिज्ञानाय नमः ॥

२ रसनेन्द्रियव्यंजनावग्रहमनिज्ञानाय नमः ॥

३ घ्राणेन्द्रियव्यंजनावग्रह मति० ॥

४ श्रोत्रेन्द्रियव्यंजनावग्रह मति० ॥

५ स्पर्शनेन्द्रियअर्थावग्रह मति० ॥

६ रसनेन्द्रियअर्थावग्रह मति० ॥

७ घ्राणेन्द्रियअर्थावग्रह मति० ॥

८ चक्षुरिन्द्रियअर्थावग्रह मति० ॥

९ श्रोत्रेन्द्रियअर्थावग्रह मति० ॥

१० मन इन्द्रिय अर्थावग्रह मति० ॥

११ स्पर्शनेन्द्रिय ईहा मति० ॥

१२ रसनेन्द्रिय ईहा मति० ॥

१३ घ्राणेन्द्रिय ईहा मति० ॥

१४ चक्षुरिन्द्रिय ईहा मति० ॥

१५ श्रोत्रेन्द्रिय ईहा मति० ॥

१६ मन इन्द्रिय ईहा मति० ॥

१७ स्पर्शनेन्द्रिय अपाय मति०

१८ रसनेन्द्रिय अपाय मति० ॥

૧૦. ગ્રાણેન્દ્રિય અપાય મનિ૦ ॥
૨૦. વધુરિન્દ્રિય અપાય મનિ૦ ॥
૨૧. શ્રોત્રેન્દ્રિય અપાય મનિ૦ ॥
૨૨. મન ઇન્દ્રિય અપાય મનિ૦ ॥
૨૩. સ્પર્શનેન્દ્રિયધારણા મનિ૦ ॥
૨૪. રસનેન્દ્રિયધારણા મનિ૦ ॥
૨૫. ગ્રાણેન્દ્રિયધારણા મનિ૦ ॥
૨૬. વધુરિન્દ્રિયધારણા મનિ૦ ॥
૨૭. શ્રોત્રેન્દ્રિયધારણા મનિ૦ ॥
૨૮. મન ઇન્દ્રિયધારણા મનિ૦ ॥
૨૯. અક્ષરશ્રુતજ્ઞાનાય નમઃ ॥
૩૦. અનક્ષરશ્રુતજ્ઞાનાય નમઃ ॥
૩૧. સંજિ શ્રુતજ્ઞાનાય નમઃ ॥
૩૨. અસંજિ શ્રુતજ્ઞા૦ ॥
૩૩. સમ્યક્ શ્રુતજ્ઞા૦
૩૪. મિથ્યાશ્રુતજ્ઞા૦ ॥
૩૫. સાદિશ્રુતજ્ઞાનાય નમઃ ॥
૩૬. અનાદિશ્રુતજ્ઞાનાય નમઃ ॥
૩૭. સપર્યયસનિશ્રુત૦ ॥
૩૮. અપર્યયસનિશ્રુત૦ ॥
૩૯. ગમિકશ્રુત૦ ॥

४० अगमिकश्रुत० ॥

४१ अंगविष्टश्रुत० ॥

४२ अनंगप्रविष्टश्रुत० ॥

४३ अनुगामि अवधिजानाय नमः ॥

४४ अननुगामि अवधि० ॥

४५ पृष्ठमान अवधि० ॥

४६ हीयमान अवधि० ॥

४७ प्रणिपाति अवधि०

४८ अप्रणिपाति अवधि० ॥

४९ शान्तुमनिमनःपर्ययज्ञानाय नमः ॥

५० विपुलमनिमनःपर्ययज्ञा० ॥

५१ लोकालोकप्रकाशकश्रीकेशलज्जानाय नमः ॥

॥ इति ज्ञानपदके ५१ भेद ॥

इमं तदहं इति ज्ञानं ॥ ५१ ॥ ५१ ॥

अथ चारित्र्यपदके ७० भेद लिख्यते ॥ —

१ प्राणानिदानशिरमणरूपचारित्र्याय नमः ॥

२ मृदावादशिरमणरूपचारि० ॥

३ अदनादानशिरमणरूपचारि० ॥

४ मेघुनशिरमणरूपचारि० ॥

५ नग्नशिरमणरूपचारि० ॥

६ श्रमाधर्मरूपचारि० ॥

जाज्ञधर्मरूपचारि० ॥

सुसाधर्मरूपचारि० ॥

निधर्मरूपचारि०

नरोपधर्मरूपचारि०

संपदधर्मरूपचारि० ॥

सग्यधर्मचारि० ॥

जाज्ञधर्मरूपचारि० ॥

अहिंसनधर्मरूपचारि० ॥

संधधर्मरूपचारि० ॥

पृथ्वीरक्षासंपदचारि० ॥

उदगरक्षासंपदचारि० ॥

तेजस्रासंपदचारि० ॥

वायुर्क्षासंपदचारि० ॥

वनस्पतिरक्षासंपदचारि० ॥

घेहन्दिग्रक्ष्मासंपदचारि० ॥

मेहन्दिग्रक्ष्मासंपदचारि० ॥

अउहन्दिग्रक्ष्मासंपदचारि० ॥

संसेन्दिग्रक्ष्मासंपदचारि० ॥

अजापरक्ष्मासंपदचारि० ॥

मेह्नासंपदचारि० ॥

उपेक्ष्मासंपदचारि० ॥

- ० अगमिकश्रुत० ॥
 १ अंगविष्टश्रुत० ॥
 २ अनेगप्रविष्टश्रुत० ॥
 ३ अतुगामि अवधिजानाग नमः ॥ १.
 ४ अननुगामि अवधि० ॥
 ५ वर्द्धमान अवधि० ॥
 ६ क्षीयमान अवधि० ॥
 ७ प्रनिपाति अवधि०
 ८ अप्रनिपाति अवधि० ॥
 ९ बाहुमनिमनःपर्यवजानाग नमः ॥
 १० विपुलमनिमनःपर्यवजा० ॥
 ११ लोकाग्रोक्तप्रकाशकर्त्राकेवलजानाग नमः ॥
 ॥ इति ज्ञानपटके २२ भेद ॥

इमं नाद इति न

- अथ चारित्र्यपटके ७० भेद लिख्यते ॥ -
 प्राणानिधानविरमगरूपचारित्र्याय नमः ॥
 मृदावाद्यविरमगरूपचारि० ॥
 अदनादानविरमगरूपचारि० ॥
 मृगुनविरमगरूपचारि० ॥
 गरिष्ठविरमगरूपचारि० ॥
 श्रमायमरूपचारि० ॥

- आर्जयधर्मरूपचारि० ॥
 मृदुताधर्मरूपचारि० ॥
 मुक्तिधर्मरूपचारि०
 ० लोपोधर्मरूपचारि०
 १ संगमधर्मरूपचारि० ॥
 २ मध्यधर्मचारि० ॥
 ३ ज्ञानधर्मरूपचारि० ॥
 ४ अहिंसनधर्मरूपचारि० ॥
 ५ संभधर्मरूपचारि० ॥
 ६ पृथ्वीरक्षासंगमचारि० ॥
 ७ उद्गरक्षसंगमचारि० ॥
 ८ तैडरक्षसंगमचारि० ॥
 ९ वातुरक्षसंगमचारि० ॥
 १० धमपनिरभ्रासंगमचारि० ॥
 ११ वेङ्गिद्रगरभ्रासंगमचारि० ॥
 १२ तैङ्गिद्रगरभ्रासंगमचारि० ॥
 १३ चङ्गिद्रगरभ्रासंगमचारि० ॥
 १४ पंचेन्द्रिगरभ्रासंगमचारि० ॥
 १५ अर्जायक्षसंगमचारि० ॥
 १६ वेङ्गासंगमचारि० ॥
 १७ उपेक्षासंगमचारि० ॥

- ८ अतिरिक्तवस्त्रमृक्तादिपचनवागरूपसंयमचा० ॥
 ९ प्रमार्जनरूपसंयमचारि० ॥
 १० मनःसंयमचारि० ॥
 १ याक्संयमचारि० ॥
 २ कायासंयमचारि० ॥
 ३ आचार्यवैयाघृत्यरूपसंयमचारि० ॥
 ४ उपाध्यायवैयाघृत्यरूपसंयमचारि० ॥
 ५ तपस्विवैयाघृत्यरूपसंयमचारि० ॥
 ६ लघुशिष्यादिवैयाघृत्यरूपसंयमचारि० ॥
 ७ ग्लानसाधुवैयाघृत्यरूपसंयमचारि० ॥
 ८ साधुवैयाघृत्यरूपचारि० ॥
 ९ समणोपासकवैयाघृत्यरूपचारि० ॥
 १० संघवैयाघृत्यरूपचारि० ॥
 १ कुलवैयाघृत्यरूपचारि० ॥
 २ गणवैयाघृत्यरूपचारि० ॥
 ३ पशुपंडगादिरहिनवसुनिवमनब्रह्मगुप्तिचारि० ॥
 ४ स्त्रीहास्यादिविकथावर्जनब्रह्मगुप्तिचारि० ॥
 ५ स्त्रीमासनवर्जनब्रह्मगुप्तिचारि० ॥
 ६ स्त्रीअंगोपांगनिर्वाक्षणवर्जनचारि० ॥
 ७ कूडपंजरसहिनस्त्रीहावभावश्रवणवर्जनचारि० ॥
 ८ पूर्वस्त्रीसंभोगचिंतनवर्जनब्रह्मगुप्तिचारि० ॥

- ४६ अतिसरसआहारवर्जनद्राक्षगुप्तिचारि० ॥
 ४७ अतिआहारकरणावर्जनद्राक्षगुप्तिचारि० ॥
 ४८ अंगविभूषावर्जनद्राक्षगुप्तिचारि० ॥
 ४९ अणुमणनपोरूपचारि० ॥
 ५० उणोर्दमनपोरूपचारि० ॥
 ५१ धूमिसंक्षेपरूपचारि० ॥
 ५२ रसन्धागतपोरूपचारि० ॥
 ५३ कायस्लेजनपोरूपचारि० ॥
 ५४ मंलेखणामपोरूपचारि० ॥
 ५५ प्रायच्छित्ततपोरूपचारि० ॥
 ५६ विनयनपोरूपचारि० ॥
 ५७ विद्याधृम्यनपोरूपचारि० ॥
 ५८ सज्जापनपोरूपचारि० ॥
 ५९ ध्यानतपोरूपचारि० ॥
 ६० उपसर्गनपोरूपचारि० ॥
 ६१ अनेमजानमंयुक्तचारि० ॥
 ६२ अनेमदर्शनमंयुक्तचारि० ॥
 ६३ अनेमचारित्रमंयुक्तचारि० ॥
 ६४ पांथनिघटकरणचारि० ॥
 ६५ माननिघटकरणचारि० ॥
 ६६ भाषानिघटकरणचारि० ॥

७० लोभनिग्रहकरणचारि० ॥

अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ पायस्कृधिननपमे नमः ॥

२ इत्यग्नपोभेदतपसे नमः ॥

३ पाण्डुगोदर्शितपभेदनपमे नमः ॥

४ अभ्यंरउगोदर्शितपभेदनपमे नमः ॥

५ द्रव्यतपवृत्तिसंक्षेपतपभेद न० ॥

६ श्लेघ्रतपवृत्तिसंक्षेपतपभेद न० ॥

७ कालतपवृत्तिसंक्षेपतपभेद न० ॥

८ नायतपवृत्तिसंक्षेपतपभेद न० ॥

९ कायक्लेषतपभेद न० ॥

१० रसत्यागतपभेद न० ॥

११ इन्द्रियकषाययोगविषयकसंतीननातपमे नमः

१२ आशुगुणदृक्कादियज्जितस्थानश्रयस्थितसंतीनना न०

१३ आशुगुणप्रायश्चित्त न०

१४ प्रतिक्रमगुणप्रायश्चित्त न०

१५ मिश्रगुणप्रायश्चित्त न०

१६ विवेकगुणप्रायश्चित्त न०

१७ उपसर्गगुणप्रायश्चित्त न०

१८ तपगुणप्रायश्चित्त न०

१९ भेदगुणप्रायश्चित्त न०

- मूलप्रायश्चित्त त०
 अणवस्थितप्रायश्चित्त त०
 पारंक्षियप्रायश्चित्त त०
 ज्ञानविनयरूप त०
 दर्शनविनयरूप त०
 स्मृतिविनयरूप त०
 गुणदिकमनविनयरूप त० ॥
 धर्मविनयरूप त०
 कायविनयरूप त० ॥
 उपचारविनयरूप त० ॥
 आचार्यवेद्यावयव त० ॥
 उपाध्यायवेद्यावयव त० ॥
 साधुवेद्यावयव त० ॥
 तपस्विवेद्यावयव त० ॥
 लघुजिज्ञासुवेद्यावयव त० ॥
 ग्लानसाधुवेद्यावयव त० ॥
 भ्रमणोत्तमवेद्यावयव त० ॥
 संघवेद्यावयव त० ॥
 कुलवेद्यावयव त० ॥
 गणवेद्यावयव त० ॥
 धारणातपने ममः ॥

४१ वृच्छनातपसे नमः ॥

४२ परावर्त्तनातपसे नमः ॥

४३ अनुप्रेक्षनातपसे नमः ॥

४४ धर्मकथातपसे नमः ॥

४५ आर्त्तध्याननिवृत्त त० ॥

४६ रीद्रध्याननिवृत्त त० ॥

४७ धर्मध्यानचिन्तन त० ॥

४८ शुक्लध्यानचिन्तन त० ॥

४९ पात्यउपसर्गनपसे नमः ॥

५० अभ्यन्तरउपसर्गनपसे नमः ॥ इतिर्व्याश्रमनपभेदः

इमं तद् ५० नमस्कृत्य कुर्यात्

अथ पञ्च कल्याणकी दीप

॥ कार्तिक-शुक्लपक्ष-कान्तिक यदी ॥

५ शम्भुनाथजिनाय उग्रप्रेमकेयलज्जानाय नमः

१५ अग्निष्टनेमिनाथजिनाय वृषभनाथाय नमः

१६ पद्मनाभजिनाय ज्ञानजन्मने नमः

१७ पद्मनाभजिनाय गृहीतदीक्षाया नमः

१८ महार्वाजिनाय मोक्षगन्धाय नमः

कार्तिक-शुक्लपक्ष-कान्तिक सुदी ॥

१ सुविनाथजिनाय उग्रप्रेमकेयलज्जानाय नमः

१५ अग्निनाथजिनाय वृषभनाथाय नमः

मार्गशीर्ष-शुक्ल-पक्ष-मिगसर वदी ।

- सुविधिनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
 सुविधिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाया नमः
 महावीरजिनाय गृहीतदीक्षाया नमः
 पद्मप्रभजिनाय मोक्षगताय नमः
 ॥ मार्गशीर्ष-शुक्ल-पक्ष-मिगसर सुदी ॥
 अरनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
 अरनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
 अरनाथजिनाय गृहीतदीक्षाया नमः
 महिनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
 महिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाया नमः
 महिनाथजिनाय उत्पद्यकेवलज्ञानाय नमः
 अरिष्टनेमिजिनाय उत्पद्यकेवलज्ञानाय नमः
 शम्भुनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
 शम्भुनाथजिनाय गृहीतदीक्षाया नमः
 ॥ पौष-शुक्ल-पक्ष-पौष वदी ॥
 पार्श्वनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
 पार्श्वनाथजिनाय गृहीतदीक्षाया नमः
 चन्द्रप्रभजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
 चन्द्रप्रभजिनाय गृहीतदीक्षाया नमः

१४ शीतलनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ पौष-शुक्लपक्ष-पौष सुदी ॥

१ विमलनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

६ शान्तिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

११ अजितनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

१४ अम्बिनन्दनजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

१५ धर्मनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ माघ-कृष्णपक्ष-माघ वदी ॥

१ पद्मप्रभजिनाय रूपवनप्राप्त्यै नमः

१२ शीतलनाथजिनाय जातजन्मने नमः

१६ शीतलनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

२३ ऋषभदेवजिनाय मोक्षप्राप्त्यै नमः

१० श्रेयांसनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ माघ-शुक्लपक्ष-माघ सुदी ॥

१ अम्बिनन्दनजिनाय जातजन्मने नमः

६ वासुपुत्रजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

१ विमलनाथजिनाय जातजन्मने नमः

१ धर्मनाथजिनाय जातजन्मने नमः

४ विमलनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

८ अजितनाथजिनाय जातजन्मने नमः

- ६ अलिमनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
 १६ अमिनन्दनजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
 २१ धर्मनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ फाल्गुन-कृष्णपक्ष-फागण षड्वि ॥

- १ सुपार्श्वनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
 ७ सुपार्श्वनाथजिनाय मांभगताय नमः
 ७ वन्द्यभजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
 ६ सुविधिनाथजिनाय स्वयनप्राप्ताय नमः
 ११ अक्षयदेवजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
 १६ श्रेयांसनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
 १६ मुनिसुप्रतजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
 ११ श्रेयांसनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
 १४ वासुपूज्यजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
 १० वासुपूज्यजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ फाल्गुन-शुक्लपक्ष-फागण सुदी ॥

- १ अरनाथजिनाय स्वयनप्राप्ताय नमः
 ४ मद्दिनाथजिनाय स्वयनप्राप्ताय नमः
 ८ शम्भवनाथजिनाय स्वयनप्राप्ताय नमः
 १६ मद्दिनाथजिनाय मांभगताय नमः
 १६ मुनिसुप्रतजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ चैत्र-कृष्णपक्ष-चैत्र वदी ॥

- ४ पार्श्वनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
- ४ पार्श्वनाथजिनाय उत्पन्नकेवलजानाय नमः
- ५ चन्द्रप्रभजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
- ८ ऋषभदेवजिनाय जानजन्मने नमः
- ८ ऋषभस्वामिजिनाय गृहीतदीप्ताय नमः

॥ चैत्र-शुक्लपक्ष-चैत्र सुदी ॥

- ३ कुण्डुनाथजिनाय उत्पन्नकेवलजानाय नमः
- ५ अजितनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ५ शंभुनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ५ अनन्तनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ९ सुमतिनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ११ सुमतिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलजानाय नमः
- ११ महावीरजिनाय जानजन्मने नमः
- १५ पद्मप्रभजिनाय उत्पन्नकेवलजानाय नमः

॥ वैशाख-कृष्णपक्ष-वैशाख वदि ॥

- १ कुण्डुनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- २ शीतलनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ५ कुण्डुनाथजिनाय गृहीतदीप्ताय नमः
- ६ शीतलनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

- १० नमिनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
 १३ अनन्मनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
 १४ धनन्ननाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
 १४ अनन्मनाथजिनाय उत्पल्लवेयलज्जानाय नमः
 १४ कुन्धुनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः

वैशाख-शुक्लपक्ष-वैशाखसुदी

- ४ धम्मिमन्दनजिनाय चण्डनप्राप्ताय नमः
 ७ धर्मनाथजिनाय चण्डनप्राप्ताय नमः
 ८ धम्मिमन्दनजिनाय मोक्षगताय नमः
 ८ सुममिनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
 ९ सुमतिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
 १० महावीरजिनाय उत्पल्लवेयलज्जानाय नमः
 १२ विमलनाथजिनाय चण्डनप्राप्ताय नमः
 ११ अजिप्तनाथजिनाय चण्डनप्राप्ताय नमः

॥ उपेष्ट-शृष्णपक्ष-जेठ वदी ॥

- ६ श्रेयांसनाथजिनाय चण्डनप्राप्ताय नमः
 ८ मुनिसुव्वमजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
 ९ मुनिसुव्वमजिनाय मोक्षगताय नमः
 ११ चांमिनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
 ११ चांमिनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
 १४ चांमिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

अथ दीपमालाको गुणनो लिख्यते ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनाथाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिसर्वज्ञाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिपारंगताय नमः

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्यामिकेवलज्जानाय नमः

॥ इति दीपमालाको गुणनो ॥

॥ अथ २० विहरमानों के नाम ॥

१ श्री सीमंधर स्वामी

२ श्री युगमंधर स्वामी

३ श्री पादुस्वामी

४ श्री सुपादु स्वामी

५ श्री सुजान स्वामी

६ श्री स्वयंप्रभ स्वामी

७ श्री ऋषभानन स्वामी

८ श्री अमंतवीर्य स्वामी

९ श्री सुरप्रभव स्वामी

१० श्री विशालधर स्वामी

११ श्री वज्रधर स्वामी

१२ श्री चंद्रानन स्वामी

१३ श्री चंद्रपादु स्वामी

१४ श्री भुजंग स्वामी

१५ श्री ईश्वर स्वामी

१६ श्री नेमप्रभ स्वामी

१७ श्री योग्मेन स्वामी

१८ श्री महाभद्र स्वामी

१९ श्री देवयम स्वामी

२० श्री अजितवीर्य स्वामी

चार माश्वते जिनवर के नाम ॥

१ श्री ऋषभानन स्वामी

२ श्री चंद्रानन स्वामी

३ श्री पाग्निग स्वामी

४ श्री चर्द्धमान स्वामी

मेरी भावना ।

तू सने रागद्वेषमादिक जीने, सध जग जान लिया ।
 य जीवोंको मोक्षमार्गका, निष्ठुर हों उपदेश दिया ॥
 तू धीर जिन हरि हर प्रिया, या उसको स्वार्थान कहो ।
 कि-भावसे घेरिन हो गह, बिल उमा में लीन रहो ॥ १ ॥
 अपनोंकी आशा नहीं जिनके, साम्य-भाव बन रखते हैं
 तज-परचे हिन-साधनमें जो, निशदिन तप्य रहते हैं ॥
 तार्थन्यागकी कठिन तपस्या, बिना गेद जां करते हैं ।
 से जानी साधु जगनके, दुखसमूहको हरते हैं ॥ २ ॥
 हे सदा सम्यक् उर्ताका, ध्यान उर्ताका निग्य रहे ।
 नही जैसी पर्यामें गह, बिल सदा अनुरक्त रहे ॥
 हीं मनाऊँ किमी जीवको, झूठ कभी नहीं किया करूँ ।
 रघन-घनिगा पर न लुभाऊँ, संभोपासुन पिघा करूँ ॥ ३ ॥
 जल-पूरता, भाव न रगमूँ, नहीं किमी पर प्रोद्य करूँ ।
 दल दसगोंकी दहनाई, कभी न ईषां-भाव धरूँ ॥
 हे भावना ऐसी मेरी, सरले-रूप स्पष्टहार करूँ ।
 गने जहाँनक, इस जीवनमें, धीरोंको उपहार करूँ ॥ ४ ॥
 नप्राभाव जगनमें मेरा, मय जीवोंमें दित्य रहे ।
 तिन-दुरी जीवों पर मेरे, उरमे गगनाग्रोन् रहें ॥
 जिन मूर-कुमारियों पर, शोभ नहीं सुहको प्राये ।

मायाभाव रानी में उमर, लगी परिणति हो जाये ॥१॥
 गुणीजनोंको देग हृदयमें, मेरे प्रेम उमड़ आये ।
 बने जहाँ तक उनकी सेवा, काहे गर मन मुग पाये ॥
 हाँऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, हाँऊँ न मेरे डर आये ।
 गुण-महामाया भाग रहे निर, दृष्टि न होय पर जाये ॥२॥
 कोई गुण कहाँ या अच्छा, लब्ध्वा आये या जाने ।
 लायों क्यों तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आजाये ॥
 अधवा कोई कैसा ही भय, या लायन देने जाये ।
 माँ भी न्यायमार्गसे मेरा, कभी न पद टिगने पाये ॥३॥
 होकर सुख में मग्न न कृते, दुःखमें कभी न घपरावें ।
 वर्षन-नदी-स्मशान-भयानक, अदृशमें नहीं भय खावें ॥
 रहे अष्टौल-अकंप निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे ।
 इष्टविपरीत-अनिष्टयोग में, सहनशीलता दिखलावे ॥४॥
 सुखी रहें सेव जीव ~~कहे कहें कहें कहें कहें कहें~~
 धैर-पाव-अभिमान ~~कहे कहें कहें कहें कहें कहें~~

(१८६)

कले, प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे ।
अप्रिय-बहुक-फटोर शब्द नहि, कोई मुख से कहा करे ॥
बनकर मय युग-घोर तन्त्र से, देशोपनिर्गम रहा करे ।
वस्तुमय विचार खुशी से, मय दुख-मंरुट महा करे ॥१७॥
॥ अथ धारह भावना ॥

॥ द्वादश ॥

पहिली अनित्य भावना:—

राजा राणा छत्रपति, हाथिन बें, घमशार ।
मरना मरको एक दिन, धरना धरना पार ॥१८॥

दूसरी भगवण भावना:—

इस बल देई देवता, मान विना परिवार ।
गामी पित्रियां जायको, कोई न गगन द्वार ॥१९॥

तीसरी संसार भावना:—

नाम विना निर्धन दुखी, नृणापण भनवान ।
होत नृण संसारमें, मय जग देहयो छान ॥२०॥

चौथी लक्ष्य भावना:—

जगदरे, मरे अकेला होय ।
गो बर, मारी मया न होय ॥२१॥

पाँचवीं भावना:—

जहां देह धर
धर-मंरुति पर म

छट्टी अशुचि भावना;—

दिप चाम चादर महीं, हाड पंजरा देह ।

भीतर या सम जगनमें, और नहीं चिन मेह ॥३॥

॥ सांगड़ा ॥

सातमी आश्रव भावना;—

मोह नींद के जोर, जगवार्मा घूमें सदा ।

कर्म चोर बहूँ ओर, सरबस लूटे सुधि नहीं ॥४॥

आठमी संवर भावना;—

मन गुरु देय जगाय, मोह नींद जय उपशमे ।

तप कुछ पने उपाय, कर्म चोर आवन स्ये ॥५॥

॥ दाहा ॥

नवमी निर्जग भावना;—

ज्ञान दीप मय सेल भर, घर जांघे भ्रम झोर ।

या विधि विन निकसे नहीं, पेटे पूरव चोर ॥

पंग महावन संवरण, समिति पंग प्रकाश

प्रपल पंग इन्द्रिय विजय, धार निर्जग मार ॥६॥

दशमी लोक संठान भावना;—

पीडा गज उमंग नम, लोक पुरुष संठान ।

नामं जाय अनादिन, सरसन हे विन ज्ञान ॥७॥

इग्यारमी धोधिबीज-भावना;—

धन तन कंचन राजसुख, सपति सुलभ कर जान ।
दुर्लभ है मेमारमें, एक यथार्थ ज्ञान ॥११॥

॥ चारमी धर्म भावना ॥

जायें सुरसर देय सुख, चित्तम चिन्ता रैन ।
बिन जाये बिन चिन्तये, धर्म सकल मुख दैन ॥१२॥

अथ आठ—धुई से देववांदने की विधि ॥

पञ्चमः कृत्वा मन्त्रं देवः देववांदनं कुरुता ।

मकलकुशलवर्द्धा-पुष्करावर्त्तमेघां,
दूरितनिमिरभानुः कल्पवृक्षोपमानः ।

अथजलनिधिगोमः सर्वसम्पत्तिहेतुः,

॥ अथनु ममनं यः श्रेयसे पार्थ्यदेवः ॥१॥

ममोन्मृगं अरिहंसाणं भगवंताणं आद्गराणं नि-
धयराणं मयमंयुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिमसीहाणं
पुरिमयरपुंडरिआणं पुरिमयरगोभहर्थाणं लोपुत्तमाणं
लोगनादाणं लोगहिआणं लोगपईयाणं लोगपझाजग-
राणं अभयदयाणं चयमुदयाणं मग्गदयाणं सरगदया-
णं धोदिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं
धम्मसारदीणं धम्मवरवाउरेनचद्वदीयां अप्पडिह्य-
यसनाणंदेसणभराणं विअहउरमाणं जिणाणं जाययाणं

निघ्नाणं तारयाणं बुद्धाणं योद्ध्याणं मुक्ताणं मोक्ष
 सध्वन्नृणं मध्वदरिमीणं सिवमयलमरुअमणं
 कखय-मधवायाह-मपुणरानित्ति मिद्धिगइ नामयेणं
 संपत्ताणं नमो जिणाणं जियमयाणं जे अअ
 मिद्धा जे अ भविस्संनि गागण काले संपइ अ वट्ठम
 सव्हे निविहेण वंदामि ॥१॥

इच्छाकारेण संदिसइ भगवन् इगियावहिणं
 इक्कमामि, इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउ इगियावहिणं
 विराहणाण गमणागमणे पाणक्कमणे वीयक्कमणे इ
 क्कमणे ओम्मा उन्निग पणगदग मट्टिमक्कहासंमाणा संका
 णे जे मे जीया विराहिया एगिदिया वेइदिया तेइदि
 यउरिदिया पंचिदिया अभिहया वन्निया लेमिया म
 घाइया संवहिया परियाविया किलामिया उहविया ठ
 णाओठाणं संकामिया जीवियाओ वयगेयिया त
 मिच्छामि वृक्कटं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं पावच्छित्तकरणेणं विमोही
 करणेणं विमर्द्धाकरणेणं पायाणं कम्मणां निग्घाएण्णा
 ठामि काउम्मणां ।

अन्नं च ऊससिण्णं नामसिण्णं खामिण्णं ह्माणं
 जंभाइण्णं उट्टइण्णं वायनिसग्गेणं भमलिणं पित्तमु
 ष्ठाए सुहमेहि अंगमेचालेहि सुहमेहि तेजमेचा-

लेहिं सुहृमेहिं दिहिमंघालेहिं एवमाहर्हिं आगारेहिं
अभगां अशिराहिभो ह्य मे कउस्सग्गो जाय अरि-
हंताणे भगवंपाणे नमुद्धारेणे न वारेमि ताव कउपं
टाग्गेणे माणेणे आणेणे अप्पाणे बोसिरामि ॥ १ ॥

८६. लोगम्म पा चम नउवाग का वाइम्मग्ग को विर
मगद लोगम्म बहे—

लोगस्स उओअगरे, धम्मनित्थपरे जिण्ये । अरि-
हंते कित्ताहस्से , चउर्यासे वि वेयली ॥ १ ॥ उसमम-
जिअं न वंदे, संमवमभिरुदणं च सुमई च । पउम-
एहं सुपासे , जिणे च वंदणाहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च
पुप्फदंभं , मीअल मिअंम वासुपुअं च । विमलमणंतं
च जिणं , धम्मं मेनिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंतु अरं च
महिं, वंदे सुणिसुव्ययं नमिजिणे च । वंदामि रिद्धनेमि
पासे तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मण अमिधुआ ,
विहपरयमला पदीणजरमरणा । चउर्यासे वि जिणपरा,
नित्थयरामे पर्मायंतु ॥ ५ ॥ कित्तिग वंदिय महिया,
जेए लोगम्म उत्तमा सिद्धा । आरगगोहिलामे, समा-
दिवरमुत्तमे दितु ॥ ६ ॥ वंदेसु निम्मलपरा , आरवेसु
अहिं पपासयग । मागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम
दिसंतु ॥ ७ ॥

इसके पीछे चैत्यवंदन करें—

जय जय नामि नरिंद नंद सिद्धाचल मंडण ।
 जय जय प्रथम जिणंद चन्द भव दुःख विहंगण ॥
 जय जय साधु सुरिंद विंद वंदिय परमेसर ।
 जय जय जगदानंद कंद श्रीरिपभ जिणेसर ॥
 अमृत सम जिनधर्मनो ए दायक जग मे जाण ।
 सुख पद पंकज प्रीति घर निशि दिन नमत कल्याण ॥

नमोऽस्त्युगां अरिहंताणां भगवन्ताणां आइगराणां
 तिथपराणां सयंसंबुद्धाणां पुरिसुत्तमाणां पुरिससीहाणां
 पुरिसवरपुंडरीकाणां पुरिसवरगंभट्ठत्थीणां लोमुत्तमाणां
 लोमनाहाणां लोमहिष्णाणां लोमपईवाणां लोमपत्रोअग-
 राणां अमपदयाणां चक्रवुदयाणां मगवदयाणां सरणदया-
 णां पोहिदयाणां धम्मदयाणां धम्मदेसियाणां धम्मनाय-
 गाणां धम्ममारहाणां धम्मवरणाउरंनमकवईणां अपर-
 दिहपवरनाणदेसगधराणां विअट्टउत्तमाणां जिणाणां
 जावयाणां जिग्गाणां मारगाणां बुद्धाणां पांदिवाणां मुत्तायां
 सोअमाणां मत्थवन्तूणां मत्थदग्गिमाणां मियमपत्तमत्थ-
 मग्गमकत्तपमत्थापाहमगुणरायिणि सिद्धिगट्ठ ना
 मयेपं टागं संवत्ताणं नमो जिणाणां जियमयाणां जे अ
 अईया सिद्धा जे अ भविमंति ज्ञागए वाळे संवत्ता
 परमाणा मत्थं निविहेण वंशमि ॥

अरिहंतचेदयाणं वरेमि पाउउस्सगं ॥ - -

पंदरायसिआणं पूअणयसिआणं सभारयसिआणं
सम्माणयसिआणं पोहिलाभवसिआणं निरुवसगाय-
सिआणं सदाणं मेहाणं धिईणं धारणाणं अणुप्पेहाणं
पट्टमाणीणं ठामि पाउउस्सगं ॥

असन्धं ऊसमिणं नीसमिणं लासिणं ह्रीणं
जंभाइणं उहूणं पायनिसुग्गेणं भमसिणं विसमु-
वद्दाणं सुहमेहि अंगमंघलेहि सुहमेहि तेलसंघालेहि
सुहमेहि दिहिसंघालेहि गयमाइणं आगारेहि
अभगां अयिरादिष्ठां रुज मे पाउउस्सगो जाय
अरिहंताणं भगवंताणं नमुपारेणं न वारेमि गाव काणं
टाणेणं मोणेणं टाणेणं अणाणं पोसिरामि ॥

हिं एक नवरात्र का पाठमार्ग का पीठे पाठ करने एक
जन । तमोर्द्धममावागंताऽमर्मागुभ्य । कइ का पढ़ाई मनुमि
बो दोने— वीर देवें निभ्यं वन्दे ॥ १ ॥

लोगम्म उज्जोअगरे, धम्मतिथपरं जिणं । अरिहंते
कित्तइमं, पाउउमंवि केयर्त्तं ॥१॥ उस्सभमजिथं च
वंदे, सभयमविणंदणं च सुमडं च । पउमप्पाहं सुपासं,
जिणं च वंदणहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुण्हत्तं, मोअल
सिअंस वासुउज्जं च । विमलमणं च जिणं, धम्मं संति
म वंदामि ॥३॥ कुंभुं अरं च मण्डिं, वंदे सुद्धिसुवर्णं

नमिजिणं च । वंदामि रिद्धनेमिं, पासं तद् वद्धमागं च
 ॥४॥ एवं मां अभियुजा, विदुपरयमला वहीण जरम-
 रणा । चउपीसंपि जिणवरा, तित्थपरा मे वसीयंतु ॥५॥
 कित्तिप-पंदिय-महिपा, जे ए लोगस्स वत्तमा सिद्धा ।
 आरुग्ग पोहिलाभं, समाहियर मुत्तमं दित्तु ॥६॥ वंदेसु
 निम्मलपरा, आइसेसु अहियं पयासपरा । सागरवरां-
 भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सम्बलोण अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सगं ।
 वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्ति-
 आए सम्माणवत्तिआए पोहिलाभवत्तिआए निरुवस-
 गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईण धारणाए अणुप्पे-
 हाए वद्धुमाणीए ठामि काउस्सगं ॥८॥

असत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जं-
 भाइएणं उह्हुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्चाए
 सुहमेहिं अंगसंचालेहिं सुहमेहिं खेलसंचालेहिं सुहमे-
 हिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो
 अयिराहिओ । हुअ मे काउस्सगो जाव अरिहंताणं
 भगवंताणं नमुफारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मो-
 येणं भाणेणं अप्पाणं वोसरामि ॥

एक नवकार का काउस्सग करे पीछे पाग के एक आदमी
 दूसरी स्तुति को बोले

जैनाः पादा पुष्पान् पान्तु ॥२॥

पुष्पस्वरपरदीपद्वे , पाण्डसंदे अ जंघुदीवे अ ।
 भरद्देरपयिदेहे, भग्मादगरे नमंस्तमि ॥ १ ॥ तमति-
 मिरपटलविट्ठं-सणस्ससुरगणनरिंदमहिअस्स । सोमा-
 घरस्स वंदे, पप्फोद्धिअमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजराम-
 रणमोगवणासणस्स, कट्ठाणपुषयसुयिसालसुहावह-
 स्स । को देवदाणयनरिंदगणणिअस्स, धम्मस्स सारमु-
 च्छन्नं वरे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पपम्मो णमो जि-
 गुमणं नंदी सया मंजमे, देवनागसुयसकिन्नरगणस्स-
 म्भुअ भावणि । लोणो जग्ध पइट्ठिओ जगमिणं ते-
 लुक्कमपासुरं, यम्मो वट्ठउ सासम्मो विजयओ यम्मसुत्तरं
 वट्ठउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवणो करेमि काउस्सगं ॥

पंदणवत्तिआणं पृथ्थणवत्तिआणं सद्धारवत्तिआणं
 सम्माणवत्तिआणं बोहिलाभवत्तिआणं निरुयस्सगव-
 त्तिआणं मट्ठाणं मेणं भिईणं भारणाणं अणुणेहाणं
 बहुमार्णाणं ठामि काउस्सगं ॥ १ ॥

असत्थ उत्तसिण्णं नीससिण्णं खासिण्णं ह्रीणं
 जंभाहण्णं उईण्णं पापनिसमोणं भमलिणं पित्तमुच्छाणं
 सुहृमेहि अंगमंगालेहिं सुहृमेहिं खेलमंगालेहिं सुहृमेहिं
 दिट्ठिसंगालेहिं एवमाइणहिं आगारेहिं अभागो अवि-
 राहिणो हुअ मे काउस्सगो जाव अरिहंताणं भगवं-

माणं नमुकारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं माणेणं
भाणेणं अण्णाणं वोसिरामि

एक नाकाय का काउम्माय ३२ पर के एक भाणी होम्मे
स्तुति कहे—

जैनं वाचयं भूयाद् भूयै ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारमयाणं परंपरमयाणं ।

लोअग्गसुवगयाणं नमो मया सज्जमिद्धाणं ॥१॥

जो देवाण विदेवो, अं देवा पंजरा नमंमनि । तं देव दे-
व मज्झिअं, मग्गिमा वंदे महाधीरं ॥२॥ इत्तोवि नमुकारो
जिणवर वसहरस पद्धमागम्स । संमारमागाराओ,
तारेह मरं च नारिषा ॥३॥ उअंनमेलमिहरे, दिक्खा
माणं निसीहिआ जस्स । तं घम्मचक्खहिं, अरिहनेमि
नमंतामि ॥४॥ चत्तारि अट्ट दस दांय वंदिया जिणशा
वउप्पीसं । पग्गमट्ट निट्ठि अट्ठा सिद्धा सिद्धि मम दिस्तु ॥

अन्नन्ध ऊससिण्णं नीमसिण्णं खासिण्णं द्दीण्णं
जंभाट्ठण्णं उट्ठण्णं वायनिसग्गेणं भमल्लिण्णं पिल्लु-
च्छाण्णं सुहुमेहिं अंगमंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचा-
लेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं गवमाइण्णं आगारेहिं
अभग्गो अविगहिआं हज्ज मे काउस्सग्गो । जाव
अरिहंताणं भगवंताणं नमुकारेणं न पारेमि ताव कायं
ठाणेणं माणेणं भाणेणं अण्णाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

एक न्यकन का काटस्मारा कर पाठ कर एक चादमी चौकी

स्तुति को—

सिद्धा देवी दद्यात् सौम्यं ॥ ४ ॥

नमोऽनुपुं अरिहंताणं भगवंताणं आङ्गराणं
 मिथ्यपराणं सपेमेवुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं
 पुरिसवरपुंढरीयाणं पुरिसवरगंधर्वाणं लोमुत्तमाणं
 लोमनाहाणं लोमहिंसाणं लोमपईयाणं लोमपञ्चोअग-
 राणं अमपदपाणं चरखुदपाणं मग्गदपाणं सरणदपाणं
 पोहिदपाणं धम्मदपाणं धम्मदेमियाणं धम्मनायगाणं
 धम्मसारहिंणं धम्मवरणाउरंतनयवदीणं अप्पहिहपय-
 रणाणं दंमणभराणं विअट्टउउमाणं जिखाणं जावपाणं
 सिद्धाणं ताराणां बुद्धाणं पाइयाणं मुत्ताणं मोअगाणं
 मग्गसुणं सव्यदरिमाणं सिधमयलमरुअमणं नमकसव-
 मप्यापाह-मपुणराविति मिट्ठिगई नामपेयं ठाणं संप-
 ताणं नमोजिगाणं जिपभयाणं। जे अ अइया सिद्धा
 जे अ भविसंतिणागण काले मेवइअ वट्ठमाणा सव्ये
 निविहेण धंदामि ॥

पीठे “ अरिहंत चेइयाय कानि काटस्मारा धेंखव-

तिता का पाठ ” अमथ ॥ पाठ कर कर उपर चार स्तुति लिपी
 है ऐसे कि चार स्तुति करे वह पहले जेमे पाठ आया । बेसा

नमोऽस्तुते । पीठे भग्नं नमि कथयति त्रीं ही जने नै
नमोऽस्तुते का पाठ दृग कहे ।

नमोऽस्तुते अरिहन्ताणं भगवन्ताणं आह्वयानं नि-
त्यपराणं मयमं बुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिसर्माणां
पुरिमयरपुं हरिआणं पुरिमयरगंधहन्ताणं लोमुत्तमाणां
लोगनाह्वयानं लोगद्विआणं लोगवईयाणं लोगपञ्चभग-
राणं अभयदयाणं चक्रबुद्धयाणं मग्गदयाणं मरणदया-
णं पोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेमिणाणं धम्मनापणाणं
धम्मसारदीणां धम्मवरचाउरं नमकवदीणां अप्पडिहप-
वरणाणंदेसणभराणं विअइउत्तमाणां जिणाणं जावयाणं
तिआणं सारयाणं बुद्धाणं पोहयाणं सुत्ताणं मोअगाणं
सव्वन्तूणां मव्वइरिसीणां मिवमयन्मरुअमणं नम-
वलय-मव्वकापाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं
संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं जे अ अइआ
सिद्धा जे अ भविस्संति ग्यागण काले मंपइ अ वइमाणा
मञ्चे निविहेण धंदामि ॥१॥

जावनि चेहआइ उट्टेअ अहेअति रियलोए अ ।
सव्वाइ ताई वंदे इअ संनो तत्थ संनाइ ॥१॥

जायन केवि साह भरहेरवय महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसि पणओ तिविहेण तिंदइ चिरयाणं ॥१॥
नमोऽहं तिसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

यह वैसा ही किया हो वैसा स्नान कर, गय नहीं किया

होगा हस्ते स्नान कर पापुष्पाग्न गाथामें कम नहीं कहे । पीछे—

जय दीपराज जगगुरु, होउ ममं नुद पभावओ भयवं ।

भयनिन्द्यो मरगागुमागिया इदुफलमिर्द्धा ॥ १ ॥

लोगविमृष्टाओ, गुरुजणदमा परम्भकरणं च ।

सुहगुरु ओगो मध्ययण मेयणा आभवमर्गहा ॥ २ ॥

इह वा । नमःपुनः भूग वाम का पीठ खड़े होना ।



। चौदह नियमों की गाथा ।

मेचिन्न द्रव्य विगोह पाणह मेयोल वस्य कुलुमेसु ।

पार्तिण मयंण विलेयंण पमेदिमिं न्नाणे भत्तेसुं ॥ १ ॥

॥ गाथा का संक्षिप्त अर्थ ॥

१ 'मेचिन्न' (जिनमें जाय मत्ता हां, पोनेसे 'बंगे' राजादि) कषापानी, हरीशार, कल, पान, हरादानन, निमक आदि ।

२ 'द्रव्य' जिनमें जाज भूहमें जाये उत्तने द्रव्य-जल, मंजन, दानन, रोटी, दाल, चावल, कढ़ी, साग, मिठाई, पूरी, पी, पापड़, पान, सुपारी, चरन, ममाला, आदि ।

३ 'विगोह'—०, जिनमें से मधु, मांस, मफलन और मदिरा ये ४ महाविगोह अभिष्य होने से आषक

को अवश्य त्याग करना चाहिये और शेष (५) घी, तेल, दूध, दही, गुड़, खांड अथवा मीठा पक्वान ।

४ 'उपानह'-जूता, चूट, सिलीपर, मांजा आदि जो पांवमें पहना जाय ।

५ 'तंबोल'-पान, सुपारी, इलायची, लौंग, पान का मसाला आदि ।

६ 'वस्त्र'-वस्त्र (आभूषण 'जैवर' की संख्या भी इसी नियममें धार लेनी चाहिये) पगड़ी, टोरी साका, अंगरखा, चोगा, कुड़ता, धोती, पायजामा, हुपट्टा, चरर, अंगोछा, रुमाल आदि मरदाना और जनाना कपड़ा जो ओढ़ने पहनेने में आवें ।

७ 'कुसुमेष्टु'-फूल, फूलकी चीजें जैसे-शम्पा, बेला, सेहग, तुरी, हार, गजरा, अक्षर जो चीज स्रृष्टनेमें आवें ।

८ 'वाहन'-सवारा-गाड़ी, फिरीन, सिगराम, हार्थी, घोड़ा, रथ, पालगुनी, डोली, मोटर, साईकल, रेल, नाव, जहाज, स्टीमर आदि याने 'नरमा-फिरता, परता, और उठता' ।

९ 'शयन'-कुरमी, टेपल, पट्टा, पलंग, गद्दी, तकिया बिट्टीना, तखत, मेज, सुखासन, आदि सोने या बैठने की चीजें ।

१० 'विलेपन'—तेल, केशर, चंदन, मिल्क, सुर-
मा, काजल, उषटन, राजामन, पुरज, कंगा, काथ
देवना, दवाई आदि जो चीज शरीरमें लगाई जाये ।

११ 'वेध' [घातघर्ष] स्त्री. पुष्प सुष्ठु दांगेके ल्याव
से श्रावक परदार ल्याव और स्वदाराने ही संभोग
होये, उसका भी प्रमाण करें, इसी प्रकार स्त्रीयोंका भी
माल या आदमी समझ लेना चाहिये ।

१२ 'दिशि' [दिशा] शरीरमें हलने कोश
(लेंबा, नाँहा, ऊँचा, नीचा) जाना जाना. निर्दिष्ट नार,
हलने कोश भेजना तथा भेगाना ।

१३ 'महाग' [स्नान] शरीरमें सोडा स्नान हलनी
घेर करमा (लुंटास्नान) हाथ घेर हलनी घेर भोगा ।

१४ 'भवेत्तु'—अदान (अल), पान (पानी),
प्यादिम (मेवा—दूध), श्रादिम (पान—सोपारी आदि)
ये चारों आहारोंमेंसे, प्यादिमें जिनकी चीसें चायें सब
का कृप्य वजन करना ।

हल नीचे लिखने के अनुसार करेगा । यदि कर्म न हो
वहे उरध्वरी होवेय वगैरे विषय पढ़े । १५ कृतेवय विपरीत
गाय हलनी भी दर्शना पर भी जाये नहि. हलने भी बहुत से चम
नक होते हैं

६ काय.

१. पृथ्वीकाय-मिट्टी निमक आदि (खानेमें वा उपभोगमें आये) उसका वर्जन ।

२. अप्काय-- जो पानी पीनेमें या दूसरे उपयोगमें आये उसका वर्जन. पानीकी जान कूवा, यावड़ी, तलाब, नदी, नल और मेघ आदिका प्रमाण संख्या भी करना अच्छा है, पानी छानकर कोईभी काममें लाना तथा जीवानीका यत्न करना अन्यावश्यकिय है ।

३. तेउकाय--धुन्हा, अंगीठा, भट्ठी, चिराक आदि का प्रमाण ।

४ वायुकाय--हिंडोले पंखे [अपने हाथसे वा हुकमसे] जिनसे चलते होंगे उनकी संख्याका प्रमाण. 'रूमालसे या कागजसे हवा लेनी यह भी पंखेमें गिनी जाती है उसका जयणा' ।

५. धनस्पतिकाय-- हराशाक तथा फलादि इतनी जानके खाने घर संयधी भंगाने जिसकी गिनती तथा वर्जन ।

६. असकाय-- असजीव अपरार्थी, बिनापरार्थीका विचार करना । यह ई कायका परिमाण कर लेना ।

६ कर्म.

१. अर्सा (जग्य और आजार) नलचार, पंदूक,

तमंचा, परछी, भाला आदि हुरी, केंची, चक्कू आर सरोमा चित्ती आदि आजार ।

२ मसी (लिग्वने पडनेका) कागज, कागस, दायास, पेन्मीन्, पर्सा, पुस्तक, छापा, टाइप आदि ।

३ कृपी (कमी) रोनी बगीचे आदिका परिमाण एह रोजके नियम धारनेरी विधि संक्षेपमें लिखी है विस्तार जितना अधिक करिये पाने नाम ल्यान् ल्यान् कर रविये उमनाली उपादा कायदा है.

उपरोक्त नीदह १४ नियम प्रतिदिन बितारणे पालंके मेरु जितना पाप कटकर सरस्य जितना रह जाय है ।

इस नीदह नियमोंमेंसे अपने चाहिये उमरी व मुरखर श्रीसुशुभे सुगारविन्दसे पचखाण करे । यदि कमी शुभहाराजका योग नही हो तो निरालि-
गितानुसार पचखाण करे ।

॥ पच्यवस्त्राणका पाठ ॥

॥ नयकरमी ॥

उमाण खरे नमुकारसतिष मुहिसतिषे पचखाण
चउग्विहंवि आहारं अमणं पाणं पदाहमं माहमं अत-
स्थनाभोगेणं सहस्रकारेणं मन्त्रशगरेणं महासमाति-

वत्तियागारेणं--विगड्ढो पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं
सहसागारेणं लेवालेवेणं मिहत्थमंसट्टेणं उक्खित्तविं-
गेणं पट्टच्चमक्खिणं महत्तरागारेणं सत्त्वसमाहिवत्ति
यागारेणं देसावगासियं उच्चभोगपरिभोगं पच्चक्खाइ
अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सत्त्वम-
माहिवत्तियागारेणं वोसिरे ।

पच्चक्खाण पारनेका पाठ.

उगगए सरे नमुक्कारसहिं पोरिसियं मुट्टिसहिं
पच्चक्खाण किया घउच्चिहं पि आहारं पच्चक्खाणं
कासिअं पालिअं मोहिअं । निरिअं किहिअं आराहिअं
अं च न आराहिअं नस्स मिच्छामि वृक्कहं ।

पीछे एक नवकार मंत्र पढ़े ।

१ बिदल, जिम अन्नकी दो दाल (ठिदल) हो जाय,
और जिममेंमें तेल नहीं निकले, उस अन्नको कपे दूध,
दही, द्राक्षके साथ अर्थात् मिलायके खाना बड़ा दोष
कहा है. दही घौरह खुश गरम करके खानेमें बिद-
लका दोष नहीं है ।

२ आचार मय तरलका (मंथान) नोन गोज पाद
अभक्ष्य होजाता है ।

३ बंदमूल ३६ अनन्नकाय. यह सपसं उपादे दोषकी बीज होनेसे पिलकुल छोड़ने लायक है ।

४ रजस्वला आंगनों को २४ घंहर गृहकार्य न करना चाहिये ।

५ दियाह, सार्दीमें चंडवा, आत्मनपार्जा भादि कुत्तियाजका त्याग करना चाहिये ।

६ खराब गालियोंको मारनेका कितने ही लोगोंमें बहुत प्रचार है उसका भी त्याग करना चाहिये ।

७ पाल लस आर वृद्ध विशाह या कन्याविशय आदि कुर्गानियांको मिटा देना चाहिये याने उपरोक्त प्रवृत्तिसे बहुत हानि होती है ।

८ धपने पधे आर कन्याओंको नीमि आर धर्म-शास्त्रकी शिक्षाके लिये पाठशाला आदिका प्रवन्ध करना चाहिये ।

प्यारे जैनी आह्वों इस लघु । किताब द्वारा निरूप देवगुह बंदन वा १४ नियम चिनारके अवश्य लाभ लेना चाहिये । इति शम्.

अथ आवकों के प्रत्याख्यान के ४६ भांगा ।

(आंक नंभर ६)

आंक एक ११ का, एक करण और एक जोग से भांगा छठे नघ ।

वत्तियागारेणं--विगदओ पच्चक्खाइ असत्थणाभोगेणं
सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्तविं-
गेणं पट्टममक्खिण्णं महत्तरागारेणं सच्चसमाहिवत्ति-
यागारेणं देसावगासियं उच्चभोगपरिभोगं पच्चक्खाइ
अनत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सच्चम-
माहिवत्तियागारेणं वोसिरे ।

पच्चक्खाण पारनेका पाठ.

उगए मुरे नमुकारसहिंये पोरिसियं मुट्टिसहिंये
पच्चक्खाण किथा चउच्चिहंपि आहारं पच्चक्खाण
कासिअं पालिअं मोहिअं । तिरिअं किट्ठिअं आराहिअं
जे च न आराहिअं तस्म मिच्छामि दृक्खं ।

वाले एक नवकार मंत्र पढ़े ।

१ पिदल, जिम अन्नकी दो दाल (टिदल) हो जाय
और जिममेंमें तेल नहीं निकले, उस अन्नको कपे दूध
दर्ही, द्वागके साथ अर्धान्त मिलायके खाना पडा दोष
कहा है. दर्ही चंगरह ग्युथ गरम करके खानेमें बिद-
लका दोष नहीं है ।

२ आचार मय तरटका (मंथान) मान रोज याद
अभन्दप होजाता है ।

षत्तियागारेणं--विगृह्यो पञ्चकखाड अक्षत्थणाभोगेणं
सहस्रागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसमट्टेणं उक्खित्तविं-
गेणं पट्टममक्खिण्णं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति
यागारेणं देसावगासियं उवभोगपरिभोगं पञ्चकखाड
अनत्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं महत्तरागारेणं सव्वम-
माहिवत्तियागारेणं धोसिरे ।

पञ्चकखाण पारनेका पाठ.

उगगं गृहे नमुक्कारसहिं पोरिसियं मुट्ठिसहिं
पञ्चकखाणं कियं चउट्ठिवट्ठं पि आहारं पञ्चकखाणं
कासिअं पालिअं सोहिअं । तिरिअं किट्ठिअं आराहिअं
जं च न आराहिअं तस्म मिच्छामि वृण्हं ।

पीछे एक नवकार मंत्र पढ़े ।

१. चिदल, जिस अन्नकी दो दाल (छिदल) हो जाय,
और जिसमेंमें तेल नहीं निकले, उस अन्नको कपे दूध,
दही, द्वाशके साथ अर्थात् मिलायके खाना बड़ा दोष
कहा है. दही बगैरह खुच गरम करके खानेमें बिद-
लका दोष नहीं है ।

२. आचार सब तरहका (मंधान) नीन गंज बाद
अमच्छ हो जाता है ।

३ कंदमूल ३२ अनन्नकाय, यह सप्तमें ज्योति
दोषकी बीज होनेसे बिलकुल छोड़ने लायक है ।

४ रजस्यन्ता औरमों को २४ ग्रहर गृहकार्य न
करना चाहिये ।

५ विवाह, सार्दीमें चेटपा, आमजापार्जी आदि
कुरियाजका त्याग करना चाहिये ।

६ खराब गालियोंको गानेका बितने ही लोगोंमें
बहुत प्रचार है उसका भी त्याग करना चाहिये ।

७ पाल लग्न और वृद्ध विवाह या कन्याविक्रय
आदि कुरीतियोंको मिटा देना चाहिये वाने उपरोक्त
प्रवृत्तियोंसे बहुत हानि होती है ।

८ अपने पक्षे और कन्याओंको भीति और धर्म-
शास्त्रकी शिक्षाके लिये पाठशाला आदिक प्रवन्ध क-
रना चाहिये ।

प्यारें जैनी भाइयों इस लघु । विताप द्वारा निम्न
देवगुरु धंदन या २४ नियम बिचारके अवश्य लाभ
लेना चाहिये । इति शम् ।

अथ शायकों के प्रत्याख्यान के ४६ भांगा ।

(आंक नंबर ६)

आंक एक ११ का, एक करण और एक जोग से
भाग कठे नथ ।

- १ करुं नहीं मनसे
- २ करुं नहीं वचनसे
- ३ करुं नहीं कायासे
- ४ कराउं नहीं मनसे
- ५ कराउं नहीं वचनसे
- ६ कराउं नहीं कायासे
- ७ अनुमोदुं नहीं मनसे
- ८ अनुमोदुं नहीं वचनसे
- ९ अनुमोदुं नहीं कायासे

अंक एक १८ का, एक करण और दोष जोग से
भांगा ऊठे नव ।

- १ करुं नहीं मनसे वचनसे
- २ करुं नहीं मनसे कायासे
- ३ करुं नहीं वचनसे कायासे
- ४ कराउं नहीं मनसे वचनसे
- ५ कराउं नहीं मनसे कायासे
- ६ कराउं नहीं वचनसे कायासे
- ७ अनुमोदुं नहीं मनसे वचनसे
- ८ अनुमोदुं नहीं मनसे कायासे
- ९ अनुमोदुं नहीं वचनसे कायासे

अंक एक १३ का, एक करण और तीन जोग से

भीगा उठे तीन ।

- १ करं नहीं मन से वचन से काया से
 - २ कराडे नहीं मन से वचन से काया से
 - ३ अनुमोदुं नहीं मन से वचन से काया से
- अंक एक ६१ का, दो करण और एक जोग से
भीगा उठे नव ।

- १ करं नहीं कराडे नहीं मन से
 - २ करं नहीं कराडे नहीं वचन से
 - ३ करं नहीं कराडे नहीं काया से
 - ४ करं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से
 - ५ करं नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से
 - ६ करं नहीं अनुमोदुं नहीं काया से
 - ७ कराडे नहीं अनुमोदुं नहीं मन से
 - ८ कराडे नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से
 - ९ कराडे नहीं अनुमोदुं नहीं काया से
- अंक एक ६२ का, दो करण और दो जोग से
भीगा उठे नव ।

- १ करं नहीं कराडे नहीं मन से वचन से
 - २ करं नहीं कराडे नहीं मन से काया से
 - ३ करं नहीं कराडे नहीं वचन से काया से
 - ४ करं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से वचन से
- १७

- ५ करुं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से काया से
- ६ करुं नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से काया से
- ७ कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से वचन से
- ८ कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से काया से
- ९ कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से काया से

अंक एक २३ का, दो करण और तीन जोग से भांगा उठे तीन ।

- १ करुं नहीं कराउं नहीं मन से वचन से काया से
- २ करुं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से वचन से काया से
- ३ कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से वचन से काया से

अंक एक ३१ का, तीन करण और एक जोग से भांगा उठे तीन ।

- १ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से
- २ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से
- ३ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं काया से

अंक एक ३२ का, तीन करण दो जोग से भांगा उठे तीन ।

- १ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से वचन से
- २ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से काया से
- ३ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से काया से

अंक एक ३३ का, तीन करण और तीन जोग से

भांगा ऊठा एक ।

१ करुं नहीं कगडे नहीं अनुमोहुं नहीं मनसे वचनसे
बापासे ॥ १॥

जूमरे ४५, आंगणपनास भांगा ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आराधनाका स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

मरुट सिद्धि दापक मदा, सोसीशे जिनराय ।

सङ्गुन मागिनि सग्यनि, प्रेम प्रणमं वाप ॥१॥

त्रिभुवनवति त्रिशला तगो, नंदन गुण गंभीर ।

गामन नायक जग जयो, वर्द्धमान बह वीर ॥२॥

इक दिन पीर जिगंदने, गरजे करि परगाम ।

भविक जौवन दिन भगा, पूछे गीतम स्याम ॥३॥

मुक्तिमार्ग आगविये, कहा किण परे अरिहंत ।

सुधा गरस तय वचन रम, भांगे श्रीभगवंत ॥४॥

अतिथार आलोइये, व्रत धरिये मुद साख ।

जाय न्यमायां मयल जे, गौनि गौराजी लाख ॥५॥

विधिहुं चला सोसिराशिये, पापग्धान अदार ।

चार दारण निरूप अनुमरो, निंदो दुरित आधार ॥६॥

शुभकरगा अनुमोदिये, भाष भलो मन आण ।

अणमगा अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥७॥

शुभगति आराधन तणा, ए छे दश अधिकार ।
चित्त आगुनीने आदरो, जिन वामो भवषार ॥८॥

॥ दाट पहेली ॥

॥ ए छिडि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

ज्ञान दरिम्पण आरिषत्र नप वीरज, ए पांचे आ
चार । एह तणा इह भव परभवना, आलोइये अनि
चार रे ॥ १ ॥ प्रार्थी, ज्ञान भणो गुणखाणी । वीरव
एम बाणी रे ॥ प्रार्थी ॥ जा० ॥ ए आंकणी ॥ गुरु ओ
लकीये नहीं गुरु पिनये, काले धरी बहुमान । सृष्ट
अर्थ तदुभय करी सृष्टां, भणिये वही उपधान रे ॥२॥
प्रार्थी ॥ जा० ॥ जानोपकरण पाटी पोंधी, ठयणी नाक
रवाली, तेह तणी कीधी आशामना, ज्ञान अस्ति न सं
वाली रे ॥ ३ ॥ प्रार्थी ॥ जा० ॥ इत्यादिक विपरीत
पणार्थी, ज्ञान विराध्युं जेह । आ भव परभव बलिप
अनोभव, मिच्छादुषह तेह रे ॥४॥ प्रार्थी, समकिन
म्यां गुठ जाणी ॥ ए आंकणी ॥ जिनवगने शंका नवि
कीजे, नवि परमन अभिप्राय । साधु तणी निद्रा परि
हरजा कलमेंदेह म राग रे ॥५॥ प्रार्थी ॥ म० ॥ मृ
दगुं छेछे पडशमा, गुणयनने आदरिये । साहार्माने
धर्म करी भिन्ना, भक्ति प्रभावना करीये रे ॥६॥ प्रार्थी
॥ म० ॥ संघनैय्य प्रसाद तणी जे, अयणीयाद मन

लेदपो । द्रव्य देवको जे विणसाह्यो, विणसमा उघेटपो
 रे ॥७॥ प्रार्थी ॥ स्वा० ॥ इत्यादिक विपरीत पणार्थी,
 समकिन मंजु जेह । आ भव० ॥ मिच्छा० ॥ ८ ॥
 प्रार्थी, शारिप्र स्यो चित्त आर्या ॥ १० अंकिणी ॥ पांस
 समिनि प्रण गुप्ति विराधि, आठे प्रवचन माय । साधु-
 नणे धर्म परमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥९॥ प्रार्थी
 ॥ स्वा० ॥ आवश्यकने धर्म सामायिक, पांसहर्मा मन घाली ।
 जे जयणापूर्वक जे आठे, प्रवचनमाय न घाली रे ॥१०॥
 प्रार्थी ॥ स्वा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणार्थी, शारिप्र
 रान्धु जेह ॥ आ भव० ॥ मिच्छा० ॥ ११ ॥ प्रार्थी
 स्वा० ॥ वारे भेदे तप नवि कौंधु, हर्मे योगे निज शक्ते ।
 धर्म सन वन कथा कीर्तन, नवि कोगविण भगते रे ॥
 ॥१२॥ प्रार्थी ॥ स्वा० ॥ तपवीरज आचारें एणि परें,
 विविध विराध्या जेह ॥ आ भव० ॥ मिच्छा० ॥ १३
 ॥ प्रार्थी ॥ स्वा० ॥ वर्त्तम्य विजोपे शारिप्र केरा, अति-
 चार आलोइये । वार जिणेसर वपन सुणीने, पाप
 मण्ड सवि धोइये रे ॥ १४ ॥ प्रार्थी ॥ स्वा० ॥

॥ दाल घांजा ॥ पार्थी सुगुरु वसाय ॥ गृहेर्जा ॥

पृथिवी पार्थी तेउ, याउ वनमपनि ॥ १० वांते
 धावर कलां १ । करिं करमण आरंभ, गेप्र जे गेहिपां ।
 कृपा मलाय मणार्थीपां १ ॥ १ ॥ घर आरंभ अनेक,

टोकां भोपरां । मेडी घाल चगाशीपां ए । लीपग घुस
 काज, इणी परे परपरे । वृथिनी काग विगधिना ए ॥ २ ॥
 भोयण नायण पाणी, झीलण अपकाय । छोनी धोनी
 करी दृढ्या ए । भाटीगर कुंभार, लोद सोवन गरा
 भाडसुंजा मिहान्नागरा ए ॥ ३ ॥ सापण शेकाण काज
 यन्न निखारण । रंगण रांधण रसवर्मा ए । इणी प
 कमांदान, परे परे केवनी । नेउ वाउ विराधिया
 ॥ ४ ॥ पाडी यन आराम बावि यनम्पनि । पान फ
 कल घेदीपां ए । पोंदोक पावडां जाक, शेकां सुक
 द्यां । छुंयां छेयां आधीपां ए ॥ ५ ॥ अलसीने परं
 पाणी घालीने । घणा निल्लादिक पीलीया ए । घाली
 कोलु मांदि, पीली शेलडी । कंद मूल कलयेवीपां ए
 ॥ ६ ॥ एम एकंद्रिय जीव, हण्वा हणावाया । हणतां जे
 अनुमोदोया ए ॥ आभव परभव जेह, बलिय भवोभ
 । ते सुझ मिच्छामि दुक्खं ॥ ७ ॥ कूर्मा सरमीप
 कीडा, गाहर गंडोला । इयल पूरा अलसीपां ए
 वाला जलो बुडेल, विचलित रसमणा ॥ घली अथा
 णां प्रमुखनां ए ॥ ८ ॥ एम बेहन्द्रिय जीव, जे मे दृढ
 द्या ॥ ते सुझ ० ॥ उदेही जू लीख, मांकड मंकोडा ॥
 चांचड कीडी कुंघुया ए ॥ ९ ॥ गहदीयां घामेल, कान
 खजूरछा । गींगोछा धनेडियां ए । एम तेहंद्रिय जीव,

જિ० ॥ ૪ ॥ મિ० ॥ વ્રત લેટુ વિમારિયાં જી,
 માંગ્યાં પચક્ષણ । કપટહેતુ કિરિયા કરી જી,
 આપ યક્ષણ રે ॥ જિ० ॥ ૫ ॥ મિ० ॥ વ્રણ દાલ
 ફુદે જી, આલોયા અતિચાર । શિવગતિ આરા
 તનો જી, એ પહેલો અધિકાર રે ॥ જિ० ॥ ૬ ॥

॥ દાલ ચોધી ॥ સાહેલહીની વેશી ॥

વંધ મહાવ્રત આદરો । સાહેલહી રે
 અથવા લ્યો વ્રત ચાર તો ॥ પધાશક્તિ વ્રત આદર
 સા० । પાલો નિરતિચાર તો ॥ ૧ ॥ વ્રત લી
 સંભારીયે , સા० । હિયદે ધરિય વિચાર તો
 શિવગતિ આરાધના તનો , સા० । એ બી
 અધિકાર તો ॥ ૨ ॥ જીવ સય સ્વમાવિયે , સા०
 પોનિ ચોરાશી લાલ તો । મન શુદ્ધે કરો સ્વ
 મર્ણા , સા० । કોઈનું રોવ ન રાલ તો ॥ ૩ ॥
 સર્વ મિત્ર કરી ચિતવાં , સા० । કોઈ ન જાણો શ
 તો । રાગ દેવ નમ પરિહારો , સા० । કીર્તિ
 જન્મ પવિત્ર તો ॥ ૪ ॥ સામી સંધ સ્વમાવિયે
 મા० । જે ઉપનો અપીનિ તાં । સજ્જન કુટુંબ
 કરી સ્વામર્ણાં , સા० । એ જિનશાસન રીતિ
 તો ॥ ૫ ॥ સ્વમિયે અને સ્વમાવિયે , સા० । નહજ
 પર્મનો સાર તો । શિવગતિ આરાધન તનો,

मङ्गलार ॥ तो पानक गाजी, वामे सुर अवत
 नव पद सरिखो, मंत्र न को संसार । इह भव
 , सुख संपत्ति दातारा ॥ २ ॥ जुओ भीलने भील
 राणी थाय । नवपद महिमार्थी, राजसिंह
 राणी रत्नबनीवेहु, पाय्यां छे सुरभोग । ए
 लेशो, सिद्धबधू संयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए
 फल्यो तत्काल । कणिधर कीटीने, प्रगट धइ
 शिवकुम्भरे योगी, सोवन पुरसो कीध । हम
 काज घणानां सिद्ध ॥ ७ ॥ ए दश अधि
 जिनेसर भार्यो । आराधन केरो, विधि जेणे
 राख्यो ॥ तेणे पाप परखाली, भय भय दुरे
 जिन विनय करतां, सुमति अमृत रस पाव
 ॥ दाल आठमी ॥

॥ नमो भवि भावशुं ए ॥ ए देशी ॥
 सिद्धारथ राय कुलतिलो ए, त्रिशला मात
 नो । अक्कीतले तुमे अवनरथा ए, करवा अम
 ॥ १ ॥ जयो जिन कीरजी ए ॥ ए आंकणी ॥
 राय करवा घणा ए, केहेनां न लहुं पार नो
 धरणे आख्या भणो ए, जो सारे सो नार ॥ २ ॥
 आश करीने आर्यायो ए, तुम नरणे महाराज
 आख्याने उवेस्वणो ए, मो किम रहेदो लाज ।

॥ पंचमी का छोटा स्तवन ॥

पंचमी तप तुमे करो रे प्राणी । निर्मल पामो ज्ञान
रे ॥ पहिलुं ज्ञान ने पीछे किरिया । नहीं कोई ज्ञान
समान रे ॥ पं० ॥ १ ॥ नंदीसूत्रमें ज्ञान दखाण्युं । ज्ञा-
नना पंच प्रकार रे ॥ मणि श्रुति अवधि ने मनःपर्यव ।
केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥ २ ॥ मणि अठावीश
श्रुत षडदे वीश । अवधि छे असंख्य प्रकार रे ॥ दोष
भेदे मनःपर्यव दाख्युं । केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥
घंघ्र सूरज ग्रह नभग्र तारा । नेहमुं तेज आकाश रे ॥
केवल ज्ञान समो नहीं कोई । लोकालोक प्रकाश रे ॥
पं० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीने । म्हाति पुरो उमेरे
रे ॥ समप सुन्दर कहें हूं पग पामुं । ज्ञान नो पंचमी
भेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥

॥ ग्यारसका स्तवन ॥

समवसरण पैठा भगवंत । गरम प्रकाशो भी
अरिहंत ॥ पारे परपदा पैठा जुई । मिगजिर सुदि
इपारम रुई ॥ १ ॥ सहिनाथना मोन कल्याण ।
जनम दीक्षा ने केवल ज्ञान ॥ अरदीक्षा लोभी रुपी ॥
॥ मि० ॥ २ ॥ नयिने उपनुं केवल ज्ञान । पांच कल्या-
णक अनि परधान ॥ ए निविर्ना सहिमा नयई ॥ मि०
॥ ३ ॥ पांच भगवत गुरुवन इमरीज । पांच कल्याणक

॥ ऋषभजिनेश्वरका स्तवन ॥

ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिय । बीननही क
 धारोरे (जगनातारो । मुझ तारो जी कृपानिधि
 मी) जग जशवाद प्रकट ह्ये तारो । अविचल सु
 दातारोरे ॥ ज० मु० ॥ १ ॥ निजगुण भोक्ता परगुण लो
 आत्म शक्ति जगायारे । ज० । अविभागी अवि
 अधिकारी, शिवबाजी जिनरायारे ॥ ज० मु० ॥ २ ॥
 इत्यादिक गुण आवणे निमुग्गी, हूँ तुज चरणे आ
 । ज० । तुम रीकायण हेतु तनखिण, नाटक
 मघायोरे ॥ ज० मु० ॥ ३ ॥ काल अनन रयां एकेंद्री,
 साधारण पामी रे । ज० । वरम संख्याता बलि वि
 लेंद्री, घेप धर्या दुःख घायोरे ॥ ज० मु० ॥ ४ ॥ सुर
 तिरि बलिनरक मर्गा मनि, पंचेंद्रियणो धायोरे । ज०
 र्वायोसे देहक मांति भमनां, अयनां हूँ विण हाय
 ॥ ज० मु० ॥ ५ ॥ भवनाटक निमग्रनि कर नवनव,
 मुझ आगल नाच्योरे । ज० । ममरथ साहिय सुरत
 मरियां, हूँ निर्या मुमने जाच्योरे ॥ ज० मु० ॥ ६ ॥
 जो मुम नाटक देखी रीजया, तो मुझ बंछिन दीजे
 ॥ ज० ॥ जो नवि रीजा तो मुझ भामां, बलि ना
 नवि बीजेरे ॥ ज० मु० ॥ ७ ॥ लालच परि हूँ सेव
 छारे, हूँ दुसरा नवि कापेरे ॥ ज० ॥ दाता सेमी मु

ખચેરો, થહિલો ડત્તાર આપેરે ॥ જ૦ મુ૦ ॥ ૮ ॥ તુમ્હ
 મરિયા માલિય પિળ માતારે, જો નવિ કારજ સારેરે
 ॥ જ૦ ॥ તો મુમ્હ કરમ તળો ગતિ જબડી, દોષ ન
 પોદે તુમારો રે ॥ જ૦ મુ૦ ॥ ૯ ॥ દીનદગાલ દયાકરી
 દીજે, શુદ્ધ મમલિન મહિનાળીરે ॥ જ૦ ॥ સુગુણ સે-
 વકમા ચાંન્દિન પૂરો, તેદીજગુણ મળિણીરે ॥ જ૦
 મુ૦ ॥ ૧૦ ॥ વર્ષ અદારે ગુણત્રાલીસે, જેષ્ટસુદી સોમ-
 વારો રે ॥ જ૦ ॥ મ્હાલમંદ પ્રતિપદદિન ભેટ્યા, વીલા-
 નેર મહારો રે ॥ જ૦ મુ૦ ॥ ૧૧ ॥

॥ શ્રી સીમંધરસ્વામિકા સ્તવન ॥

સુકલ સંમાર અથનાર ન હું ગણું, સ્વામી સીમંધરા
 તુમ્હ ભગને અર્ચું । ભેટ્યા પાપકમલ ખાય હિયદે ઘણો,
 કરિય સુપમાય જે વીનયું તે સુણો ॥૧॥ તુમ્હ શું
 કહ અરિહંત શું રાગિયે, જિણો અછે નિસ્યો કલ
 જોદિ કરિ આપિયે । અતિ મથલ મુજ્જ હિયે મોહ માયા
 ઘણો, તુમ્હ મન ભગતિ કિમ કરું ત્રિભુવન ધણી ॥૨॥
 જોય આરતિ કરે નવનવી પરિગટે, રીશ ચટકો ચટે
 લોભ ઘરો નહે । નવળરસ ઘણરમ કામરસ રમીયો,
 તેમ અરિહંત તું હિયદે નવિ ચસીયો ॥ ૩ ॥ દિવસ
 ને રાત્રિ હિયદે અનરો ધરે, મૂઢ મન રીશયા થલિય

माया करुं । तुंहि अरिहंत जाणे जिये आचरुं,
 तेम कर जेम संमार मागर मरुं ॥ ४ ॥ कम्मवनि
 सुख ने दुःख जे हूं मेहुं, मननगी घान अरिहंत किय
 कहूं । करि दया करि मया देव करुणापरा, दुःख हरि
 सुख करि स्वामी सोमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम
 वपण पण सुणुं, धर्म न कराव प्रभु पाप पांने घणुं ।
 एक अरिहंत तूं देव बीजो नहीं, एह आधार जग जा-
 णजो अम्ह सही ॥ ६ ॥ घणा कणव माय पिय पुत
 परिण सह, हस्यो धोत्यो रम्यो रंग रातां बहु । जयो
 जयो जगगुरु जीव जीवनधरा, तुम्ह समो बड़ नहीं
 अवसर बाल्हेसरा ॥ ७ ॥ अमियसम याणि जाणुं सदा
 मांभलुं, धार चर परवदा मांहि आवी मिलुं । विन
 जाणुं सदा सामि पायउ लगुं, किम करुं ठाम पुंडरगिरि
 वेगलुं ॥ ८ ॥ भोलिडा भगति तूं चित हारे किये, पुण्य
 संयोग प्रभु दृष्टि गोचर हुस्ये । जेहने नामे मन वपण
 तन उल्लसे, दूरधी दूकड़ा जेम हियदे वसे ॥ ९ ॥ भ-
 लभलो एणि संसार सह ए अच्छे, स्वामी सोमंधरा ते
 सह तुम पछे । ध्यान करतां सृपनमांहि आवी मिले,
 देखिये नयण तो चित आरति टले ॥ १० ॥ साम
 सोहामणा नाम मन गहगहे, तेहणुं नेह जे घात तुम्ह
 जो कहे । तुम्ह पाप भेटवा अति घणो टलवलुं, पंख

जो होय तो सहिय आवी मिलु ॥११॥ मेरुगिरि
 लेखणी घाभ कागट कर्त, क्षीरसागर तणां दूध लट्टिया
 भर्त । तुम्ह मिलवानगा स्वामी संदेश द्वा, इंद्र पण ल-
 गिय न शके अने एहया ॥१२॥ आपणे रंग भरि घात
 मुख जेटली, ऊपजे स्वामी न कहाय मुख तेटली ।
 गुणो सीमंभरा राज राजेमरा, लाइ ने कोइ प्रभु पर-
 सविमाहरा ॥१३॥ पुण्यभवि मोह बश नेह हुवे जेहने,
 समरिये एहि संसार नित तेहने । मेहने मोर जिम
 कमल भमरो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरं गमे
 ॥१४॥ एहं अरिहंतनु ध्यान दिवहे वस्युं, पापहुं पाप
 हिय रहिय करहो किम्युं । ठाम जिम गरुड पर पंखि
 आवे वही, तनयिण मर्पना जाति न शके रही ॥१५॥
 पाप मैं कज्ज सावज्ज महु परिहरी, स्वामी सीमंभरा गु-
 ष्ठ पय अणुमरी । शुद्ध चारित्र कहिये प्रभु वालुं,
 दुःख भंजार संसार भय टालुं ॥१६॥ तुम्ह हुं दास
 हुं तुम्ह सेवक सही, एह मैं घात अरिहंत आगल
 वही । एवई माहरी भगति जाणी करी, आपजो पा-
 पजी सार केवल सही ॥१७॥ कलश ॥ एम काटि वृद्धि
 ममृद्धि कारण, दुरिम धारण सुख कगे । उदज्झाय
 वर श्री भक्ति लाभे, गुण्यो श्री सीमंभरो । जय जयो
 जगगुरु जीय जीवन करी स्वामी मया धनी । कर जोडी

बलि बलि दीनधु प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

बलि बलि हूं ध्याउं गाउं जिनवर वीर, जिनपथ पजूसण
 दारुणा धर्मनी सीर । आसाद खांमासे हुंती दिन पचास,
 पडिक्कमण संवच्छरी करिये अणु उपवास ॥१॥ अउ-
 बीशे जिनवर पूजा सतर प्रकार, करिये भले भावे,
 भरिये पुण्य भंडार । बलि चैत्य प्रवाडे किरतां लाभ
 अनंत, इम पर्व पजूसण सट्टुमें महिमावर्न ॥२॥ पुस्त-
 क पूजावी नव वाचनाये वंचाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां
 सुगतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभावना धूप अगर
 उखेव, इम भविष्य प्राणी पर्व पजूसण सेव ॥३॥ ब-
 लि साहमीवच्छल करिये बारंबार, कोई भावना भावे
 केई तपसी शिलधार । अटर्दाह पजूसण इम सेवन आ-
 गंद, सुपदेवी मानिध कहे जिनलाभ सरिंद ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा ना दूहा ॥

जलभरी संपुट पात्रमां, युगलिक नर पूजन ।
 नार्यभ चरण अंगठडे, दायक भवजल अंत ॥१॥
 जानुं पले काउस्सग रत्ना, विचरथा देश विदेश ।
 लडां खडां केवल लब्धा, पूजो जानु नरेश ॥२॥
 लोकांतिक पचनं करी, वरस्या वरसी दान ।

बलि बलि धीनर्ष प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

बलि बलि हे प्याडे गाडे जिनघर धीर, जिनपर्व पजूसण
 शाकपा धर्मनी सीर । आसाढ चौमासे हुंती दिन पचास,
 पत्रिकामण सेवधारी करिये अथ उपवास ॥१॥ बड-
 बीशी जिनघर पूजा समर प्रकार, करिये भट्टे भावें,
 भरिगे पुण्य भेदार । बलि वैश्य प्रवाडे किन्नां छान
 पयवण, हम सर्व पजूसण सहुमें मदिमावण ॥२॥ पुन-
 क पूजावी बड बाबनाये बंगाप, भीकल्लवसूय जिां
 सुदतां पाव पलाप । प्रतिदिन परभादना घूर जण
 जगेड, हम भविष्य जाली सर्व पजूसण मेव ॥३॥ क-
 नि शाकर्मवराण करिदे बगंडार, कोर्टे भादना नये
 केरे मरणां निराणार । बडदेव पजूसण हम मेव ॥४॥
 मेर. सुददेवे मरिदे बडे विष्णुसुहृद ॥५॥

॥ ५५ ॥ अनाईये अंग. हुडा. ना हुडा

अनाईये अंग. हुडा. ना हुडा ।
 अनाईये अंग. हुडा. ना हुडा ॥१॥
 अनाईये अंग. हुडा. ना हुडा ।
 अनाईये अंग. हुडा. ना हुडा ॥२॥
 अनाईये अंग. हुडा. ना हुडा ।

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुतमान ॥३॥
 मान गयुं दोय भंशधी, देखी वीर्य अनन्त ।
 भुजापले भवजल तराया, पूजो खंघ महन्त ॥४॥
 रघुप्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विभ्राम ।
 नाभि कमल नी पूजना, करता अविचल धाम ॥५॥
 हृदय कमल उपशम पले, पाल्या रागनें राय ।
 हेम देह यन खंहनं, हृदय तिलक मंनोप ॥६॥
 मोल पहर देह देजना, कंठ विवर घर मूल ।
 मधुर धुनी सुरनर सुणें, निम गलं निलक अमूल ॥७॥
 नार्थकर पद पुन्य धी, त्रिभुवन जन सेवक ।
 त्रिभुवन निलक ममा प्रभु, भाल निलक जयगंत ॥८॥
 सिद्धगिला गुण ऊजली, लोकांनिक भगवंत ।
 वसिषा निग वारण सहं, सिद्ध गिला पूजंत ॥९॥
 उपदेशक नय मन्यनां, निम नय भंग जिनेद ।
 पूजो बहुविध भावणी, कंठ सहु वीर मुनिदे ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

ह्ये राजा पद्मावती, जीधराजि त्रमाये । जाण
 पणु जग ते भक्त, ह्ये येला प्याये ॥ १ ॥ ते मुक्त
 मिच्छामि दृक्कटं, अरिहंतनो माय । जे में जीय विरा
 धिया, चडराजी सार ॥ ते० ॥ २ ॥ गान माय धृति-

बलि बलि दीनवु प्रभु पूर आमा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

बलि बलि हे प्याडे गाडे जिनवर वार, जिनवर पञ्चगण
 शाखा धर्मनः सीर । आमाइ रीमाने हुंनो दिन वचाम,
 परिकायण दीनवुदी करिगे अण उपवाम ॥१॥ वड-
 बीरो जिनवर गुता मगर प्रसार, करिगे भये भाये,
 मरिगे गुण भेदार । बलि भय प्रवादे किरनी लाम
 खनेन, इस वने पञ्चगण गद्गुमं मदिरावेन ॥२॥ गुण
 व. गुतादी मच वाचनाये वेनाय, भीरुमणन तिरा
 सुतनी वाग गलाय । मनिदिन परभावना पुन भगा
 खनेन, इस मरिगण प्राणा वने पञ्चगण वने ॥३॥ व
 नि मारपीक-उल करिगे वाववार, कोई भावना भाये
 वडे नगरी जितभार । मारपीक पञ्चगण इस भेवन भा
 कद सुभेदी मानि । वडे जिनमाम मरिद ॥४॥

॥ अथ भगवन्तके अंग गुता ना दृष्ट ॥

अथ भगवन्तके अंग गुता ना दृष्ट ॥
 अथ भगवन्तके अंग गुता ना दृष्ट ॥
 अथ भगवन्तके अंग गुता ना दृष्ट ॥
 अथ भगवन्तके अंग गुता ना दृष्ट ॥
 अथ भगवन्तके अंग गुता ना दृष्ट ॥

करकाँटे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥१॥

मान गर्वुं दोष धँझी, देखी कीर्ण अनन्त ।

भुजायले भवजल तरया, पूजो गर्व महन्त ॥४॥

रघुग्रय गुण ऊजली, मकल सुगुण विश्राम ।

नाभि कमल नी पूजना, कान्ता अविलल धाम ॥५॥

हृदय कमल उपशम घले, धाल्या रामनं रंग ।

हेम दई यन गेटनें, हृदय मिलक संगीय ॥६॥

मोल पहर देई देशना, कंठ विषर धर मूल ।

मधुर धुनी सुरनर सुणें, निम गले मिलक अमूल ॥७॥

नीधंकर पद पुन्य धी, त्रिभुवन जन रंघन ।

त्रिभुवन मिलक समा प्रभु, भाल मिलक जगद्वन ॥८॥

सिद्धजिह्वा गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ।

वसिष्ठा निज कारण सही, सिद्ध जिह्वा पूजंत ॥९॥

उपदेशक मध मन्थनी, निम नव धंग जिनेइ ।

पूजो बहुविध भावणी, कहे सहु धार मुनिदे ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हनें हाणी पद्मावती, जीवराजि नरमाये । जान

पणु लग मे भयई, हण सेला पाये ॥ १ ॥ मे मुभ

मिच्छामि दृष्टे, अतिरंजी माय । ले मे जाव विरा

धिया, कहराजी लाय ॥ मे ॥ २ ॥ मान मान दधि-

बलि बलि धीनबु प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

बलि बलि हं घ्याउं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजूसण
 शरणा धर्मनी सोर । आसाद चौमासे हुंती दिन पचास,
 पडिक्कमण संवच्छरी करिये त्रण उपवास ॥१॥ यउ-
 वीशे जिनवर पूजा सतर प्रकार, करिये भले भावे,
 भरिये पुण्य भंडार । बलि बैत्य प्रवाडे किरतां लाभ
 अनंत, इम पर्व पजूसण सहुमें महिमाधन ॥२॥ पुस्त-
 क पूजाधी नय वाचनाये वंचाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां
 सुणतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभावना धूप अगर
 उखेय, इम भविष्यण प्राणी पर्व पजूसण सेव ॥३॥ ब-
 लि साहमीवच्छल करिये बारंबार, कोई भावना भाये
 केई तपसी शिलभार । अटदीह पजूसण इम सेवन आ-
 गंद, सुपदेवी मानिध कहे जिनलाभ मरिंद ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा ना दूहा ॥

जलैभरी संगुट पात्रमां, युगलिक नर पूजंन ।
 कायंभ चरण अंगठडे, दागक भयजन्य अंग ॥१॥
 जानुं बले काउंस्माग रथ्या, विचरया देश विदेश ।
 लखां लखां केवल लाया, पूजो जानु नरेश ॥२॥
 लोकांतिक वचनं करी, वरम्या वरमो दान ।

करकाँडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
 मान गपुं दोष अंशधी, देखी धीर्य अनन्त ।
 भुजायले भवजल तराया, पूजो खंध महन्त ॥४॥
 रघुग्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम ।
 नाभि कमल नी पूजना, करता अविचल धाम ॥५॥
 हृदय बामल उवशम यले, पाल्पा रागनें रांप ।
 हेम दहे यन खंडनें, हृदय निलक मनोप ॥६॥
 मोल पहर देई देजना, कंड विशर पर तुल ।
 मधुर धुनी सुरमर सुणें, तिम गलं निलक अमूल ॥७॥
 नीर्यकर पद पुन्य धी, त्रिभुवन जम सेवन ।
 त्रिभुवन निलक समा प्रभु, भाल निलक जपयंत ॥८॥
 सिद्धजिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवण ।
 यसिपा निण कारण सही, सिद्ध शिखा पूजत ॥९॥
 उपदेशक नय तत्वनां, तिम नय अंग जिनंद ।
 पूजो बहुविध भावरी, कहे सहू वार मुनिंद ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हवे रार्ण पद्मावती, जीवराजि खमाये । जाण
 वणुं जग ते भन्दे, इण वेला आये ॥ १ ॥ ते मुक्त
 मिच्छामि दुक्कटं, अरिहंतनी माख । जे में जाय विरा
 धिया, चउराजी लाख ॥ ते० ॥ २ ॥ मान माग्य पृथि-

बलि बलि धीनयुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

बलि बलि हूं घ्याउं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्य पजूसण
 शरणा धर्मनी सीर । आसाद चांमासे हुंती दिन पचास,
 पडिक्कमण संयच्छरी करिये त्रण उपवास ॥१॥ बड-
 कीशे जिनवर पूजा समर प्रकार, करिये भले भाये,
 भरिये पुण्य भंडार । बलि चैत्य प्रवादे किरतां लाभ
 अनंत, हम पर्य पजूमण सहृमं महिमावंत ॥२॥ पुस्त-
 क पूजावी नव वाचनाये वंचाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां
 सुणतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभायना घुप अगर
 उगेय, हम भविष्य प्राणी पर्य पजूमण मेय ॥३॥ य-
 लि माहर्मावच्छल करिये धारंवार, कोई भायना भाये
 केदं तपसा जिलभार । अहदीह पजूमण हम सेवन आ-
 गेद, सुगरीषा मानिध कहे जिनलाभ मुरिंद ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा ना दृहा ॥

जलधरा मंगुट पात्रमां, युगलिक ना गुंज ।
 कदम परण अंगटटे, दाणक भवजल पंज ॥१॥
 जानु बंन कउमाराग रक्षा, विषमया देश विदेश ।
 लहा लहां केयल लखा, गुंजो जानु मरेश ॥२॥
 मोर्कानिक धननं करी, परमा परमा दान ।

करकांठे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥१॥
 मान गयुं दोष घंघरी, देखी वीर्य अनन्त ।
 भुजायले भयजल तरथा, पूजो खंघ महन्त ॥४॥
 रक्षग्रय गुण ऊजली, सफल सुगुण विश्राय ।
 नाभि कमल बी पूजना, करना अविनल धाय ॥२॥
 हृदय कमल उपशम पले, धाल्या रागनं रोप ।
 हेम दहै धन मंहनं, हृदय तिलक संनोप ॥६॥
 मोल पहर देह देडाना, कंठ विरर घर तूल ।
 मधुर धुनी सुरनर सुणें, निम गलं तिलक अमूल ॥७॥
 मीरंकर पद पुन्य धी, त्रिभुवन जन तेरथ ।
 त्रिभुवन तिलक ममा प्रभु, भाल तिलक जयगंत ॥८॥
 सिद्धजिला गुण ऊजली, लोकांनिक भगवंत ।
 वसिषा निण कारण महां, सिद्ध जिन्या पूजंत ॥९॥
 उपदेशक मय मन्यना, निम मय धंग जिनंद ।
 पूजो बहुविध भावरी, कहे सहू धार मुनिंद ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

ह्ये राणा पद्मावती, जीयराजि लमाये । जाण
 पणुं जग ते भलुं, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुक्त
 मिच्छामि दुष्कहं, अरिहंतनी माख । जे में जीव विरा-
 धिया, बडराजी साख ॥ ते० ॥ २ ॥ मान माग्य पृथि-

बलि बलि धीनयुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

बलि बलि हृं प्याउं गाउं जिनघर वीर, जिनपर्य पजूसग
 शक्या धर्मनी सीर । आसाद चौमासे हुंती दिन पचास,
 पहिदामण संयच्छरी करिये अणु उपवास ॥१॥ बउ-
 बीरो जिनघर पूजा सनर प्रकार, करिये भले भायें,
 भरिये पुण्य भंडार । बलि कैत्य प्रयाहे किरता लाभ
 समंत, हम पर्य पजूसग सहृमं महिमावंत ॥२॥ पुस्त-
 क पूजार्थ नव वाचनाये बंगाय, श्रीकृष्णसूत्र जिहां
 सुणतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभावना धूप अगर
 जलेव, हम भविष्य प्राणी पर्य पजूसग मेव ॥३॥ ब-
 लि गारुडीवच्छल करिये बारंबार, कोई भायना भायें
 नई नयनी जिलभार । अहदीह पजूसग हम मेव न आ-
 गेद, सुमनेवी मानिध कहे जिनमाम गुरिंद ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा ना दृष्टा ॥

जन्ममर्ग मंगुट पात्रमां, युगलिक नर पुरातन ।
 कपम बाग अंगुटे, दागक भवजल पंन ॥१॥
 जानु कने काउमगाग रक्षा, विनयना देग विवेग ।
 नदी नदी केवल लखा, पूजा जानु मरेज ॥२॥
 मोर्जातिर, कपनं कर्मा, वाग्गा वार्मा दान ।

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
 मान गर्व दोष भ्रंशधी, देखी कीर्ति अनन्त ।
 भुजायले भवजल तरधा, पूजो खंड महन्त ॥४॥
 रत्नप्रप गुण ऊजली, सफल सुगुण विश्राम ।
 नामि कमल नी पूजना, करता अविचल धाम ॥५॥
 हृदय कमल उपशम पले, बाल्या रागनें रोप ।
 हेम दहे धन खंडनें, हृदय निलक मनोप ॥६॥
 मोल पहर देई देजना, कंड विधर वर मूल ।
 मधुर धुनी सुरनर सुणे, निम गले निलक अमूल ॥७॥
 नार्थकर पद पुन्य धी, त्रिभुवन जन सेवन ।
 त्रिभुवन निलक समा प्रभु, भाल निलक जयवत ॥८॥
 सिद्धजिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ।
 पसिपा तिण कागण सहा, सिद्ध जित्या पूजंत ॥९॥
 उपदेशक नय नम्यनां, तिम नय भंग जिनेद ।
 पूजो बहुविध भावधी, कहे सह धार मुनिंद ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

ह्ये राणी पद्मावती, जीवरानि स्वमाये । जाण
 गुं जाग ते भल्लं, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुक्त
 मेच्छामि दुष्कटं, अग्निहंतरी माख । जे में जाय विरा-
 धिया. षडराजी लाख ॥ ते० ॥ २ ॥ मान माग्य पृथि-

बलि बलि धीनहुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

बलि बलि हूं घ्याउं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजूसण
 शख्या धर्मनी सीर । आसाढ चौमासे हुंती दिन पचास,
 पडिक्कमण संवच्छरी करिये त्रण उपवास ॥१॥ घउ-
 बीशे जिनवर पूजा सतर प्रकार, करिये भले भाये,
 भरिये पुण्य भंडार । बलि बल्य प्रवाडे किरतां लाभ
 अनंत, इम पर्व पजूसण सहृमं महिमावंत ॥२॥ पुस्त-
 क पूजावी नव वाचनाये बंधाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां
 सुणतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभावना घूप अगर
 डलेव, इम भविष्यण प्राणी पर्व पजूसण सेव ॥३॥ ब-
 लि साहमीवच्छल करिये वारंवार, कोई भायना भाये
 केई तपसा शिलधार । अडदीह पजूसण इम सेवन आ-
 गंद, सुपदेवी मानिष कहे जिनलाभ मुरिंद ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा ना दूहा ॥

जलैभरी मंगुट पात्रमां, युगलिक नर पूजंन ।
 कापंभ परण अंगठटे, दाणक भवजन् अंत ॥१॥
 जानुं बले काउरमाग रह्या, बिचरन्त्या देश विदेश ।
 एहां एहां वेयल लह्या, पूजो जानु नरेश ॥२॥
 मोकांनिके धननं करी, परम्पा वरमी दान ।

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
 मान गयुं दोष धंशधी, देखी कीर्ष अनन्त ।
 भुजापले भवजल तरधा, पूजो लंघ महन्त ॥४॥
 रक्षग्रप गुण ऊजली, सखल सुगुण विश्राम ।
 नाभि कमल नी पूजना, करता अविचल धाम ॥५॥
 हृदय कमल उपशम पले, बाल्या रागनें रोप ।
 हेम दहं पन गंधनें, हृदय मिलक मनोप ॥६॥
 मोल पहर देई देशना, कंड विवर पर तूल ।
 मधुर धुनी सुरनर सुणें, निम गलं मिलक अमूल ॥७॥
 नार्थकर पद पुन्य धी, त्रिभुवन जन सेवक ।
 त्रिभुवन मिलक सम्रा प्रभु, भाल मिलक जयवंत ॥८॥
 सिद्धजिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ।
 वसिषा निग कारण मही, मिद्र जिखा पूजंत ॥९॥
 उपदेशक नय मत्यनां, निम नय धंग जिनंद ।
 पूजो पदुविध भावधी, कहे सह धीर मुनिंद ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हयं राणी पद्मावती, जीधराजि स्वमाये । जाण
 गुं जग ते भट्टं, इण वेला आयें ॥ १ ॥ तं मुक्त
 मेच्छामि दुष्कटं, अरिहंतनी माख । जे में जीय विरा
 धिया, चडराजी लाख ॥ ते० ॥ २ ॥ नाम माय्य पृथि-

बलि बलि धीनयुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

बलि बलि हं घ्याउं गाउं जिनधर धीर, जिनपर्य पजूसण
 शक्या धर्मनी सीर । आसाद सोमासे हुंती दिन पचास,
 पडिहामण संयच्छरी करिये त्रण उपवास ॥१॥ यउ-
 बीजे जिनधर पूजा सत्तर प्रकार, करिये भले भाये,
 भरिये पुण्य भंडार । बलि बल्य प्रयादे किरता लाभ
 अनंत, हम पर्य पजूसण महुमें महिमायेन ॥२॥ पुस्त-
 क पूजाया नव वाचनाये रंगाय, श्रीरत्नपुत्र जिहां
 सुणतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभावना घुव भगर
 उमेव, हम भविष्य प्राणी पर्य पजूसण मेव ॥३॥ ब-
 लि साहसावच्छल करिये वांछार, कोई भावना भाये
 कहे तपसा जितभार । साहसाह पजूसण हम मेव न आ-
 गेद, सुमनेसा मानिय कहे जिनमाम गुरिंद ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा ना दृष्टा ॥

जलधरा मंगुट पात्रपां, गुगलिक नर वृत्तन ।
 कदम बाग अंगदंड, दाणक भवजल खंन ॥१॥
 जानु बल काठगाग रत्ना, विनयना देग विवेग ।
 नर्या नर्या केवल लखा, पूजां जानु मनेज ॥२॥
 लोकांतिक कर्तव्य कर्म, वाग्या वागी दान ।

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥

मान गगुं दोष श्रृंगारी, देखी कीर्ति जननत ।

भुजायले भवजल तराया, पूजो गंध महन्त ॥४॥

रत्नप्रप गुण ऊजली, मकर सुगुण विधाम ।

नाभि कमल नी पूजना, कतता अविलल धाम ॥५॥

हृदय कमल उपशम पल्ल, पाल्वा रागनं रंग ।

हैम दहै धन गंधनं, हृदय निलक रंगोप ॥६॥

मोह पहर देई देजना, बल विधर पर मूल ।

मधुर धुनी सुरनर सुगं, निम गनं निलक अमूल ॥७॥

नार्थकर पद पुन्य धी, प्रिभुवन जन नैवेद्य ।

प्रिभुवन निलक रमा प्रभु, भाल निलक जयक ॥८॥

सिद्धजिला गुण ऊजली, लोकानिक भगवंत ।

पसिया निग कारण सही, मिद जिला पूजन ॥९॥

उपदेशक मय तन्वना, निम नय धंग जिनंद ।

पूजो बहुविध भावरी, बल बहु धर मुनिदे ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हरे राणा वद्यावती, ज्ञापयति प्रसादे । जान

वर्ण जग ते भाल, हण घेला प्यावे ॥ १ ॥ ते मुक्त

मिष्टानि वृक्ष, अरिहंतनी गान । जे में जीव विरा

धिया, चडरानी लाग्य ॥ ते० ॥ २ ॥ गान लाग्य दधि-

शीनणा, साते अष्काय । सानलाख तेउकापना
 बलो घाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दश प्रत्येक वनस्पति,
 साधारण । की ति चउरिंदिय जीवना, वेवे लाख
 ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्वेच नारकी, चार चार
 शी । चउदह लाख मनुष्यना, ए लाख चोराशी
 ॥ ५ ॥ इण भवे परभवे सेवियां, जे पाप अ
 त्रिविध त्रिविध करी परिहकं, दुर्गतिनां दातार
 ॥ ६ ॥ हिंसा कीर्ना जीवनी, पोल्या मृपावाद
 अदस्तादाभना, मैथुन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥
 मैल्यो कारिमो, कीपो कोष विशेष । मान माया
 में कीया. बली राग ने छेप ॥ ते० ॥ ८ ॥ कला
 जीय दृढया, दीधां कृडां कलंक । निंदा कीर्ना प
 रति जारनि निशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाली कीर्ना
 नरे, कीपो भाषणमांसो । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो,
 आण्यो भगंसो ॥ ते० ॥ १० ॥ त्यादकीने
 कीया, जीय नानाविध घात । बाटोमारभवे चर
 मारवा दिनने रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ कार्जा मुक्ताने
 पदो मंत्र कटोर । जीय अनेरुझभे कीया, कीर्ना
 अघोर ॥ ते० ॥ १२ ॥ गार्जने भवे मांडलां,
 जलधाम । भोयर भील कोली भवे, मृग पाडा
 ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोट्यालने भवे में कीया, अ

॥ पंशीयान मराविषा, कोरछा छुष्टी दंष्ट ॥ ते०
 ॥ परमाधामीने भवे, दीधां नारकी दुःख ।
 भेदन वेदना, ताडन अतितिर ॥ ते० ॥ १५ ॥
 निभवे में क्रिया, नामाष्ट पचाव्या । तेली भवे
 पीलिया, पापे पिष्ट भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥
 भवे हल रेडीयां, काट्यां पृथ्वीनां पेट । खुट
 र घणां क्रिया, दीधां पलद खपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥
 ने भवे रोविषा, नानाविध वृक्ष । मृत् पत्र फल
 ती, लागां पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधो-
 ने भवे, भरया अधिका भार । पोठी घुटे कीटा
 दया नाणी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ पुष्टीपाने भवे
 वा, कीधां रंगण पास । अग्नि आरंभ कीधा घणा,
 तद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ शूरपणे रण जूझ-
 गरयां माणमर्द । मदिरा मांस मायण भरुयां,
 मूल ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ त्याग्य रणाधी
 गो, पाणी उल्लेच्यां । आरंभ कीधा अतिघणा,
 पापज संच्यां ॥ ते० ॥ २२ ॥ कर्म अंगार कीपा
 दरमें दय दीधा । मम त्याधा पीनरागना, वृद्धा
 त कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ विन्यी भवे उंदर पीपा,
 तो हत्पारी । मृद गमार तणे भवे, में जू लीए
 ॥ ते० ॥ २४ ॥ भाइभुंजा तणे भवे, एकेद्विष

धीनगा, साने अशुभाय । साननाए तेउकायना, साने
 पली पाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दश प्रण्येक घनस्वति, चौदह
 साधारण । पीनि चउरिंद्रिय जीवना, वेवे लाग्य विचार
 ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवना निर्देव नारकी, चार चार प्रका-
 शी । चउदह लाग्य मनुष्यना, ए लाग्य श्रीराजी ॥ ते०
 ॥ ५ ॥ इग्य भवे परमये मेचियां, जे पाप अकार ।
 त्रिविधत्रिविध करी परिहृंक, दुर्गतिलां दानार ॥ ते०
 ॥ ६ ॥ हिंसा कीथी जीवनी, घोल्या मृषावाद । दोष
 अदत्तादानना, मैथुन इन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह
 मेल्यो कारिमो, कीथो कोष विडोय । मान माया लोभ
 में कीया, चली राग ने छेप ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी
 जीव दृहव्या, दीर्घां कृडां कलंक । निंदा कीथी पारकी,
 रति अरनि निशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाई कीथी चो-
 तरे, कीथो धापणमोमो । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो
 आप्यो भरांसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खादकीने भवे में
 कीया, जीव नानाविध घात । चांडीमारभवे चरकलां,
 मार्या दिनने रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ काजी मुल्ताने भवे,
 पदी मंत्र कठोर । जीव अनेकझभे कीया, कीर्धां पाप
 अघोर ॥ ते० ॥ १२ ॥ साझीने भवे मांछलां, जान्यां
 जलवास । धीवर भील कोली भवे, मृग पाइया पास
 ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने भवे में कीया, आकरा

। પંડીવાન મરાવિયા, કોરદા હુદો દંટ ॥ તે૦
 ॥ પરમાધામીને ભવે, દીધાં નારકી દુઃખ ।
 ભેદન વેદના, તાડન અતિતિહ ॥ તે૦ ॥ ૧૫ ॥
 નેભવે મેં કિયા, નાંભાહ પચાવ્યા । તેલો ભવે
 ગોલિયા, પાપે વિહ અરાવ્યા ॥ તે૦ ॥ ૧૬ ॥
 ભવે ફલ લેઈયાં, ફાડ્યાં પૃથ્વીનાં પેટ । ચૂડ
 ઘણાં કિયા, દીધાં યલદ ચપેટ ॥ તે૦ ॥ ૧૭ ॥
 ભવે રોવિયા, માનાવિધ વૃક્ષ । મૂલ પત્ર ફલ
 લે, લાગાં વાપ તે લક્ષ ॥ તે૦ ॥ ૧૮ ॥ આખો-
 ને ભવે, અરથા અધિકા ખાર । પોંઠી પૂટે કીદા
 દયા નાળી લગાર ॥ તે૦ ॥ ૧૯ ॥ પુઠીવાને ભવે
 ના, કીધાં રંગણ વામ । અગ્નિ આરંભ કીધા ઘણા,
 દ અભ્યાસ ॥ તે૦ ॥ ૨૦ ॥ ઝૂમ્પણે રણ જૂઠા-
 રથાં માણમધુંદ । મદિરા માંસ માગણ મહુવાં,
 મૂલ ને વંદ ॥ તે૦ ॥ ૨૧ ॥ ગ્યાય ગ્વણાલી
 ના, પાળી ઉલ્લેચ્યાં । આરંભ કીધા અતિઘણા,
 પાપજ સંચ્યાં ॥ તે૦ ॥ ૨૨ ॥ વર્મ અંગાર કીધા
 દરમેં દય દીધા । સમ રાધા લીમરાગના, કૂદા
 કીધા ॥ તે૦ ॥ ૨૩ ॥ વિન્નરી ભવે હંદર મીષા,
 દરવારી । મુઠ ગમાર તણે ભવે, મેં જૂ સીર
 ॥ તે૦ ॥ ૨૪ ॥ ખાદમુંજા તણે ભવે, એકેટિય

धीनगा, साते अप्रकाय। सानलास तेउकायना, स
 बली चाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दग प्रन्येरु वनररति, चो
 साधारण। धी निचउरिद्रिय जीवना, वेवे लाख वि
 ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता निर्गव मारकी, चार चार प्र
 शी। चउदह लाख मनुष्यना, ए त्याग्य मोराशी ॥ ते०
 ॥ ५ ॥ इण भवे परभवे मेचियां, जे पाप अद्वार
 त्रिविध त्रिविध करो परिहृं, दुर्गतिनां दातार ॥ ते०
 ॥ ६ ॥ हिंसा कीर्था जायनी, सोल्या मृषावाद। दो
 अदस्तादानना, मैथुन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिप्र
 मैल्यो कारिमो, कीधो क्रोध विशेष। मान माया लो
 में कीया, बली राग ने छेप ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह क
 जीव दृष्ट्या, दीधां कूडां कलंक। निदा कीर्था पारकी
 रति अरति निशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ खाडी कीधी चो
 तरे, कीधो थापणमोसो। कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भल
 आप्यो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाट्काने भवे मै
 कीया, जीव नानाविध घात। खाडीमारभवे घरकलां
 मार्या दिनने रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ काजा मुत्ताने भवे,
 पद्दी मंघ कठोर। जीव अनेकझभे कीया, कीधो पाप
 अघोर ॥ ते० ॥ १२ ॥ साछीने भवे मांछलां, जान्यां
 जलयाम। धांवर भोल कोली भवे, मृग पाड्या पास
 ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने भवे मै कीया, आकरा

करदंड । पंक्षीयान मराचिया, कोरटा छरी दंड ॥ ते० ॥
 ॥ १४ ॥ परमाधामोने भवे, दीर्घां नारकी दुःख ।
 नेदन भेदन घेदना, ताहन अतिनिर ॥ ते० ॥ १५ ॥
 कुंभारनेभवे में किया, मीमात पचाव्या । तेली भवे
 तिल पीलिया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥
 हली भवे हल रेडीयां, काट्यां पृथ्वीनां पेट । छट
 निदान घणां किया, दीर्घां पलद चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥
 मालीने भवे रोपिया, नानाविध वृक्ष । मृद पत्र कल
 फूलनां, लागीं पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ जाधो-
 बाईयाने भवे, भरधा अभिषा भार । पोरी दूट कोरा
 पद्या, दया मार्गी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ धूरीयाने भवे
 तेनरधा, कीर्धा रंगण पाय । अग्नि आरंभ कीधा घणा,
 धातुयाद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ शूरपणे रग जुग-
 ता, मारधां माणमट्टद । मदिरा मांस माग्यण भरधा,
 खाधां मूल ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाय लवणावी
 धातुनी, पाणी उल्लेच्यां । आरंभ कीधा अनिघणा,
 पोते पापज मंच्यां ॥ ते० ॥ २२ ॥ कर्म अंगार कीधा
 बली, दरमें दष दीधा । सम राधा कोमरागना, कृदा
 कोमज कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ दिल्ली भवे उंदर सीपा,
 गिल्ली हत्पारी । मृद गमार तणे भवे, में जू सीग
 मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ भाइभुंजा तणे भवे, एकेडिप

धीनगा, माते अप्काय । सानद्याय तेउकायना, साते
 बली बाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रन्येरु बनसरति, चौदह
 साधारण । धी निचउरिद्रिय जीवना, वेवे लाख विचार
 ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवना निर्देव नारकी, चार चार प्रका-
 शी । चउदह लाख मनुष्यना, ए म्याय कोराशी ॥ ते०
 ॥ ५ ॥ इण भवे परभवे मेवियां, जे पाप अद्वार ।
 त्रिविष त्रिविष करी परिहृकं, दुर्गतिनां दातार ॥ ते०
 ॥ ६ ॥ हिंसा कीयो जीवना, सोलपा मृपावादा । दोष
 अदनादानना, मैथुन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह
 मैल्यो कारिमो, कीयो क्रोध विशेष । मान माया लोभ
 में कीया, बली राग ने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी
 जीव दुहव्या, दीर्घा कूडां कलंक । निंदा कीयो पारकी,
 रति अरति निशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ शाही कीयो चो-
 तरे, कीयो थापणमोमो । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो
 आप्यो भरोमो ॥ ते० ॥ १० ॥ खादकाने भवे में
 कीया, जीव नानाविध घात । चाडीमारभवे चरकलां,
 मारवा दिनने रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ काजी मुल्हाने भवे,
 पद्मी मंत्र कटोर । जीव अनेकझभे कीया, कीधां पाप
 अघोर ॥ ते० ॥ १२ ॥ साहीने भवे मांछलां, जान्यां
 जलवाय । धावर भील कोली भवे, मृग पाइया पास
 ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने भवे में कीया, आकरा

करदंड । घंटीपान मराविषा, कोरछा छड़ी दंड ॥ ते०
 ॥ १४ ॥ परमाधार्मीने भवे, दीघां नारकी दुःख ।
 छेदन भेदन वेदना, ताडन अतितिख ॥ ते० ॥ १५ ॥
 कुंभारनेभवे मैं किया, मोभाह पचाव्या । तेली भवे
 निल पालिया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥
 हाली भवे हल खेडीयां, फाट्यां पृथ्वीनां पेट । छुट
 निदान घणां किया, दीघां पलद चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥
 मालीने भवे रोपिया, नानाविध वृक्ष । मूल पत्र फल
 फूलनां, लागीं पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधो-
 बाईपाने भवे, भरथा अधिका भार । पोटी घूटे कीटा
 पट्या, दया माणी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ धुंधीपाने भवे
 छेतरथा, कीघां रंगण पास । अग्नि आरंभ कीधा घणा,
 धातुबाद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ शरपणे रण जूझ-
 ता, मारथां माणमर्द । मदिरा मांस माग्यण भक्ष्यां,
 खाधां मूल ने पंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाग खणावी
 धातुनी, पाकी उल्लेच्यां । आरंभ कीधा अतिघणा,
 पोते पापज संख्या ॥ ते० ॥ २२ ॥ कर्म अंगार कीधा
 घली, दरमें दब दीधा । सम खाधा कीतरागना, कूटा
 कोसज कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिन्दी भवे उंदर लोपा,
 गिली हत्यारी । मृद गमार तणे भवे, मैं जू लील
 मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ भाटभुंजा तणे भवे, एकेंद्रिय

जीव । जुबारि चणा गहू शेकिया, पाइनां रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥
 खांडण पीसण मारना, आरंभ अनंत ॥ २६ ॥
 रांधण इंधण अग्निनां, कीर्था पाप उदक ॥ ते० ॥ २७ ॥
 यिकथा चार कीर्धी बली, सेव्या पांच प्रमाद । इष्ट
 योग पाड्या कीर्था, रुद्ध विपद्याद ॥ ते० ॥ २८ ॥
 अने आवक तणा, ब्रत लहीने भांग्या । मूल
 उत्तर तणां, मुक्त दृषण लाग्या ॥ ते० ॥ २९ ॥
 बीछी सिंह श्रीवरा, शकराने समली । हिंसक जीव
 भवे, हिंसा कीर्धी सयली ॥ ते० ॥ ३० ॥ सुबा
 दूषण घणां, बली गर्भ गलाव्या । जीवाणी दोल्पा य
 शीलवत भंजाव्या ॥ ते० ॥ ३१ ॥ भव अनंत भम
 धकां, कीर्था देह संबंध । त्रिविध करी बोसिके, ति
 प्रतियन्त्र ॥ ते० ॥ ३२ ॥ भव अनंत भमतां ध
 कीर्था परिग्रह संबंध । त्रिविध त्रिविध करी बोसि
 निणर्तु प्रतियन्त्र ॥ ते० ॥ ३३ ॥ भव अनंत भम
 धकां, कीर्धी कुटुंबसंबंध । त्रिविध त्रिविध करी बोसि
 निणर्तु प्रतियन्त्र ॥ ते० ॥ ३४ ॥ इति परे इहमय प
 भवे, कीर्था पाप अग्नय । त्रिविध त्रिविध करी बोसि
 कर्म जन्म पवित्र ॥ ते० ॥ ३५ ॥ एति विधे ए आर
 भना, भाये करुणो जेह । समय मुंदूर कह पावधी, य
 एरुदो तेह ॥ ते० ॥ ३६ ॥ राग वेरार्हा जे सुणे, ए

પ્રાંજી ઢાલ । સમપસુન્દર કાઢે પાપપાં, છૂટે મનકાલ
॥તે૦॥૩૬॥ઈતિ॥

અથશ્રાવક નીચેલખેલા ગ્રણ મનોરથને ચિંત-
વનો મહા મોહોટી નિર્જરા કરે । તથા
સંસારનો અંત કરે, ને લિખિયે છેયે॥

ક્યારે હું પાછા મળા અર્ધનર પરિવ્રત્ત જે
મહાપાપનું મૂલ, દુર્ગતિને વધારનારો,કામ, મોહ,માન,
માયા, લોભ, વિષય અને કાપાપનાં સ્વાર્મા,મહાકુશલનું
કારણ,મહા અનર્થજારી દુર્ગતિની ડિલા,માઠી લેણાનો
પરિણામી, અજ્ઞાન, મોહ, મસ્તર,ગમ અને ટેપનુંમૂલ,
દશવિધ યનિર્ધમ રૂપ વસ્તુવૃક્ષનો દાવાનલ, જ્ઞાન,
ક્રિયા, ક્ષમા, દયા, મન્ય, સંગોપ તથા ચોથિધીજ રૂપ
સમક્ષિતનો માગ કરનારો, સંગમ અને પ્રાપ્ત્યર્થનો ધાન
કરનારો, કૃમતિ તથા કૃપુદ્ધિરૂપ દુઃસ્વદારિદ્રનો દેવા
ચાલો, સુમતિ અને સુપુદ્ધિરૂપ સુલભભાગ્યનો માણ
કરનારો, મપ સંપમ રૂપ ખનને નૃટનારો, લોભ વલેગ
રૂપ સમુદ્રનો વપારનારો, જન્મ જરા અને મરણનો
દેવાચાલો,વપટનો ખંદાર,મિથ્યાત્વ દર્જન રૂપ દાન્ય-
નો ખરેલો, મોદમાર્ગનો વિપ્નજારો, કદવા કર્મ વિપા-
કનો દેવાચાલો,અર્નેન સંસારનો વધારનારો, મહા પાપી,

પાંચ ઇન્દ્રિયના વિષયરૂપ વૈરાની પુષ્ટિનો કરનારો, મો-
હોદી ચિંતા શોક ગારવ અને સ્વેદનો કરનાર, સંસારરૂપ
અમાથ વહ્નિનો સિંચવાવાળો, કૂહ કપટ અને ક્લેશનો
આગર, મોહોદા સ્વેદનો કરાવનારો, મંદબુદ્ધિનો આદ-
ર્યો, ઉત્તમ સાધુ નિર્ગ્રંથાચે એને નિંચો છે, અને સર્વ
લોકમાં સર્વ જીવોને પણ મરિયાં પીજો કોઈ વિષમ
નથી, મોહરૂપ પાશનો પ્રતિબંધક, દુઃખલોક તથા પરલો-
કના સુખનો નાશ કરનાર, પાંચ આશ્રયનો આગર,
અનંત દારુણ દુઃખ અને ભયનો દેવાવાળો, મોહોદા સા-
ચર વ્યાપાર કુવાણિગ્ય કૃતકર્માદાન નો કરાવનારો,
અધુવ, અનિત્ય, અજ્ઞાનનો, અમાર, અગ્રાણ, અશ-
રણ, પ્યો જે આરંભ અને પરિશ્રમ નેને હું કરારે છાં-
ડીશ? જે દિવસ છાંડિશ, તે દિવસ મહારો ખસ્ય છે!
॥ ૧ પ્રથમ મનંરથ ॥

૭ કરારે હું મુંદબદ્ધને દશ પ્રકારે ગતિર્ધર્મ પારી, નવ-
વાહે વિગુદ્ધ પ્રાપ્તિપારી, સર્વ માયજ પરિહારી, અભ્યા-
સના સત્કાર્યગુણપારી, પાંચ મમિતિ પ્રણ મુમિપે
વિગુદ્ધવિદ્યારી, મોહોદા અભિગ્રહનો ચારી, ચેહેનાર્થોગ
દાપ રહિત વિગુદ્ધ આદારી, સખર મેહે મંદમ પારી,
વાર મેહે તમ્યાકારી, એવ આદારી, પ્રાંચ આદારી,
અગત આદારી, વિગત આદારી, મુક્ત્ય આદારી, મુદ્ધ

आहारी, अंतर्जावी, पांनर्जावी अरसर्जावी, विरसर्जावी,
 मृदुखर्जावी, तुच्छर्जावी, सर्व रस त्यागी, छप्पायना दया-
 ल, निर्दोभा, निःश्यादी, पंखातुल्य, घायरानी वरे अ-
 प्रतियुद्ध विहारी, वातरागर्जा आश्रामहित, एहवा गुणानां
 भारक जे अगगार मे हुं केयारे भईज? जे दिवस हुं
 पूर्वोक्त गुणयान भाइज से दिवस भन्य जे ॥ ७ रीजां
 मनोरथ ॥

हे वयारे हुं सर्व पावस्थानक आयोई, निःशाल्य
 भई, सर्व जागरांति स्वमार्धाने, सर्वधन संभारिने, अद्वार
 पावस्थानकर्त्री त्रिविधे योग्यने, वारे आहार पणपार्था-
 ने, जारिने इंहेले, श्यामोच्छारे योग्यार्धाने अण आ-
 राधना आराधना भक्ता, वार भंगनिक, रूप वार जारण
 मुने उद्योगा भक्ता, सर्व संभारने वृंढ देना भक्ता, एक
 अरिहंत, रीजा निष्ठ, रीजा ग्राधु, अने गोवा वेद्यनि-
 प्ररूपिभर्म, तेने व्यापना भक्ता, जरीरनी ममता रहित,
 भयो भक्ता, पादोपगमन संभारा रहित, वांच अति-
 वार टाळना भक्ता, मरगने अणपांडना भक्ता, एहवे पं-
 दित मग्ग अचकाले मुभने बगविता? ॥ ७ रीजां म-
 नोरथ ॥

७ अण मनोरथने श्रावक, मन वदन अने वागावे-
 कर्ता शुद्धपणे व्यापना भक्ता सर्व कर्म निर्जिहने संभार-

नो अंग करे, मोक्षरूप शाश्वत स्थानक प्रत्ये पामे ॥

अथ सूतकवीचार प्रारंभ ।

प्रथम किसी के घर जन्म होवे उसका सूतक ।

१ पुत्र जनमे तो दिन दश और पुत्री जनमे तो बारह दिन तक सूतक रहे ।

२ बारह दिन उस घरका मनुष्य देव पूजा न करे । बगल में जीमना हो नो दूसरे के घर से पानी लेकर देव पूजा करे ।

३ सृषायह करनेवाली कगनेवाली को नो नवकार भी नहीं गीनना चाहिये ।

४ प्रसववाली स्त्री माम तक जिनपूजा न करे, दर्शन भी न करे ।

पूरा विचारसार प्रकरण मध्ये कणो हे ।

५ घरना गोत्र बालाने दिन पांचका सूतक ।

६ व्यवहारभाष्य की मलयगिरिकृत टीका मध्ये कणो हे ।

७ जानवर घरमें जनमे तो दिन दो का सूतक, और जंगल में जनमे तो एक दिन का जानना । भैंस माघ का दूध १० दिन बाद कण्ये ।

१० पकरी उटड़ी का दूध आठ दस दिन बाद कण्ये ।

१२ दाम ब्रामी के बालक जनमे तो २४ ग्रह

सूतक रहे ।

ऋतुव्रती स्त्री संबंधी सूतक विचार—

दिन सीन तक भांडो उपकरण आदि छुने नहीं पोषोस प्रहर पाद साफ़ होकर पीछे हाथ लगावे। दिन पार पट्टिकमणादिक करे नहीं। पण सपर्या करे सो लेगे लागे । दिन पांच मथा स्नान पीछे जिनपूजा करे । रोगादिक कारण से सीन दिन विन्या पीछे जो रुधिर देखने में आवे सो दोष नहीं । विरंक कर्ता पवित्र हो- फर जिन प्रतिमा का जिनदर्शन, अमपूजा करे, साधु ने पट्टिलाभे, परन्तु जिनप्रतिमा की अंगपूजा न करे । यह वर्गही ग्रंथ में कहां है ।

॥ ऋतुव्रती ॥

पहले दिन अंतालनी, दूसरे दिन ब्रह्मणागिनी, तीसरे दिन प्रजान, चारें पोयन समान । चौथे दिन सुद्ध होम (पित) दर्शन करे ॥ इसका समझाव है जिसमें जिस निम्न स्तर दिया है । अधिकांश समागार में है । टाणोंग मृत्प्रती स्नान है जोटे दग असमझाव है चोटे देखलो ॥ इति ॥

१. यममें मरण होइ सो दिन पारह का मृतक, उसका यमको साधु आहार लेवे नहीं । उसका परका बस्तु से पूजा होवे नहीं, न निर्जायमूर्तों में सोमया

उद्देशा में कथो है ।

२ कलेवर से भीटियो हो तो तीन दिन पूजा न होय । जन्म मरण वाला घर दुर्गच्छनिक कथा है ।

३ उसके घर की चीज वस्तु ग्वाड़े हो तो देवदर्शन पडिक्कमणादिक तीन दिन न करे, नयकार नो ध्यान मन में करे जिसकी कोई बाधा नहीं ।

४ मृतकने अडक्या नहीं हो नो स्नान कीधा शुद्ध होय । दूसरा मनुष्य भी अडक्या हो तो मोलह प्रहर पडिक्कमणा न करे । जिसके घरे जीमे यो पारह दिन पूजादिक न करे ।

जनममा तथा देशान्तरे मरण पामे या यनि मरे सो एक दिन का मृतक ।

छाट घरम नो पालक मरण पामे सो छाट दिन का मृतक ।

षट् विचार सार प्रकरण में कथो है ।

गाय धर्मरत्न जानवर मरे सो कलेवर पारह लेजाय पाँचे एक दिनका मृतक ।

अन्य जानवरनो कलेवर फेक्यो पाँचे असज्जाय नहीं । दाम दासा आपणी नो भ्रायना हो उन के मरण हो तो तीन दिनका मृतक । जो मना महिनाना गर्भ पहियो हो उत्तना दिनका मृतक ।

एह कल्प भाष्य में कहाँ है ।

यैशाम्य यदि १, आयण यदि १, कार्तिक यदि १, गीर्शीर यदि १, ७ चार दिन में अमज्जाय जाणयी । ने मूत्र नी अमज्जाय तो प्रहर १२ तक जाणयी की तो काल अमज्जाय धंगर मूत्र में है उस फल करना ।

इकवीस जातनो धोयण पाणी ।

हाँदिनो १ कठोरानो २ नावलनो ३ तिलनो ४ तुस ५ जयनो ६ उमाममनो ७ कर्जानो ८ उगोपाणी ९ पायनो १० आंषा नो ११ कर्षाठ नो १२ दाण्यनो १३ हिमनो १४ बीजोगनो १५ धोमनो १६ आंवलानो १७ रोनो १८ बीलनो १९ नारिगल नो २० आंवलानो २१ नका काल अलग अलग मूत्र गरमाणे जानना ।

यावीस अभक्ष के नाम ।

१ पड़, २ पिपल, ३ विलसण, ४ कटुंबर ५ गुलर ह पांय कल । मदिरा, ६ मांस, ७ गहन, ८ मफलन यह चार महाविगई जानना । १० वरफ, ११ ओला, १२ कधी मिट्टी लूण, १३ रात्री भोजन, बासी रोटी, फजर कि ६ प्रहर बाद, शाम कि ४ प्रहर बाद । अभक्ष हो जाना है । १४ बहुबीजफल, १५ आचार,

१६ घांछपट्टा, १७ छिदल, कम गोरस उहीं, छद्द, दूध से अभक्ष होना है। १८ बेंगण, १९ तुच्छकल, २० अजाणीया कल, २१ चन्दिन रम—जिस वस्तु में खराब पदार्थ आना हो भान बगैरह। २२ अनन्तकाय— तथा जहरीली चीज अफीम, सोमल आदि। यह पा- बीस अभक्ष है, श्रावक माधु को नहीं लेना चाहिये।

अथ तपागच्छीय राइप्रतिक्रमण विधि ।

१ प्रथम पर्वली रीते सामायिक लेयुं, ते ज्यां सु-
धी अणनयकार गणीण मिहां सुधी सर्व विधि जाणवो ।
पछी—

२ खमासमण दइ “इच्छाकारेण संदिसह भगवन्-
कुसमिण दुस्समिण ओहड्डावणि राइपापच्छिस्स वि-
सोहणत्थं काउस्सगं करुं ? इच्छं, करेमि काउस्सगं,
अन्नत्थं ऊससिण्णं०” कही चार लोगस्स अथवा सोल
नवकारनो काउस्सगं करी पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो
। पछी—

३ खमासमण दइ “इच्छाकारेण संदिसह भग-
वन् ! चैत्थयंदनं करुं ? ” एम कही जगचिन्तामणिनुं
धैत्थयंदनं जपवीयराय सुधी कहेवुं ।

अण्णद्विपमामग ॥ १ ॥
 कम्मभूमिदि कम्मभूमिदि ॥
 पदममेवयणि ॥
 उषोम य सत्तगिसय ॥
 जिणयराण विहगंन लब्भइ ॥
 नवकोदिदि केषलिस ॥
 कोदि महस्म नव माहु गम्मइ ॥
 मंपइ जिणवर धम्ममुणि ॥
 विहुं कोदिदि घरनाग ॥
 समहण कोदिमहस्म दुअ ॥
 मुणिअइ निवविहाणि ॥२॥
 जयउ मारो जयउ मारो ॥
 गिमइ सत्तुंजि उअिन पट्ट नेमिजिण ॥
 जयउ वार मवइगिमइण ॥
 मुग्गअउदि मुणिसुव्यय ॥
 मुहगिपास दूहदुग्गिअंवइण ॥
 अवरविदिदि नित्थगग ॥
 विहुं दिमि विदिमि जं केवि ॥
 ताआणागयमेवइअ ॥
 वंहुं जिण मत्थेवि ॥३॥
 सत्ताणवइ महम्मा ॥

लक्ष्म्या छप्पन्न अट्टकोटीओ ॥

पत्तीस (य) पाप्पिआडं ॥

तिअलोण् नेइण् वंदे ॥४॥

पनरस कोटी सपाडं ॥

कोटी पायाल लक्ष्म अट्टवन्ना ॥

छत्तीस सहस्र अमिआडं ॥

मासपप्पियाडं पणमामि ॥५॥ इति

४ पूर्वोक्त देवमानी गेने भगवान्, आचार्य,
उपाध्याय अने सर्वसाधु-ए शारंगे प्रत्येक एकैक
गमासमण दइ वांद्या । वर्या

५ वे गमासमण देवापूर्वक सज्जागनो आदेश
मार्गी, एक नयकार मर्गी, भरेहेमरनी सज्जाग करेयी

॥ अथ भरेहेमरनी सज्जाय ॥

भरेहेमर पाट्टुपर्ली, अन्नगकुमारो अ रंजुगकुमारो
। मिठ्ठिओ अणियाउमो, अउमुत्तो नागदत्तो अ ॥१॥
मेअन्न भुलिअरो, वणारिणि नेदिनेअ मोहमिणि ।
वणवरो अ मुत्तोअ, पुंउरिओ वेमि करवंटु ॥२॥
हट्ट विहट्ट मुरंअण, मान मरामाअ माणिअरो अ ।
अरो दमअअरो, वणअअरो अ जणअरो ॥ ३ ॥
उंअट्ट वंअण्णो, मणगुत्तुमारो अरंजिगुत्तुमारो ।

यतो इलाहपुत्रो , विलाहपुत्रो ज याहुमुर्णो ॥ ४ ॥
 अजगिरि अजगरिअ, अजमुहर्था उदागगो मणगो ।
 ताटपहुरि मंथो , पज्जुछा मृन्ददेवो अ ॥ ५ ॥
 रभयो विण्हुकुमारो , अहकुमारो ददण्हारो अ ।
 मिज्जंभ वरगाह अ , मिज्जंभ मेहकुमारो ज ॥ ६ ॥
 एमाह महासत्ता , दिनु सुदं गुणगणेहि मंजुत्ता ।
 जेमि नामनाहणे , पावपपंथा विलय जंनि ॥ ७ ॥
 तुलमा गंदमपाला , मणोरमा मपगणेटा दमयंती ।
 तमरासुंदरी मया , नेत्रा गदा सुभदा य ॥ ८ ॥
 राहमई गिमिदत्ता , गटमायई अंजणा सिरीदेवी ।
 गिट्टमुजिट्ट मिगावटं , पभावटं चिह्णगारेखा ॥ ९ ॥
 पंभी सुंदरी रुपिणी , रेवट कुंती मिथा जयंती य ।
 देवटं दोवटं पारिणी , कलावटं गुल्फवला य ॥ १० ॥
 पडमायई मंगरी , गंधारी लक्ष्मणा सुर्सेमा य ।
 जंतुवटं मयभामा , रुपिणि कण्ठट महिंसीओ ॥ ११ ॥
 जयया य जययदिगा, भृष्मा मह नेव भूमदिगा य ।
 सेणा घंणा रेणा , भयणीओ धूलिमहरस ॥ १२ ॥
 इयाह महासईओ, जयंति अकलंकसीलकण्ठिआओ ।
 अज्जवि चज्जइजामि, जमपटहो निहुमणे मयले ॥ १३ ॥
 पछी एक नयकार गणी , इच्छकार सुहराह० कही
 “ इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! राहपट्टिमणे ठा-

लक्ष्म्या लक्ष्म अट्टकोडीओ ॥

पत्तीस (घ) घासिआइं ॥

तिअलोए चेहए वंदे ॥४॥

पनरस कोडी सयाइं ॥

कोडी पायाल लक्ष अडवत्ता ॥

छत्तीस सहस्र असिआइं ॥

सासपविंयाइं पणमामि ॥५॥ इति

४ पूर्वोक्त देयसीनी गीते भगवान्, आचार्य,
उपाध्याय अने सर्वसाधु-ग चारणे प्रत्येक एकैक
गमासमण दइ घांइयां । पछी

५ ने गमासमण देयापूर्वक सज्जायनी आदेश
मानी , एक नयकार मणी, भगहेमरनी सज्जाय कह्यो

॥ अथ भगहेमरनी सज्जाय ॥

भगहेमर बाहुपटी, अन्नमकुमार अ रंजनकुमारो
। तिरिओ अगिगाउसां, अडमुसां नागदभां अ ॥१॥

मेअअ मूलिमरो , गगगिनि नेदिसेण मोहगिरी ।

कपयरो अ मुसांमय , वृद्धिओ नेति करवंद ॥२॥

हाइ विहाइ मुदंमण , मात मशामाय मादि नरो अ ।

मरो दहसभरो , पदसभरो अ जलनरो ॥ ३ ॥

देववट्ट वरपुत्ता , गगमकुमारो अरनिगुट्ट माया ।

लो इलाहपुत्रो , चिलाहपुत्रो अ पाहुमुणी ॥ ४ ॥
 मज्झगिरि अजरविज्जअ. अज्जमुहन्धी उदायगो मणगो ।
 जलपगुरि मेषो , पज्जुया मृददेवो अ ॥ ५ ॥
 भयो विण्णुपुत्तागं , अरकुमारो ददण्णहारो अ ।
 मेज्जंम वृत्तभट्ट अ . मिज्जंभव मेत्तकुमारो अ ॥ ६ ॥
 माह महासत्ता , दिनु मृते गुणगणेहि मंजुत्ता ।
 वसि नामगाहणे , पायपयंथा विलाय जंति ॥ ७ ॥
 तुलसा चंदनपाला , मणोरमा मयगहेहा दमयंती ।
 मयागंमुदगं मया , नंदा भद्रा सुभद्रा य ॥ ८ ॥
 माह मिमिदत्ता , पट्टमायट् अंजणा सिरीरेवी ।
 जिट्ठुजिह्वा मिगायट् , पभायट् जिह्वादेशो ॥ ९ ॥
 यंभी मुडरा इण्णिर्मा , वेवट् कुंभी मिया जयंती य ।
 दवट् दावट् धाग्गिणी , कट्ठावट् पुष्कल्या य ॥ १० ॥
 पट्टमायट् ॥ गौरी , गंधारी लवस्वमणा सुर्गमा य ।
 तंयुवट् मयभामा , रुक्मिणि कण्ठट् महिर्माया ॥ ११ ॥
 लक्ष्मी ॥ लक्ष्मिदिष्टा , भूष्मा नट् चैव भूष्मदिष्टा य ।
 रंजना रंजा रंजा , भवर्णायां भृतिभद्रम् ॥ १२ ॥
 इयाह महासर्देजां , जयंति अकलंकसीलकन्दिमायां ।
 अज्जपि यज्जइ जग्गि , जसपट्ठो तिहुअणे मयले ॥ १३ ॥
 पछी एक नवकार गणी , इच्छकार सुहराह० कही
 .. इच्छाकारेण मंदिमह भगवन् ! राहपट्ठिमणे ठा-

लकखा छप्पन्न अट्टकोडीओ ॥

पत्तीस (य) यासिआइं ॥

तिअलोग चेइए बंदे ॥४॥

पनरस कोडी सथाइं ॥

कोडी पायाल लकख अट्टवन्ना ॥

छत्तीस सहस्र असिआइं ॥

सासपयिंथाइं पणमामि ॥५॥ इति

४ पूर्वोक्त देवमीनी गीते भगवान, आचार्य,
उपाध्याय अने सर्वसाधु-ग चारने ग्रन्थेक एकैकुं
णमाममण दइ बांदयां । पछी

५ ने नमाममण देवापूर्वक सज्जायनो आदेश
मार्गी , एक नयकार गर्गी, भरहेमरनी सज्जाय कह्यो

॥ अथ भेहेमरनी सज्जाय ॥

भरहेमर बाहुयरो, अभयकुमारो अ रंणकुमारो
। निरिओ अणियाउभो, अइमुनो नागदभो अ ॥१॥
मेअअ भुलिभरो , पगरिणि नेदियेण मीअमिओ ।
कणयरो अ मुदंगमण , वृष्टिओ वेमि करबंद ॥२॥
हण्ड विहण्ड मुदंगमण , मान मशमण्ड मालिभरो अ ।
मरो दण्डभरो , पण्डयरो अ जमभरो ॥ ३ ॥
अवण्ड वण्डा , गणकुमारो अर्धनिकुमारो ।

गो इलाहपुत्रो , निलाहपुत्रो अ पाहुमुणो ॥ ४ ॥
 अगिरि अजरविअ, अजरमुद्रा उदायगो मणगो ।
 अण्णपुत्रि मणो , पञ्जुला मृददेवो अ ॥ ५ ॥
 मणो विण्णकुमारो , अण्णकुमारो ददण्णदारी अ ।
 मण्णम कुरगइ अ , मिण्णमय मेण्णकुमारो अ ॥ ६ ॥
 माह माणमणा , दिनु मुं गुणमणेहि मंजुला ।
 मि नाममाणे , पावपंथा विलय जंनि ॥ ७ ॥
 लमा नंदनवाला , मणोमा मयमरेहा दमपंती ।
 मणांमुद्रा मंणा , नंदा भदा मुभदा य ॥ ८ ॥
 मण्णमि मिमिदत्ता , पट्मायटं अंजणा सिरीदेवी ।
 जिद्वुजिद्वु मिगायटं , पभायटं चिद्वुगादेवी ॥ ९ ॥
 मंभी मुद्रा रणिणी , रंयट कुंभी मिषा जगंभी य ।
 यटं दोयटं पारिणी , कलायटं पुण्णकुला य ॥ १० ॥
 इमायटं म गोभी , मंभारी लण्णवमणा सुग्गीमा य ।
 मयुयटं मण्णमाणा , रुण्णिणि पण्णट्ट मट्ठिसोअो ॥ ११ ॥
 मण्णया य जरण्णदिता , भुण्णा मह नेय भुण्णदिता य ।
 रेणा चेणा रेणा , भण्णोअो थुलिभदस्स ॥ १२ ॥
 मण्णया मट्ठासईअो, जण्णि जण्णलंकमीलकट्ठिआओ ।
 मण्णयि मण्णइ जाणि, जसपट्टो तिद्वुअणो मण्णले ॥ १३ ॥
 पणो पण्ण मयकार गणी , इच्छकार सुहराह० कणी
 इच्छाकारेण मंदिमह भगवन् ! राहपट्ठिमणे ठा-

लक्ष्म्या छप्पन्न अट्टकोटीओ ॥

पत्तीस (ष) पासिआइं ॥

तिअलोण नेइण वंदे ॥४॥

पनरस कोटी सपाटं ॥

कोटी पायाल लक्ष अट्टवत्ता ॥

छत्तीस सहस्र अमिआइं ॥

सासयधिंवाइं पणमामि ॥५॥ इति

४ पूर्वोक्त देवमानी गीते भगवान्, आचार्य,
उपाध्याय अने सर्वसाधु-७ नांने प्रत्येक एकैकं
लमाममगा दइ बांदां । पर्वा

५ ने लमाममगा देवापूर्वक मज्ञायतो आदेश
मानी , एक नयकार मणी, भगहेमरनी मज्ञाय कहंथा

॥ अथ भगहेमरनी मज्ञाय ॥

भगहेमर पाहुयरी, भगवतुमाग अरंत्तातुमागे
। निरिआं अगिगाउरां, अइमुनां नागदभाअ ॥१॥
मैमन्न पुनिमरां वगमिमि नेदिमेल मीहमि ।
वगयरां अ मृतामए , पुइमिओ नेमि करवट्ट ॥२॥
हए विहए मृदमए माल मतामए मादि नरां अ ।
मरां दमन्नमरां वमन्नमरां अ उमन्नरां ॥ ३ ॥
इववट्ट वगयरां मगमृदुमागे अरंत्तातुमागे ।

धत्ते इत्याहुनां , विल्लाहुनां अ वाहुमुणां ॥ ४ ॥
 पालतिरि अलरविमज्ज, अज्जमुत्थी उदायमां मणमां ।
 कालपहरि मंषां , पञ्जुणा मुत्तदेवां अ ॥ ५ ॥
 पभरो दिण्णुत्तमां , अट्टकुमारो दट्ठपहारी अ ।
 मिश्रंण करगह अ , मिश्रंभव मेत्तकुमारो अ ॥ ६ ॥
 लमाट मत्तात्ता , दिनु सुटं गुणगणेहि संगुता ।
 जंमि नामगाणे , पायपंथा विलय जंमि ॥ ७ ॥
 मूलमा गंश्चाला , मणोरमा मणगरेहा दमणंमी ।
 नमणांमुदं मंषा , नत्ता भत्ता सुभत्ता य ॥ ८ ॥
 गहमई मिसिदत्ता , पट्टमायई अंजला सिरीदेवा ।
 जिट्ठुजिट्ठ मिगायई , पमायई चिट्ठगादेवा ॥ ९ ॥
 वंभी मुत्तं रत्तिमां , वेयट्ठ कुंभी मिश्र जगंभी य ।
 देवई दोयई पारिमां , कट्ठापई गुल्लत्तला य ॥ १० ॥
 पट्टमायई य गंभी , मंभां लत्तत्तमा सुमंभा य ।
 लंघुयई मयभामा , रत्तिणि वण्णट्ठ मदिस्संमां ॥ ११ ॥
 लत्तत्ता य लत्तत्तत्ता , भुम्मा मत्त वेय भुम्मादिता य ।
 वेणा वेणा वेणा , भवणांमां भूत्तिभदस्स ॥ १२ ॥
 इयाइ मत्तामईमां , जगंमि अल्लंकार्मात्तत्तत्तत्तामां ।
 अज्जपि यज्जत्ताति, जमपट्ठो निट्ठजगो मयत्ते ॥ १३ ॥

पट्ठा पृष्ठ, नयत्तार गणां , इच्छत्तार सुत्तराइ० कट्ठा
 = इच्छाकारेण संदिमत्त भगवन् । गहपट्ठिमणे ठा-

३ ? ” एम कही, जमगो हाथ उपधि ऊपर धापी,
 “ इच्छं सञ्चसवि राइय दुचिनिय० ” कहीए। पछी-

२ नमोत्थुणं, करेमि भंने, इच्छामि ठामि काउस्सगो
 जो मे राइओ० तम्म उत्तरो० कही, एक लोंगस्स अ-
 भया बार नयकारनो काउस्सगं करी, प्रगट लोंगस्स
 कहीने मञ्चलोए अरिहंन चेइयागं० कही एक लोंगस्स
 अभया बार नयकारनो काउस्सग करयो ॥ पछी

३ पुक्कलरयरदी० सुअम्म०, वेदण० कही अनि-
 चारनो आट माथा अथवा माथा न आवहे सो आठ
 नयकारनो काउस्सग करी, वारी मिट्ठाणं मुट्ठाणं०
 कही बेमाने, प्रीजा आवटपरनो मुहपनि पट्टिनिही,
 वाइणां ने देया ॥ पछी

४ उभा भइ “ इच्छाकारेण वेदिमह भगवन् !
 राइये आलोउ? इछं आलोणमि जो मे राइओं अइआगे
 कओं० ” कही माग म्हाणनो वाट कही, अशीर वावणा-
 नक आलोउ, मञ्चसवि राइये० नो वाट कहेयो ॥ पछी

५ बेमाने जमगो दीपण उभा राणी एक नयरा
 मणी, करेमि भंने० इच्छामि वेदिमिडे० कही वेदि-
 लाम्पे मंगं कही वे वाइणां देया, पछी अ० नुदिभा
 अदिमर राइये० लामने जगो वे वाइणां देया ॥ पछी

६ उभा भइने, आपणिय उवाजाल० करेमि भंने०

ह्वाजामि शमि काउस्सगं जो मे राइओ० कही, नरस
उत्तरी० कही, तप विनयगीनो या चार लोगस अथवा
मोल नयकारनो काउस्सग करथो. ते पारीने प्रगट
लोगस कही, छद्वा आषट्यरुनी मुहपत्ति पहिलेहीने
घांदणां वे देथो ॥

११ सकल मीर्येदन कहीने यथाशक्ति पच-
क्याण करवुं ॥

॥ अथ तीर्थवंदना ॥

मकल मीर्ये पंदू करजोइ, जिनवर नामे मंगल
कोइ । पहिले स्थों लाग्य वर्रास, जिनवर पंच नमुं
निशदीस ॥ १ ॥ पीजे लाग्य अष्टाविज कथां, पीजे
पार लाग्य सहारा । सोने स्थों अष्ट लख धार, पांचमे
पंदू लाग्य ज पार ॥ २ ॥ छट्ठे स्थों सतस पचाम, मानमे
पालिश सतस प्रामाद । आठमे स्थों छ हजार, नददुहा
मे पंदू जन पार ॥ ३ ॥ अग्यार पारमे प्रगटों मार, नद
प्रियंगवे प्रणमं अदार । पांच अनुत्तर मरे मर, लाग्य
गौरांगी अभिरां घर्ला ॥ ४ ॥ सतस मरुतुं छेदी
मार, जिनवर भुवन तणो अभिकार । सोने मे छेदी
विस्तार, पचाम उपां पहिले पार ॥ ५ ॥
परिमाण, सभासतिन एक पंदू
पान कोइ मंभाइ, लाग्य

मानों उपर साठ बिगाल, सवि विष प्रणामे प्रग
काट । मान कोटने पहोलेर स्याम, भुवननिर्मि देव
भाग ॥ ७॥ एकमां एही विष प्रमाण, एक एक भोगे
मोदना जाग । मेरों कोट नेर्यार्थी कोट, साठ साठ
वेदु कर जोट ॥ ८ ॥ चर्याओं ने मांगणमाड, मारणों
मारमां नैर्यनों पाट । प्रण साण एकामुं दूजा,
प्रणों वीज ने विष मुहार ॥ ९ ॥ अनेक जोनिनिर्मि
नहीं जिन, जावना जिन वेदु मेर । विष न चन्दावन
वाणिनेण . पदेमान नामे गुणमेण ॥ १० ॥ समीप
गिणन वेदु जिन वाडा . अष्टावदु वेदु गीरीग ।
विषयावदु ने मर निरनार, वावु चर जिनपर मुहार
॥ ११ ॥ अष्टावदु कसलिया मार , मारगे भा अतिन
महार । जलविष परकाणा वाग, जिनवदा ने चेलन
वाग ॥ १२ ॥ साध नगर दूर वादना प्रग जिनपर
नैर्य नम गुणमर । विषमान वेदु जिन वाडा, मि
अनन नम निरार्थम ॥ १३ ॥ अष्टावदुमि १ अग
मर अष्टावदुमि निरवागना मार । १४ अष्टावदु
अष्टावदुमि मार वाग अष्टावदुमि वाग ॥ १५ ॥ वाग
अष्टावदुमि मर अष्टावदुमि न मुनि उर गुणमि । मार
अष्टावदुमि उष्टावदुमि मर वाग अष्टावदुमि मर
॥ १६ ॥ अष्टावदुमि मर वाग ॥

१२ " सामायिक, चतुर्विधमत्थो, वेदनक, पट्टि-
मगा, काउस्सगा, एचस्सागा कयुं हेज्जी." एम धोर्त्ता
ने छ आयदपरु संभारयां ॥ तेमां

१३ एचस्सागा कयुं होय तो' कयुं हेज्जी ' धायुं
होय तो ' धायुं हेज्जी ' कहेयुं ॥ पर्छी

१४ " इत्थामो अणुमट्ठि नमो रमाममगाणे "
कली नमोऽर्हत्त० कहेय ॥ पर्छी

१५ विज्ञाललोचन, नमोभुणं, अगिहंसनेइपाणं,
कली एक नयकारनो काउस्सगा कली, पारी नमोऽर्हत्त
कली कल्लाणकंदनी मथम थोय कहेवी ॥ पर्छी

१६ लोगम्म, पुण्यरयरदी, सिट्ठाणं पुट्ठाणं, कली
अनुक्रमे चार थोयो कलीण छीण, निहां सुणी मर्व
कहेयुं ॥ पर्छी

१७ नमोभुणो कली भगवान आदि चारने चार
नमोसमणे पांदया ॥ पर्छी

१८ जमणात्थ उपपि उपरभावा "अट्ठाइजेसु"
कहेयुं । पर्छी

॥ अथ अट्ठाइजेसु मुनिवंदन ॥

अट्ठाइजेसु दीयम्मसेसु, पत्तरम्मसुक्कम्मभर्मासु ।
जावंत वेवि माह, रणहरण शुद्ध पटिज्जात्थारा । वंश-

बह्व्ययधारा, अष्टारससहस्रसीलंगधारा । अक्खया-
पारचरित्ता, ते मन्वे मिरसा मणसा मन्धण वंदामि
॥ इति ॥

१८ ईशानमृण्मयी मन्मुख श्रीसीमंघर स्वामीनुं
चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीरराय, काउस्मग, थोप
पर्यंत कहीए तिहां सुधी सर्व कहेंवुं ॥ पछी

२० स्वमासमण दइ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन,
स्तवन, जयवीरराय, काउस्मग, थोपपर्यंत कहीए
तिहां सुधी सर्व कहेंवुं ॥ पछी

२१ मामागिक पारवानर विधिनी रीते मामागिक
पारवा सुधी सर्व विधि करवी ॥

इति राउप्रतिक्रमणविधि समाप्त ॥

१२४६०५

नपागच्छीय देवसिक प्रतिक्रमण विधि ।

इसमें स्तवन तक की विधि परापर एक ही है ।
रीते की विधि में जो फेरफार है यह नीचे मुजब—

शरकनक कही, पूर्वार्द्ध रीते चार स्वमासमण पृथक
भागदान, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, ए चार ने
पाँदा जमानों साथ उपनि ऊपर भाषा "अष्टादशमु"
मुनिवन्दन कहेंवुं

कारेण संदिसह भगवन् ! दुक्खसक्खओ कम्मवत्तओ
निमित्तं काउस्सग्ग करुं ? इच्छं दुक्खसक्खओ कम्म-
वत्तओ निमित्तं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थं । ” कही
संपूर्ण चार लोगस्स अथवा सोलह नवकारनो काउ-
स्सग्ग करवो. पछी जेने लघुशांति कहेवो होय एवो
एक घडेरो अथवा पोताने शांति कहेवानी होय तो
पोतेज काउस्सग्ग पारीने “ नमोऽर्हत् ” कही लघु-
शांति कहीने प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पछी

५ हरिपावही घने तस्स उत्तरी कही, एक लोगस्स
अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स
कहेवो ॥ पछी

६ चउक्कसाय कही, नमोत्थुणं कही, जावंति वेइ-
आइं० कही खमासमण दइ, जावंत केवि साहु० कही
उबसग्गहं कहेवुं, अने पछी हाथ जोडी, मस्तके राखी,
जयवीपराय कही खमासमण वेइ, मुहपति पडिलेहवी

७ खमासमण दइ “ इच्छाकारेण संदिसह भग-
वन् ! सामायिक पाकं ? ” एम कहेवुं. घा स्थान के
जो साक्षात् गुरु विराजमान होय तो ते कहे के “ पु-
ण्णोधि कायव्वो ” ते चारे शिष्य “ यथाशक्ति ” कही
करी खमासमण दइ “ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
सामायिक पायुं ” कहे, तेषारे गुरु कहे “ आचारो न

मोक्षार्थो” ते सांभली शिष्य “तहसि” कहे ॥ पद्दी
 ८ जमणो हाथ बरबला अथवा कटासणा उपर
 धापी, एक नवकार गणी “ सामान्यवयजुत्तो ” कही
 ने धापेली थापना होय तो तेनी सामो जमणो हाथ
 बनो राखी एक नवकार गणी उठे ॥ इति देवसी प्र-
 तियामगनो विधि सामान्यपणे कणो, बाकी अंतर्विधि
 बंदरार्थ समजथो ॥

दीपमालाकी स्तुति ।

सिद्धार्थ प्राप्ता, जगत् विख्यात, त्रिशला देवी
 माय । तिहां जगशुक जनक्या, स्वयं दुःख विरम्या,
 महावीर जिनराय ॥ प्रभु लेई दीक्षा, करहिन शिक्षा,
 देई संवत्सरी दान । पट्ट कर्म खपेवा, शिष्यसुखलेश,
 कीथो तव शुभ ध्यान ॥१॥ बरकेवळ पामी, अंतरजामी,
 यदि कानी शुभदीप्त । अमायम जाते, पीऊनी राते,
 मुगनि गया जगदीप्त ॥ बलि गौतमगणेश, मोहटा
 मुनिवर, पाव्या पंचमजान । थया तन्व प्रकाशी, शील
 विस्वाशी, पहाता मुगति निधान ॥ २ ॥ सुरपनि संव-
 रिषा, रत्न उट्टरिषा, रात थई तिहां काली । जिन
 दिवा किधा, कारज सिधा, निशा थई उजशाली ॥
 सह म्हाके हरणी, निजरे निरणी, परब कियो दीवानी ।

यस्मिन् भोजन भक्ते, निज निज मक्ते, जामे सेव सुहागः
 ॥३॥ सिद्धायिका देवा, विघन हनेवा, बांछित देतिर-
 धारिन् कर सेवने जाता, जिम जगमाता, गृह्णी प्र-
 क्ति अपारी-॥ जिन गुण-द्वय गावे, शिवमुख पावे,
 सुगुणयो भविजन प्राणी । जिणचंद्र जर्तासर, महासु-
 नीसर, जंघे पदवी घाणी ॥४॥ इति ॥

श्रीदेवचंद्रजी स्नात्रपूजा-

१. प्रथम हाथमे कुसुमाञ्जलि लेटने मेमोडन कही पड़े ।

वार्ता—'चउनीसे अनिगय जुआं, वचनानिसय जुत ।
 सार्पसमेसर देखि भवि, सिधामग संपत्त ॥१॥

२. शाल—'सिधामग बेटा जग भाण, देखि भविकजन ।
 गुणमणि भोग । जे दीटे तुझ निरमल नाग, लहिये
 परम महोदय ठाण ॥१॥ कुसुमाञ्जलि मेला आदि
 जिणंदा, नारा चरकमल (सेवे चोमट इंदा) चोवीश
 पूजामे चोवीश सोभीगी चोवीश वैरागी, चोवीश जि

गोदा ॥ कु० ॥ १॥ (एष कर्मा कुममाजनि चदवत्त नश प्रवृत्ति
 चाणे पूता करिणि, गालीकुम्भो कुमुमाजनी लेटेने नमः ॥ १ ॥
 नीचे सुतः गायः कर्मा ॥ १ ॥)

गाथा— जो निषगुण सुखवर्म्मा, तसु अनुभव
 गत । सुहृदुगल आरोपना, जो तसु गंग निरन ॥ २॥

हाल— जो निज आत्मगुण आगुदी, पुग्गल संग जे
 अफेदी । जे परमेसर, निजपद लीन, पूजा प्रणमो भ-
 द्ये अदीन ॥ कुरुमांजलि मेलो जान्निजिगुंदा तां० ॥
 कु० ॥ २ ॥ (एष कर्मा प्रणेता अनुस पूता ॥ २ ॥)

गाथा— निम्मल ज्ञान पचास कर, निम्मल गुण सं-
 पत्त । निम्मल धर्मोपपन्नकर, सो परमत्मा भक्त ॥ ३॥

हाल— मोरामोद प्रदाशक नार्गी, भविजन तार-
 ण जेहनी यार्गी, परमानंद लर्णी नामार्गी, तसु भगते
 सुभा मनि टागार्गी । कुरुमांजलि मेलो नेमिजिगुंदा
 ॥ तां० ॥ कु० ॥ (एष कर्मा अनुस पूता ॥ ३ ॥)

गाथा— जे निजज्ञा निजभानि जे, दिष्टासंगि अ-
 गित । जसु आदिपन टविपमण, सो सेवो अरिहं
 ॥ ४॥

हाल— दिव सुख कारण जे, विकल्प, मम परि-
 णामें ज्ञान निहाले । उत्तम माधन मार्ग देखाटे, इंद्रा-
 दिक जगु पण असाटे । कुरुमांजलि मेलो पांसजि-

ગંદા ॥ તો૦ ॥ કુ૦ ॥૪॥

(એમ કહી પ્રમુખા મંત્રોએ પૂજા કરિયે)

ગાથા— સમ્મદિદી દેસ જય, સાહુ સાહુળી
સાર । આચારિજ ઉચ્છ્રાયા મુણિ, જો નિમ્મજ મા-
ધાર ॥૫॥

શાલ— ચડવિહ સંયેં જે મન ધાર્યું, માંજ તણુ
કારણ નિરધાર્યું । વિવિહ કુસુમ ઘર જાનિ ગહેવી, તસુ
ચરણે પ્રણમન ઠહેવી ॥૬॥ કુસુમાંંજલિ મેળો ધીરજિ-
ગંદા ॥ તો૦ ॥ કુ૦ ॥૬॥

(એમ કહી પ્રમુખે મન્નકે પૂજા કરિયે । ॥ હનિ પાંચઠી
ગાથા ॥

॥ વસ્તુછંદ ॥ સયલ જિનવર સયલ જિનવર, ન-
મિય મનરંગ । કલ્લાળક વિહિ સંઠવિય કરિ મુધમ્મ સુ-
પયિત્ત સુંદર । સય ઇગસિત્તરિ નિસ્થેકર, ઇગસમય વિ-
વિહરંતિ મહિયલ । ચવગ સમય ઇગવીશ જિણ, જન્મ સ-
મય ઇગવીશ । ભત્તિય ભાવેં પૂજિયા, કરો મંચ સુજગીસ
॥૭॥

॥ એકદિન અચિરા હુલરાવની ॥ ૧ ॥ ચાલ

॥ ભવ નોજે સમકિન ગુણ રમ્યા , જિનભક્તિ
પ્રમુલ્લ ગુણ પરિણમ્યા । તજી ઇન્દ્રિય સુલ્લ આશંસના,
કરી ધ્યાનક વીગની સેવના ॥૮॥ અનિ રાગપ્રગાસ

प्रभावना, मनभावना एहवी भावता । सवि जीवकर्म
 शासन रसी , एसी भवदया मन उद्धसी ॥२॥ लही
 परिणाम एह्युं भलुं , निपजावी जिनपद निरमलुं ।
 आउ धुं बिन्दे एक भव करी , भट्टा संवेग ते धिर
 धरी ॥३॥ तिहां चविष लहे नरभव उदार , भरते
 तिम ऐरवसेज सार , महाविदेह विजय परधान । म-
 ध्यखंडे मवनरे जिन निधान ॥४॥

(बाल) — पुन्ये सुपनाहे देखै, मनमां हरष बिशेषै ।
 गजवर उज्जल सुन्दर , निरमल वृषभ मनोहर ॥१॥
 निरभय केजारी सिंह , लखमी अमिहि अवीह ।
 अनुपम फूलनी माला , निरमल शशी सुकुमाला
 ॥२॥ तेज तरणि अति दीवै, इन्द्रधजा जगजीवै । पूरण
 कलस पंदूर, पद्मसरोवर पूर ॥३॥ इग्यारमें रयणापर,
 देखै माताजी गुणसापर । बार में सुवन विमान, तेरमें
 रत्न निधान ॥४॥ अगनि शिला निरधुम , देखै मा-
 ताजी अनोपम । हरखी राव ने भायें , राजा अरथ
 प्रकासै ॥५॥ जगपति जिनवर सुखकर , होथे पुत्र म-
 नोहर । इन्द्रादिक जसु ममसै , सकल मनोरथ कल-
 सै ॥६॥ (बाल) पुन्य उदय ६, उपना जिन माह । माता
 तय रयणी समें , देखि सुपन हरगंत जागीय । सुपन
 करी निज बंत्तने , सुपन अरथ सांभलो सोनागीय ।

त्रिभुवन तिलक महागुणां , हंस्य पुत्र निधान । इंद्रा
दिक जसु पाय नमी , करसं सिद्धिं विधान ॥१०॥

(हाल) — चन्द्रा उद्दालान् । मोहमपनि आसन
कंपीयो, देहे अवधे मन आणंदीयो । मुज आनमनिरम
करण काज , भवजल तारण प्रगट्यो जिहोज ॥१॥ भव
अटवीपारग सन्धवाह , केवलनाणई गुण अगोह ।
शिष साधन गुणअंकुर जेह , कारण उलट्यो आसोदि
मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे, तव सुमराय, चलयदिकमा
निज तनु नमाय । सिद्धासणेथ उट्यो सुरिद , प्रण
मनो जिन आनन्द कण्ठ ॥३॥ अर्थ अहे पय सहिमा
आकि तन्ध, करी अजली प्रणमिअ अन्य मन्थ । सुख
भापे ए क्षण आज सार ; निगेलीय वेहु दांठो उदार
॥ ४ ॥ रे रे निसुगां सुगन्धोय देव, विपशन्ति तापिन
तनुं समेव । तसु शान्तिकरण जलधर समान, मिथी
विष चरण गरुडवानरा ॥ ५ ॥ तौ मेरेक जगनारण सम
त्थ, प्रगट्यो तसु प्रणमो ह्यो समन्थ । इमं जेरी णक
भव करेवि , तव देव देवहरखे मुणेवि ॥६॥ गावे
तव रभा गीतगान, सुगन्धो क ह्यो मंगल निधान । नर
खेथ आरज धमडामन जिनरोजे चधे मुर हर्ष धाम
॥७॥ पिना माना घरे उच्छेव अलेख, जिनग्रामेन मंगल
अनि विदोष । सुगपनि देवादिऊ हरसमेत , संगीत

લતા ધરે । સુભલગનેંજી જ્યોનિસચક્ર તે સંચર ॥ જિન
 જનમ્યાજી તિન અવસર માતા ધરે । નિગા અવસરજી
 ઇંદ્રાસન પળ ધરહરે ॥ (ચુટક) ધરહરે આસન ઇંદ્ર ચિત્ત
 કૌન અવસર ન થન્યો । જિન જન્મ ઉચ્છવ કાલ જાણી
 અતિહિ આણંદ જન્યો ॥ નિજ સિદ્ધ સંપતિ હેતુ જિન-
 ઘર જાણી ભગનેં ઉમઘ્યો । વિકસન વદન પ્રમોદ
 યથા દેવનાયક મહામઘ્યો ॥ ૧ ॥

(કાલ) તથા સુરપતિજી ઘંટાનાદ કરાવ ન । સુર-
 લોકે જી ઘોષણા નહ દિયરાવણ । નરક્ષેત્રેંજી જિનવર
 જનમ હુયો અછે । તસુ ભગનેં જી સુરપતિ મંદિર ગિરિ
 ગચ્છે ॥ (ચુટક) ગચ્છેતિ મંદિર શિખર ઝૂપર મુવન જીવન
 જિન તળો । જિન જન્મ ઉચ્છવ કરણ કારણ આઘજ્યાં
 સયિ સુરગણો ॥ તુમ સુદ્ધ સમક્ષિ ધાર્યે નિરમલ દેવાધિ-
 દેવ નિહાલનાં । આપણા પાનિક સર્વે જાસ્યે નાથ
 ચરણ પલાલનાં ॥ ૨ ॥

(કાલ) હમ સાંભલીજી સુરવર કોટિ વહુ મિ-
 લી, જિન ઘંટનજી મંદરગિરિ સાહમી ચલ્યા । સાંહમ-
 પતિજી જિન જનનો ધર આપિયા, જિન માતાજી ષાંદી
 શ્યામિ યધાવિયા ॥ (ચુટક) યધાવિયા જિનવર હવે
 વહુલ ધન્ય હું જૂનપુન્ય ન, ધ્રીલોકનાયક દેવ દીટો
 મુજ સમો હુણ અન્ય ન । દે જાગ્ય જનનો પુત્ર તુમણો

मेरु मज्जन पर बरी . उत्तम तुल्य धर्मि धारिष
 आत्मा पुन्ये भरी ॥ ३ ॥

(दाल) सुरनायकजी जिन निज कर कमलें ठव्या,
 पांच रूपें जी अनिसप मरिमाणें स्तव्या । नाटक वि-
 धिजी मय पर्त्ताम आगल यहै, सुर कौटिजी जिन
 हरमणें उमहैं, (चुटक) सुर कौटिकोटी नागरी धलि
 नाथें शुचि गुण गावरी , अपहरा कोटी हाथ जांटी
 हाथ भाय दित्यावरी । जयो जयो नृ जिनराज जगगुरु
 तम है आसीस्य . अहं प्राण जरण आभार जीवन
 तक मे जगदीश ॥ ४ ॥

(दाल) सुरगिरिपर जी पांडुक वनमें सिंह दि-
 न, गिरिमिल परजी सिंहासन आस्य बरी । निहां
 आर्णजी जहें जिन थोले प्रता, सीसटें जी तिहां
 सुरपति आरी रता ॥ (चुटक) आविषा सुरपति सूर्य
 भगन कलाज भेनि वणाव न, सिद्धार्थ समुहा सार्थजी-
 नधि मये वस्तु अणाय न । अरुणपति निहां हरम
 बानो देव पांडा कौटिन, जिन मज्जनारथ नीर न्यायो
 मये सुर कर जोटिनें ॥ ५ ॥

मैं स्नात्रिषा जयका कल्प हाथमें लेकर मड़ा गेह, श्री
 नाथें मुजब मुगमं परे—

(दाल) शांतिनं कारण इंद कल्पजा भरै, न

‘शाल’ ॥ आत्म साधन रसी देव कोडी हसी, उल्लसीतें
 धसी खीरसागर दिशी । पउमदह आदि दह गंग पशु-
 हानई तीर्थजल अमल लेवा भणी ते गई ॥ १ ॥ जाति
 अड कलश करि सहस्रअठोत्तरा, ह्यत्र चामर सिंहासणें
 सुभतरा । उपगरण पुष्करिणीरि पशुहासवे, आगमं
 भासिया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थ जल भरिप करी
 कलश करि देवता, गावना भावना धर्म उन्नतिरता ।
 तिरिप नर अमरने हर्ष उपजावना, धन्य अहं सगति
 सुखि भगति हम भावना ॥ ३ ॥ ममकिन धीज निज
 आत्म आरांविना, कलश पाणीमिमं भक्तिजल सी-
 यता । मेरुसिंहरो धर सर्व आठ्या बही, जक्रउच्छंग
 जिन देखी मन गह गही ॥ ४ ॥

(गाथा) हेहा देवा = अगाई कालां अदिद्विपुष्पां,
 निलांयमारणां । निलांययधु, मिच्छत्तमाह बिद्वंसणां ।
 अगाई निद्रा विनामणां, देवाहि देवां दिव्यो २
 द्विष्य कामेहि ॥ १ ॥

(हाल नेहज) एव पभगंनि यग भुवन जाइसरा,
 देव चेमागिया भनि चहमापरा । केवि कल्याटिया केवि
 मिनाणुगा, केहे यरमण यणणेण अइउच्छगा ॥ २ ॥

(यम्मु) मग्ग अरुपुण = उन्ट आदेश, कम्मांती
 मग्ग देवगण । लेह कलश आदेश पामाय, अदभुत मग्ग

मरुप जुग । कथन एह पुठंनि मारीग, ईद्र कर्ह जग-
नारणो । पारग जमणमेम । नायक आयक भम्मनिहि,
करीप मरु जमिपेम ॥ १ ॥

(हाल ६ मी) मीधे कमल पर उदक भरीने, पुप
कर मगर उरीधे. ए बाल ॥ पूर्ण कमल सुनि उदकने
भारी, जिनवर धीम नामें । आत्म निरमल भाव
करेना, धर्में द्रुम परिणामें । अच्युतादिक सुरपनि
मज्जन, लोचपाल मोकान । सामानिक ईशाना पमुहा
हम अभिप्रेक करन ॥ १ ॥ पृ० । गाना ॥ मय ईतान
मुरिदो, मय पमजेह करि ह सुपमाधो । मुन्य अंके
महनाहो, मियमिने अत्र कल्पेह ॥ १ ॥ नामधेदो
पभगाई, माहमीय वनहरेमि बहुग्राहो । आणाह धनेण
निजह होउ कयनभाओ ॥ २ ॥

इति १६१ मी । कथा । मीधे कमल पर उदक भरीने

१. मय मुरग मीधे ॥

(हाल) मोहम मुरपनि धृपन रूप करि, मह्यग
को प्रभु धर्म । करिग विलक्षण पुण्य, माल ठपि पर
आभरण जमेग ॥ मो० ॥ १ ॥ मय सुरवर बहु
जग जग रय कर, नाचे धर्म आगोद । मोक्ष मारग
माग्य पनि पाम्पो, भांजिमु हिय भयफेद ॥ मो० ॥
॥ २ ॥ कोन्निर्माण मोक्ष उर्या, पाजेम परनादे ।

सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने, जननीने सुप्रसादे ॥सो०
 ॥ ३ ॥ आणी थापे एम पयंपे अहम निसनरिया आज,
 पुत्र तुम्हारो धर्णीय हमारो, तारण तरण जहाज ।
 ॥ सो० ॥ ४ ॥ मात जन्म करि राखिउयां पढ़नें, तुम
 मृत अहम आधार । सुरपति भगति सहित नंदिसर,
 कैर जिनभगति उदार ॥ सो० ॥ ५ ॥ निय निय कल्प
 गया सुवि निर्झर, कहिसां प्रभु गुणसार । दिश्रा केवल
 ज्ञान कल्याणक इच्छा चित्त मभार ॥सो० ६ ॥ खरतर
 गच्छ जिन आणारंगी, राजमागर उबडकाय । ज्ञान
 धर्म दीपचंद सुपाठक, मुगुरु नणे सुप्रसाय ॥सो० ७॥
 देवचंद जिन भगनें गायां, जनम महोच्छय छंद । पोष
 बीज अंकुरां उद्गस्यां, मंग मकर आणंद ॥ सो० ८ ॥
 (हाल)इम पूजा भगनें करो, आनम हित काज ।
 मजिय विभाव निज भावना, रमनां शिवराज ॥सो० ९॥
 काल अनम ने जे हुआ, होय्ये जेह जिणेव । सर्व
 मोमंवर प्रभु, केवल नाग दिगंद ॥ १० ॥ १॥ जनम म-
 होच्छय इति परै, आवरु रुचियंम । विरचे जिन प्रनिमा
 मणां, अनुमोदन मंन ॥ १० ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना,
 करमा भवहार । जिन पटिमा जिन मारग्यां, कहां
 मृग मगार ॥ इम० ॥ ४ ॥

॥ इति इनामपना निधि संकल्प ॥

॥ अथ अष्टप्रकारां पुजा लिख्यते ॥

॥ श्लोक ॥

विष्णुप्रेषणभामनभास्करं, जगनि जंतुमलोदयका-
रणं । त्रिमय बहुमानजर्णोपनः, शुचिभनः मनषामि
विशुद्धये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनेनानेनज्ञान-
दापाये जन्म जगाम्भु नियाणाय, श्रीमभिनेन्द्राय
जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जलपूजा ॥

इस जल पूजा में भगवान् के कर्तृ-कार्य का उल्लेख होता है तथा
त्रिमूर्ति, अन्न, वायु, जल, भस्म, चन्द्र, सूर्य, आदि में
किसी एक का विशेष उल्लेख होता है

॥ अथ चन्दन पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलसौन्दर्यमिभ्रविनाशनं, परमशीतलभासपुनं
जिह्वं । विनयकृन्मचन्दनदर्शनं, सहजमन्यविकाशकृ-
त्सर्वये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनन्ता० ज्ञान० जन्म
जग० निषा० श्रीमज्जिने० चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥
इति चन्दन पूजा ॥ १६ प्रकार का चन्दन पड़ावे ॥

इस चन्दन पूजा में चन्दन का उल्लेख होता है, इससे ज्ञान और भक्ति का उद्भव होता
है तथा देव, गुरु और धर्म में विनय और भक्ति का विकास होता
है ।

॥ अथ पुष्पपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

विरागनिर्मलशुद्धमनोर्मै-यिंजदनेननभावममु-
द्भवैः । सुपणिणामममूनयैर्नैयैः, परमनन्यमनं द्वि यज्ञा-
म्यहं ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० पुष्पं यजामहे स्वाहा
॥ इति पुष्पपूजा ॥ एत कस्कर पर चटपे ॥

इस पुष्पपूजा में मन कण्ठमें मज्जायन सामान्य होती है, विर-
की मिश्रता होकर शुभ पणिणामा का उदय होता है तथा यथार्थ
मन्य का ध्यान होता है ।

अथ धूप पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलकर्ममहं धनदाहने, विमलसंवरभावसुधूपनं ।
अशुभपुद्गलमंगवियर्जितं, जिनपतेः पुरतोऽस्तु सुहृदिमः
॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥
॥ इति धूप पूजा ॥ एत कस्कर पूर अगारदनी खेवे ॥

इस धूप पूजा में आठ प्रकार के कर्ममय धन का दाहक नि-
ल संवर भाव उत्पन्न होता है अर्थात् कर्म पुद्गलों का अने परि-
भाटन होकर कर्मबंधन छूटना जाना है तथा अंनःकरण से रागद्वे-
षादि का विनाश होकर आनंद का संचार होता है ।

॥ अथ दीपपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

अधिकनिर्मलपौषविकाशकं जिनगृहे शुभदीप-
कदीपनं । सुगुणरागविशुद्धममन्त्रितं, दध्नु भाषवि-
काशगृहेर्जनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० दीपं यजा-
महे श्याता ॥ इति दीपपूजा ॥ अथदीपक पत्रां ॥

इस दीपपूजा में मन्दगुणों के हटाने में निम्न चीजों का बिकाश
होता है, उमर, प्रकाश में मन्दगुणों के उद्धारमें मैं सर्व उपयुक्त
होता है मन्दगुणों के उद्धारमें के द्वारा मनुष्य शान्ति-
मय वा प्राप्त करता है ।

॥अथ अक्षत पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

रुक्लमद्गलशैलिनियोजनं, गरममद्गलभावमपं
जिनं । अयमि अक्षतपूजा इति दक्षिण, दध्नु माध
पुमक्षतमन्त्रितं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० अक्षतं
यजामहे श्याता ॥ इति अक्षत पूजा ॥ अथैव यावत्
पत्रां ॥

इस अक्षत पूजा में मनुष्य भोगों में मग्न हो कर शान्त करता है,
उपयुक्त मन्त्रों मद्गलमय बन जाता है, उमर, सर्व कार्य उपयुक्त
मग्नमय होकर है तथा उमरों पवित्र कीर्तिमय विस्तृत होकर है ।

॥ अथ पुष्पपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

विरुचनिर्मलशुद्धमनोर्गम-विजदचेननभावमसु-
 द्धयैः । सुपत्रिणामपमृन्चनैर्नयैः, परमनय्यमयं हि यज्ञा-
 म्यज्ञं ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० पुष्पं यजामहे स्वाहा
 ॥ इति पुष्पपूजा ॥ एतत्कर्मका पुष्पं चतुर्थे ॥

इस पुष्पपूजा में मन का समस्त सङ्काशना जागृत होनी है, चित्त
 की स्थिरता होकर शुभ परिणामों का उत्पन्न होता है तथा पदार्थ
 तन्मय का योग होता है ।

अथ धूप पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलकर्ममहंधनदाहने, विमलसंवरभावसुधूपनं ।
 अशुभपुद्गलसंगविवर्जितं, जिनपतेः पुस्तोऽस्तु सुद्विपिनः
 ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥
 ॥ इति धूप पूजा ॥ एतत्कर्मका ३३ मंगलशक्तं चतुर्थे ॥

इस धूप पूजा में आठ प्रकार के कर्मका धूपन का दाहक नि-
 र्मल सदाभाव उत्पन्न होता है अर्थात् कर्म पुद्गलों का जने परि-
 शासन होकर कर्मबंधन छूटना जाना है तथा अंतःकरण में गगडे-
 पादि का विनाश होकर आनंद का संचार होता है ।

॥ अथ दीपपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

अविकनिर्मलपोषविक्रशकं, जिनगृहे शुभदीप-
कदीपनं । सुगुणरागविशुद्धममन्त्रिनं, दधत्तु भाववि-
काशकृतेजनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० दीपं गजा-
महे स्थाता ॥ इति दीपपूजा ॥ मन्त्रदीपक, अ३.५ ॥

इस दीपपूजा में अष्टपत्रनो के दूरय में निम्न बोधक विद्या-
रंभा है, उगरे, दायाँ में गदगुप्तो के, चपारन में रवि उपपन्न
होती है गदा गनी ५ गदगुप्तो के, उगरेन के, दायाँ रंभा-
मन्त्र का पाठ करना है ।

॥ अथ अक्षत पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

रुक्मलमद्गलकेलिनियोजनं, परममद्गलभावमयं
जिनं । अयति भगवज्जा इति दर्शयन्, दधत्तु नाथ
पुनोभक्तम्वलिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० अक्षतं
गजामहे स्थाता ॥ इति अक्षत पूजा ॥ अक्षत पूजा
प३.५ ॥

इस अक्षत पूजा में रंभा-
मन्त्र का पाठ करना है, उगरे-
मन्त्र का पाठ करना है, उगरे-
मन्त्र का पाठ करना है ।

॥ अथ पुण्यपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

विरुगनिर्मलशुद्धमनोऽर्थ-विंशतन्मनभावसमु-
द्भवः । सुवर्णिगामप्रभुनयनैर्नयः, परमवत्स्यमयं हि यज्ञा-
म्यहं ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० पुण्यं यज्ञामहे स्वाहा
॥ इति पुण्यपूजा ॥ यह कहकर पूजा करने ॥

इस पुण्यपूजा में अनेक तरहमें मङ्गलान् प्राप्त होती हैं, विम-
लका स्त्रियाना होकर शुभ परिणामों का उदय होता है और धर्म-
मार्ग का चयन होना है ।

अथ धूप पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलकर्ममहं धनदाहनं, विमलसंवरभावसुधूपनं ।
अशुभपुद्गलसंगवियर्जितं, जिनपतेः पुरतोऽस्तु सुहृदिनः
॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० धूपं यज्ञामहे स्वाहा ॥ ४ ॥
॥ इति धूप पूजा ॥ यह कहकर पूजा करने ॥

इस धूप पूजा में आठ प्रकार के कर्मों का इधन का दाहक नि-
र्मल संवर भाव उत्पन्न होता है अर्थात् कर्म पुद्गलों का जलने परि-
णाइन होकर कर्मफल छूटना जाना है तथा श्रेयःकारणों में रागद्वे-
षादि का विनाश होकर आनन्द का संचार होता है ।

॥ अथ दीपपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

अधिकनिर्मलसोपविकाशकं, जितगृहे शुभदीप-
कदीपनं । सुगुणरागविशुद्धममन्त्रिणं, दधतु भाषवि-
काशपूजेजनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० दीपं यजा-
महे स्वाहा ॥ इति दीपपूजा ॥ अष्टदीपक यज्ञः ॥

इस दीपपूजा में अष्टगुणों के द्वारा मैं निम्न सोपका विकास
करा है, उसके द्वारा ये सदगुणों के उद्धारण में मैंने उपयुक्त
होती है तथा जाने २ सदगुणों के उद्धारण के द्वारा अनुराग शान्ति-
भाव का प्राप्त करता है ।

॥ अथ अक्षत पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलमदूलकैलिनियोजनं, परममदूलभाषमयं
जित । अयति अक्षतना इति दर्शयन्, दधतु नाथ
पुण्ड्रनम्बमिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० अक्षतं
यजामहे स्वाहा ॥ इति अक्षत पूजा ॥ अनेक भावस
परा ॥

इस अक्षत पूजा में अनुराग मूर्धन्य संग्रहों का ध्यान करता है,
उसका सदाव सद्गुणसंग्रह बन जाता है, उसके सर्व कर्मों उसके सिद्ध
संग्रहकर्ता होते हैं तथा उसकी पवित्र कीर्ति सर्वत्र विस्तृत होती है ।

॥ अथ पुष्पपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

विकचनिर्मलशुद्धमनोरमैर्विजटनेननभायसमु-
द्रवैः । सुपङ्क्तिगामयमूनयनैर्वैः, परमनखमयं हि यजा-
महे ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० पुष्पं यजामहे स्वाहा
॥ इति पुष्पपूजा ॥ एह कश्चा पुष्पं यजामहे ॥

इस पुष्पपूजा में मन का धर्म सदायन कागुन होनी है, धि-
का मियाना होकर शुभ पङ्क्तिगामे का उदय होना है तथा यथा-
मय का चोन होना है ।

अथ धूप पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलकर्ममहेश्वरदाहने, विमलसंवरभायसुधूपनं ।
अशुभपुद्गलसंगवियर्जितं, जिनपतेः पुत्तोऽस्तु सुहृदिनः
॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥
॥ इति धूप पूजा ॥ एह कहिए ॐ अगस्त्यजी स्तुते ॥

इस धूप पूजा में आठ प्रकार के कर्मकर धूपन का दाहक नि-
र्मल सवर भाय उत्पन्न होना है अर्थात् कर्म पुद्गलों का जने पङ्-
क्तिगाम होकर कर्मचवन छुटता जाना है तथा अनन्तकाल में गाम-
वादि का विनाश होकर आनन्द का संचार होना है ।

॥ अथ अर्घ्यपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

इति जिनपरपूज्यं भक्तितः पूजयन्ति, सकलशुभ-
भाजनं देयचन्द्रं मनुष्यम् । प्रतिदिनसमनन्तं मन्त्रमु-
च्यते, परमसुखं सर्वं मोक्षसौख्यं भवति ॥ १ ॥

० ॥ परमात्मने० अर्घ्यं यजामहे स्वाहा । वा
॥ अथ दत्त ॥ इति अर्घ्यपूजा ॥

॥ अथ चन्द्रपूजा ॥

॥ १२० मेरुगङ्गादे, श्री चन्द्रमोक्षपद ॥

शक्तो यथा जिनपतेः सुरगणपुत्रा, मितासमोप-
सिन्धुनरनाथमानं । दत्तधर्मः कुसुमचन्दनगन्ध-
धर्मः, पूज्यार्घ्यं तु विदधानि सुचन्द्रपूजां ॥ १ ॥

इत्युपराधर्षणं एव विभिन्नालंकारयन्त्रादिकं, पूजा
पूज्यार्घ्यां कर्तव्यं समग्रे उपराधर्षणमिच्छयाहृतः । मीरा-
न्य निरञ्जनाय विजिमारायैस्त्रिलोकीयतेः, स्वर्गा-
यैव जनस्य निर्गुणितृतेः श्रेष्ठपूजाकाङ्क्षाया ॥ २ ॥ ॐ
० परमात्मने०, चन्द्राय यजामहे स्वाहा ॥ १२० पदार्थ ॥

॥ इति चाष्ट प्रकार्या पूजा ॥

॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलपुद्गलसङ्गविषज्जिह्वं, सहजनेतनभावविना-
सकं । मरमभोजननव्यनियेदनात्, परमनिर्गुणभावम-
हं शृणु ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० नैवेद्यं गतामहे
स्वाहा ॥ इति नैवेद्य पूजा ॥ नेत्र मिटाई परमात्म गतामे ॥

इस नैवेद्यपूजा में मनुज का अन्तःकरण वर्तमान है। इससे
के कारण प्रकृत हास्य दर्शक के समान बन जाता है, उसमें प्रकृत
निमित्त बनाने आता । मातापुत्र दर्शन होता है तथा उसे भोजन के
प्राप्त प्रकृत का अन्त हो जाता है ।

॥ अथ कल्पपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

कटुककर्मविपाकविनाशनं, सामान्यकल्पवृक्षी-
कनं । विहितभांश्चकल्पस्य प्रभाः पुरा, कल्पस्य मित्रिक-
लाग्य मयातनाः ॥२॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० कल्पं गता-
महे स्वाहा ॥ इति कल्पपूजा ॥ अथ सामान्य जीवकल्प
पूजा ॥

इस कल्पपूजा में कटुककर्म विनाशन, सामान्य कल्पवृक्षी-
कनं । विहितभांश्चकल्पस्य प्रभाः पुरा, कल्पस्य मित्रिक-
लाग्य मयातनाः ॥२॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० कल्पं गता-
महे स्वाहा ॥ इति कल्पपूजा ॥ अथ सामान्य जीवकल्प
पूजा ॥

पृष्ठ	पङ्क्ति	अमुद्र	मुद्र
५८	८	निग्वाणद्वान्	निग्वाणद्वान्
६०	१०	दिशमिषं	दिशमिषं
६१	१	गिरिहामि	गरिहामि
७०	१५	दिष्टि	दिष्टि
७२	१	भवस्मंति	भवस्मंति
७५	४	गिरिहामि	गरिहामि
७८	७	गरिते	गरिते
८३	११	जायणिञ्चं	जायणिञ्चं
८३	१८	गिरिहामि	गरिहामि
८४	१३	अणुजाह	अणुजाह
८४	१७	जायणिञ्चं	जायणिञ्चं
८६	१०	दिष्टि	दिष्टि
९१	६	जायणिञ्चं	जायणिञ्चं
९१	१३	गिरिहामि	गरिहामि
९७	१	ऽहं	ऽहं
९३	१३	अहं	अहं
९४	८	“वनवनक”	“वनवनक”
९५	१६	पाणिष्ठ	पाणिष्ठ
१००	१७	महत्मागारेणं	महत्मागारेणं

शुद्धाशुद्ध पत्र ॥

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६	१०	उममिणं	ऊममिणं
७	७	कृद्धिग	कृलिग
१०	६	भमलीग	भमलिग
१६	१८	देवमिग	रागं
२७	४	यदे	वेदे
३८	१७	दृपग	दृपग
४०	१४	मङ्गगा	मङ्गगा
४८	४	जम्बु	जम्बु
४८	१३	श्रीपद्	श्रीपद्
४७	१	वास	वास
४८	८१	नक्तगहिं	नक्तगहिं
४९	१७	नाहर्ग	नाहर्ग
५१	१८	भयमंमि	भयिमंमि
५१	१८	मंगरं	मंगरं
५१	१४	निमिद्योगा ग	निमिद्योगा ग
५४	१७	भयमंमि	भयिमंमि
५६	१७	मंगरं	मंगरं

पृष्ठ	पङ्क्ति	अनुद्ध	मुद्ध
१६६	८	निघातकाय	निघातकाय
१६७	११	सम्पत्तय	सम्पत्तय
१७०	८	सोक्षोपायेनि	सोक्षोपाय इति
१७१	१७	सर्पयसनि	सर्पयसनि
१७१	२०	अर्पयसनि	अर्पयसनि
१७६	३	कथिन	कथिन

८८१ स्वे चान्द्र—

अथ जगच्चिन्तामणि चैत्यवन्दन ॥

ऽष्टावक्राणि भेदिसा नमस्कृत्यैत्यवन्दन कर्तुं ॥ इच्छे ॥

जगच्चिन्तामणि जगन्नाथ, जगन्गुरु, जगत्कव्यण ।

जगत्पथ जगत्सन्ध्याह, जगन्नाथविष्णुपद्मण ।

अष्टावक्रमंडविज्जम्बू, कर्ममंडविष्णारण ।

पटुर्वांसपि जिगाथा जगन्तु ,



पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०७	८	योमरामि	योमिरामि
१०८	४	दिमामोहेणं	दिमामोहेण
१०८	८	मदत्तरामरेणं	मदत्तरामारेणं
१०९	३०	मदत्तमामरेणं	मदत्तमामारेणं
११०	८	योमरामि	योमिरामि
१११	३	योमरामि	योमिरामि
११५	१	अदगिरि	अगदिरि
११३	१७	देवामगामी	देवामगामी
११८	१३	अगमि	अगमि
११८	१५	अगमम	अगमम
११९	१	अगमम	अगमम
१२०	३	अगम	अगम
१२३	५	अगममि	अगममि
१२३	७	अगमि	अगमि
१२५	१	अगममम	अगमममम
१२५	२	अगम	अगम
१२७	३	अगमम	अगमम
१२७	७	अगममम	अगममम
१२७	१०	अगममम	अगममम

पृष्ठ	पङ्क्ति	अमृद	मृद
१६६	८	निघातस्तय	निघातस्तय
१६७	११	सम्पश्यन्व	सम्पश्यन्व
१७०	८	सोभोपायेनि	सोभोपाय इति
१७१	१७	सर्पयसमि	सर्पयसमि
१७१	२०	अपयसमि	अपयसमि
१७६	३	कथित	कथित

८५ मे पाठः—

अथ जगच्चिन्तामणि नैत्यवन्दन ॥

ऋद्धावारेण भेदिमा नगवतःसिन्धुवन्दन कृतं ॥ इच्छे ॥

जगच्चिन्तामणि अनादित्, जगन्मूर्ति, जगत्कवच ।

जगत्पथ जगत्सन्ध्यात्, जगत्नावचिह्नकवचा ।

अष्टावगमं विभक्त्य, दम्भद्विधागण ।

चतुर्धासिद्धि तिष्ठति जगत्तु ,



पङ्क्तिः	अशुद्ध	शुद्ध
७ ८	योमरामि	योमिरामि
८ ४	दिममोद्रेगं	दिमामोद्रेणं
८ ८	महत्तरागरेणं	महत्तरागारेणं
९ २०	महत्सागरेणं	सहत्सागारेणं
१० ८	योमरामि	योसिरामि
११ २	योमरामि	योसिरामि
१४ १	अहगिल	अणहिल
१६ १२	देशमगार्मा	देशायगार्मा
१८ १३	अत्यंष्टाय	अत्यंष्टिग
१८ १४	कुजररम	कुंजररम
१९ १	आपाया	अपाया
१९ ३	ऊस	ऊम
२० ४	ऊममि०	ऊममि०
२१ ५	फरि	किर
२४ ६	उवाधवाय	उवाधवायाय
२४ ७	सुय	सूय
२५ ६	अवध्य	अवन्ध्य
२६ ७	प्राणायाम	प्राणायुः
२६ १०	पञ्चविंशत्यो	पञ्चविंशत्यु

अनाचार्य श्री त्रिनर्तनगुरु विरचित—

श्री मंत्रगजगुणकल्पमहोदधि

याने

नवकारमंत्रकल्प.

यदि आपको परमात्मिक पंचपरमेश्वर नमस्कार रूप नवकार मंत्रका महत्त्व तथा इनका महान् सम्प्रकारिक प्रभाव जानना हो तो इसको रंगया कर पढ़िये ।

इसमें उपामना विधि याने उस का जप या ध्यान करने का समस्त प्रकार, आनुपूर्वी गुणने की विधि, प्रस्ताव, भगमंज्या, नष्ट, उद्दिष्ट, नवकार मंत्र के १०८ अर्थ, अष्ट सिद्धियों का वर्णन और प्राणायाम (योगमार्ग) आदि अनेक उपयोगी विषयों का वर्णन है । समस्त जन लाभ उठा सकें इसलिये हिन्दी अनुवाद भी निम्ना प्रत्येक किया गया है ।

गोपल अष्ट पंजी साठवकेलगभग ३०० पृष्ठ होने पर मूल्य रु. ३॥ गवता है । किन्तु इसका निजंण प्रचार करने के लिए दाम नमस्कार करने रु. २) कर दिया गया है ।

मिलने का ठिकाना—

पं. भगवानदास जैन

मंडिया जैन प्रिंटिंग प्रेस

पीकानेर (राजपुताना)

जैनान्तर्य श्री जिनशक्तिपुत्रि विगलित—

श्री मंत्रराजगुणकल्पमहोदधि

याने

नवकारमंत्रकल्प.

यदि आपका परमात्मिक पंचपरमेष्ठि नवकार रूप नवकार मंत्रका महत्त्व तथा इनका महान् चमत्कारिक प्रभाव जानना हो तो इनका मंगला कर पढ़िये ।

इसमें उपामना विविध याने इसका जप या ध्यान करने का समस्त प्रकार, आनुपूर्वी गुणने की विधि, प्रस्ताव, भगमंज्या, नष्ट, उद्दिष्ट, नवकार मंत्र के १०८ अर्थ, अष्ट सिद्धियों का वर्णन और प्रणायाम (योगमार्ग) आदि अनेक उपयोगी विदया का वर्णन है । समस्त जन लाभ उठा सके इसलिये हिन्दू अनुवाद भी लिखा प्रयत्न किया गया है ।

गोपल अष्ट पंजी माहृकेलगभग २०० पृष्ठ ६०० पृष्ठ पर मुख्य रूप ३॥ रखा है । किन्तु इसका विशेष प्रचार करने के लिए दाम गंगाका फल म. २) कर दिया गया है ।

मिलने का ठिकाना—

पं. भगवानदास जैन

मेष्ठिका जैन प्रिंटिंग प्रेस

बाँकनेर (मधुबनी)

सहस्र जुष । कथं गृह पुच्छंति स्वामीष, इंद्र कर्तुं जग-
तारणो । पारग अम्हपरमेस । नायक डायक धम्मनिदि,
कर्त्ताय तसु अभिपेस ॥ १ ॥

(हाल ६ भा) मोक्ष कमल पर उदक भरीने, पुष
कर सागर उरवि, ए बाल ॥ पूर्ण कलश सुनि उदकर्त्ता
धारा, जिनयर धर्म नामें । आत्म निरमल भाव
करना, यथेन शुभ परिणामें । अच्युतादिक सुरपति
मज्जन, लोकपाल लोकानें । सामानिक इंद्राणां प्रमुखा
इम अभिपेस, करन ॥ १ ॥ ५० ॥, गाथा ॥ मय ईसान
मुरिंदो, मय पभणेः करि हू सुपमायो । तुल्य अंके
महबाहो, त्रिणमिर्भ अत्य अपेह ॥ १ ॥ मासकंदो
पभणो, माहर्माय परद्वलमि बहुलाहो । आणाह धमेण
गिगत होउ कयन्नाभो ॥ २ ॥

इति भाष्ये म. स्तोत्रं ॥ ५० ॥ अथ न इति कथं न इति
भाष्ये मुनि मुनि ॥ १ ॥

(हाल) मोक्ष मुरपति वृषभ रूप करि, गह्वरा
को प्रभु अंगे । कतिप विलेखण पुष्क माला उरवि पर
आभरण अभंग ॥ मो० ॥ १ ॥ मय सुखर यह
जय जय गय वर, नाचे धर्म आगंद । मोक्ष मारग
माग्य पनि राग्यो, भांजिमु द्विष भयकंद ॥ मो० ॥
॥ २ ॥ कोन्निर्माण मोक्ष उरवि, पांजर्म परनाह ।

चाल ॥ आत्म साधन रसी देव कोटी हसी, उल्लसीने
 धसी खीरसागर दिशी । पउमदह आदि दह गंग पमु-
 हानई तीर्थजल अमल लेवा भणी ते गई ॥ १ ॥ जाति
 अड कलश करि सहस्रजठोत्तरा, छत्र चामर सिंहासणें
 सुभतरा । उपगरण पुष्कळंगेरि पमुहासत्रे, आगमं
 भासिया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थ जल भरिप करी
 कलश करि देवता, गावना भावता धर्म उन्नतिरता ।
 निरिप नर अमरने हर्ष उपजावना, धन्य अहं सगमि
 सुचि भगति इम भावना ॥ ३ ॥ समकित घोज निज
 आत्म आरोपिता, कलश पाणीमिमं भक्तिजल सं-
 चता । मेरुसिद्धरो धर सूर्य आदया यही, जक्रवल्ग
 जिन देवी मन गह गई ॥ ४ ॥

(गाथा) हेतो देवा २ अगाई काला अदिद्विपुष्यां,
 निलांयमारगो । निलांयषंधु, मिच्छत्तमोह विद्वमगो ।
 अगाई निशा विणामगो, देवादि देवो दिदृष्यो २
 दिध्यय कामेहि ॥ १ ॥

(शाल नेहज) एम पभगंनि यग भुवन गोटमरा,
 देव येमागिया भलि भट्मायरा । केवि कल्पटिया केवि
 मिनायुगा, केई थरमगा थरणेण अहवल्गगा ॥ २ ॥

(यानु) गम्य अच्युत २ इन्द्र आदेश, कर्जोटी
 नय देवगा । मेह कलश आदेश पामोय, अदभुत रूप

॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा लिख्यते ॥

॥ श्लोक ॥

विमलप्रेयसभाभ्यन्तरे, जगति अनुमतेऽद्यक-
ले । तिनयरे बहुमानजर्मीयगः, क्षुचिभनः स्मरयामि
शेजुद्वये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमान्मने अनभाननज्ञान-
राग्ये जन्म जगत्सु निवारणाय, श्रीमद्भितेऽष्टा-
ले यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जलपूजा ॥

इस जल पूजा में मन्त्र में जल में ॐ पुनः ॐ स्वाहा हे महा-
मने, अनभानन जन्म जगत्सु निवारणाय, श्रीमद्भितेऽष्टा-
ले यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जलपूजा ॥

॥ अथ चन्दन पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलमोक्षनिमित्तविनाशने, परमार्थानन्दभावन-
ने । विनयर्षुभुक्तमन्दनदर्शनः, सज्जनश्च विद्वच्छात्र-
मिमे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनन्ता० ज्ञान० जन्म-
रा० निवा० श्रीमद्भिते० चन्दने यजामहे स्वाहा ॥

नि चन्दन पूजा ॥ १६ अथवा १६, १७, १८ ॥

इस चन्दन पूजा में चन्दन का दण्ड दे दे । सकल मोक्ष विनाश-
ने । विनयर्षुभुक्तमन्दनदर्शनः, सज्जनश्च विद्वच्छात्र-
मिमे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनन्ता० ज्ञान० जन्म-
रा० निवा० श्रीमद्भिते० चन्दने यजामहे स्वाहा ॥

सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने, जनननिं मुपसादे ॥सो०
 ॥ ३ ॥ आणी थापे एम परंपे अत्त निमनरिणा आज.
 पुत्र तुम्मारो धर्माय हमारो, तारण तरण जहाज ।
 ॥ सो० ॥ ४ ॥ मान जनन करि गलिज्या पट्टे, तुम्ह
 मृत अत्त आधार । मूरपनि भगनि महित नंदिमर,
 कैर जिनभगति उदार ॥ सो० ॥ ५ ॥ निय निय कण
 गया सवि निर्जर, कलिनां प्रभु गुणसार । दिश्रा केवल
 ज्ञान कल्याणक इच्छा चित्त मभार ॥सो० ६ ॥ खरनर
 गच्छ जिन आणारंगी, राजमागर उवडकाय । ज्ञान
 धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरु नयो मुपसाय ॥सो० ७॥
 देवचंद जिन भगनें गाथां. जनम महोच्छय छद् । पोथ
 पीज अंकुरो उल्लस्यो, मंघ मरुत आणंद ॥ सो० ८ ॥

(हाल) हम पूजा भगनें करो, आनम हित काज ।
 नजिय पिभाव निज भावना, रमनां शिवराजा ॥ १ ॥
 काल अमन ते जे हुआ, होम्ये जेह जिणद । मंघई
 सीमंवर प्रभु, केवल नाम दिशेद ॥ २ ॥ ॥ जनम म-
 होच्छय इणि परै, श्रावक रुनिवेन । चिरचै जिन प्रनिमा
 नणो, अनुमोदन खंन ॥ ३ ॥ ॥ देवचंद जिन पूजना,
 करता भवपार । जिन पडिमा जिन मारग्या, कही
 मृत्र मजार ॥ ४ ॥ ॥

॥ इति स्वाध्यायः ॥

॥ अथ नैवेद्य पुजा ॥

|| श्रीकृष्ण ||

मकलपुद्गलमङ्गलविवर्धनं, मङ्गलजनेतनभावविला-
सकं । मङ्गलभाजननट्यनियेदनात्, परमनिष्ठनिभावम-
हं स्पृष्टे ॥ १ ॥ ॐ हां परमात्मने० नैवेद्यं यजामहे
स्वाहा ॥ इति नैवेद्यं पूजा ॥ नैवेद्यं मिष्टानं पर्याप्तं चत्वारो ॥

[illegible]

॥ अथ कल्पपूजा ॥

॥ श्रीग ॥

कटुव.क.मात्रिपाकविनाशनं. गरमपक्कलवजरी-
कन । विस्त्रिभोऽरुह्य प्रभोः पुनः, कुल्ल सिद्धि-
लाप मन्त्रजना ॥२॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० कलं यज्ञा-
महे भवान् ॥ इति कलपुष्पा ॥ ३५० मयामे नीयकल

इस प्रकार, हमें यह समझना चाहिए कि जीवन में सफलता के लिए हमें अपने अंदर की शक्ति को पहचानना और उसे प्रयोग में लाना चाहिए। यह शक्ति हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करेगी।

श्रुत	पङ्क्ति	अमृद	मृद
५६	८	निग्याग्याद्वाण	निग्याग्याद्वाण
६०	१०	दिशमिपं	दिशमिपं
६१	४	गिरिहामि	गिरिहामि
७०	१७	दिट्ठि	दिट्ठि
७८	१	भविमंनि	भविमंनि
७९	४	गिरिहामि	गिरिहामि
७८	७	गरिमे	गरिमे
८१	११	जावणिअं	जावणिअं
८३	१८	गिरिहामि	गिरिहामि
८४	१३	अणुजाह	अणुजाणह
८४	१७	जावणिअं	जावणिअं
८६	१८	दिट्ठि	दिट्ठि
९१	६	जावणिअं	जावणिअं
९१	१३	गिरिहामि	गिरिहामि
९२	१	अहं	अहं
९३	१३	अहं	अहं
९४	८	“अनजनकः”	“अनजनकः”
९४	१६	पापविण्ण	पापविण्ण
१००	१७	अहं	अहं

शुद्धाशुद्ध पत्र ॥

— १ —

अक्षर	वर्ण	अक्षर	वर्ण
१	२५	अक्षर	१५
२	२५	अक्षर	१५
३	२५	अक्षर	१५
४	२५	अक्षर	१५
५	२५	अक्षर	१५
६	२५	अक्षर	१५
७	२५	अक्षर	१५
८	२५	अक्षर	१५
९	२५	अक्षर	१५
१०	२५	अक्षर	१५
११	२५	अक्षर	१५
१२	२५	अक्षर	१५
१३	२५	अक्षर	१५
१४	२५	अक्षर	१५
१५	२५	अक्षर	१५
१६	२५	अक्षर	१५
१७	२५	अक्षर	१५
१८	२५	अक्षर	१५
१९	२५	अक्षर	१५
२०	२५	अक्षर	१५
२१	२५	अक्षर	१५
२२	२५	अक्षर	१५
२३	२५	अक्षर	१५
२४	२५	अक्षर	१५
२५	२५	अक्षर	१५

पृष्ठ	पङ्क्ति	अनुद	निर्माणद्राण	निर्माणद्राण
७६	८	दिवसिपं	दिवसिपं	दिवसिपं
६७	१०	गिरिहामि	गिरिहामि	गिरिहामि
६१	१	दिदि	दिदि	दिदि
७०	१२	अवसंनि	अवसंनि	अवसंनि
७२	१	गिरिहामि	गिरिहामि	गिरिहामि
७६	४	परिते	परिते	परिते
७८	७	जवणिमं	जवणिमं	जवणिमं
८३	११	गिरिहामि	गिरिहामि	गिरिहामि
८३	१६	अणुजाह	अणुजाह	अणुजाह
८४	१३	जवणिमं	जवणिमं	जवणिमं
८४	१७	दिदि	दिदि	दिदि
८६	१८	जवणिमं	जवणिमं	जवणिमं
८१	६	गिरिहामि	गिरिहामि	गिरिहामि
६१	१६	जं	जं	जं
६२	१	अहया	अहया	अहया
६३	१३	“वनवनर”	“वनवनर”	“वनवनर”
७४	२	पाच्छिप्त	पाच्छिप्त	पाच्छिप्त
६४	१६	महामागारेणं	महामागारेणं	महामागारेणं
१०७	१७			

वेलाच्याने धां जिजवडीतिल्लुति दिशमिल -

श्री मंत्रगजद्वयकल्पमहोदधि

नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

इसमें आत्मना निर्मिता जन जन का भाग्य जन
मानस प्रकाश, आनुपात गुणने को निर्मिता, प्रकाश, नमो
उदित, नमोका मत के २ ॥ २ ॥ अथ, मन्त्र निर्मिता भाग्य
प्रकाशानुपात आदि अनेक आत्मना निर्मिता का भाग्य
मानस जन भाग्य उदा मन्त्र आत्मना निर्मिता अनेक भाग्य
अनेक निर्मिता भाग्य है ।

गोपल अथ वरा नाट्यकालसंग्रह ३०० पृष्ठ होने
का उल्लेख किया है। किन्तु इसका विशेष प्रचार करने के
बजाय केवल म. ३) का दिया गया है।

मिलने का दिक्कत—

पं. भगवान्दास जैन

मेडिया जैन प्रिंटिंग प्रेस

पीकानेर (गजदुः)

